Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान

(१६ मार्च १९८७ से)
(१५ अप्रैल १९८७ तक)

हिन्दी मासिक

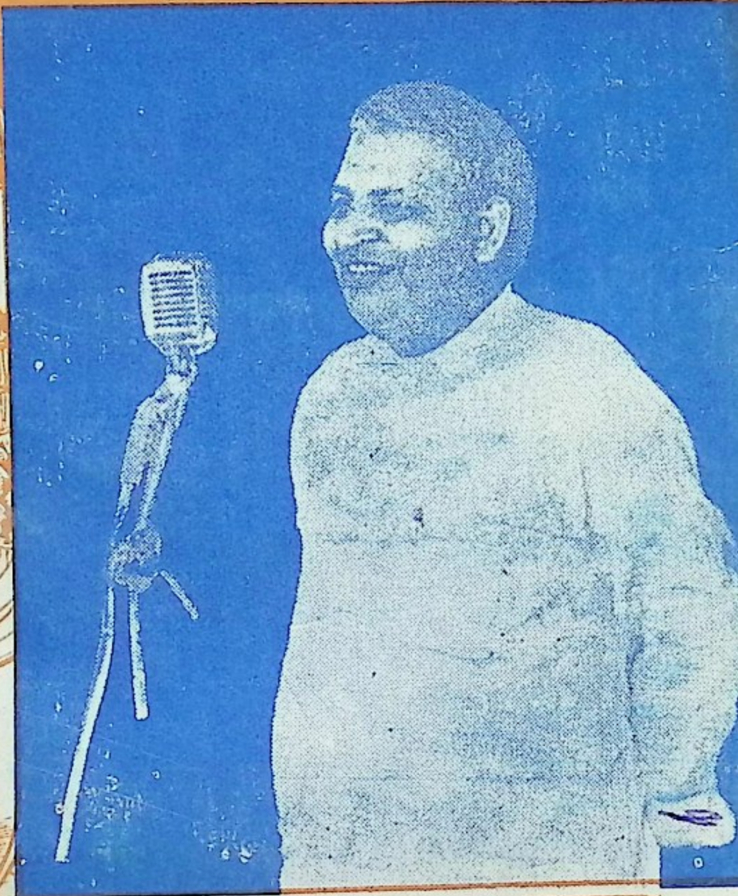

हिन्दू जागृति विशेषांक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु: जी की ५६वीं जयन्ती

दयानन्द संस्थान, हिन्दू रक्षा समिति, जनज्ञान मासिक आदि अनेक उपक्रमों के माध्यम से देश और धर्म की सेवा के लिए जीवन-दान करने वाले महात्मा वेदभिक्षु:जी की ५६वीं जयन्ती १४ और १५ मार्च १९८७ को वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम (इब्राहीमपुर) में उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाई जायेगी। इस अवसर पर यज्ञ, वेदोपदेश और श्रद्धांजलि सभा के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अनेक विद्वान्, मनीषी, विचारक और संन्यासी जनता को दिशा-निर्देश देंगे और स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी की पुण्य स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि भेंट करेंगे। वेद प्रचार और हिन्दुओं के जागरण के कार्य को आगे बढ़ाने पर विचार-विमर्श होगा। कार्यक्रमों का समापन प्रीतिभोज के साथ होगा।

कार्यक्रम दोनों दिन प्रातःकाल ९ बजे प्रारम्भ होगा। पूर्णाहुति १५ मार्च को प्रातःकाल १० बजे होगी।

सभी भाई-बहनों से अनुरोध है कि वे दोनों दिन अवश्य ही दर्शन दें।

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय से मुद्रित एवं प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ट्र-एकता के लिए आवश्यक—

एक भाषा, एक नियम, एक धर्म ।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:
म्पादक—राकेशरानी
द मंदिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-110036
फोन नं. 745325
कार्यालय—2286, आर्यसमाज रोड,
नई दिल्ली-110005
फोन–5724741
वार्षिक मूल्य : 35 रुपये
विदेश में : विमान से 48 पौंड,
60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
आजीवन 501 रुपये
विदेश में : 1501 रुपये
यह अंक : 3.50 रुपये
चैत्र, संवत् 2044
मार्च, 1987 : वर्ष 19, अंक 11

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि ।
स इद्देवेषु गच्छति ।।

ऋग्० १।१।४।।

हे (अग्ने) परमेश्वर ! आप (यम्) जिस (अध्वरम्) हिंसा आदि दोषरहित (यज्ञम्) विद्या आदि पदार्थों के दान रूप यज्ञ को (विश्वतः) सर्वत्र व्याप्त होकर (परिभूः) सब प्रकार से पालन करने वाले (असि) हैं, (स इत्) वही यज्ञ (देवेषु) विद्वानों के बीच में (गच्छति) फैल कर जगत् को सुख प्राप्त कराता है तथा जो यह (अग्ने) भौतिक अग्नि (यम्) जिस (अध्वरम्) विनाश आदि से रहित (यज्ञम्) शिल्प विद्यामय यज्ञ को (विश्वतः) जल पृथिव्यादि पदार्थों के आश्रय से (परिभूः) सब प्रकार के पदार्थों में व्याप्त होकर सिद्ध करने वाली है, (स इत्) वही यज्ञ (देवेषु) अच्छे-अच्छे पदार्थों में (गच्छति) प्राप्त होकर सबको लाभकारी होता है ।

भावार्थ—जिस कारण व्यापक परमेश्वर अपनी सत्ता से पूर्वोक्त यज्ञ की निरन्तर रक्षा करता है इसी से वह अच्छे-अच्छे गुणों के देने का हेतु होता है। इसी प्रकार (जिस कारण) ईश्वर ने दिव्य गुणयुक्त अग्नि रची है, इसी कारण वह उत्तम शिल्पविद्या को उत्पन्न करने वाला है । उन गुणों को केवल धार्मिक, उद्योगी और विद्वान् मनुष्य प्राप्त होने योग्य होता है । ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

इस अंक में

सम्पादकीय 4
महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी 10
महात्मा आनन्दस्वामी जी का शुभाशीर्वाद—सत्यपाल शास्त्री 13
पंजाब की समस्या (सामयिक विचार) 15
अपमान कब तक सहन किया जायेगा ?—शिवकुमार गोयल 17
हिन्दू संगठन जरूरी है—पं. मदनमोहन मालवीय 21
'हिन्दू' शब्द का पुनर्जन्म हो रहा है —चन्द्रकांत बक्षी 26
असरदार सरदारों से (कविता)—निर्भय हाथरसी 31
क्या ये सभी गप्पें हैं ?—आदित्यपाल सिंह आर्य 33
हिन्दू राष्ट्र के सजग प्रहरी महन्त दिग्विजयनाथ
—महन्त अवेद्यनाथ 38
यहां दो सौ प्रतिशत स्वराज्य है ! (व्यंग्य-विनोद) 56
—डॉ. रतनलाल 'रतनेश'
स्वाभिमान—श्री नारायणदेव खिलवार 55
हिन्दुत्व, शासन और दायित्वबोध—आचार्य चन्द्रभूषण तिवारी 59
भारतीय संस्कृति के मूलाधार—बलदेव उपाध्याय 69
कुतुब मीनार से निकली हिन्दू मूर्तियां—अनिल चोपड़ा 72
राष्ट्रीय एकता और अखंडता की रक्षा कैसे हो ? 81
—रघुबीरशरण आर्य
हिन्दू मतान्धता को धर्म नहीं मानता—डा सर्वेपल्ली राधाकृष्णन् 86
वह भव्य भारतवर्ष है 92
—नरसिंह नारायण पांडे (चंचल बलरामपुरी)
हिन्दुस्तानी के बोले में हिन्दुस्तान नहीं बंट जाए 94
—डॉ रतनलाल 'रतनेश'
मिटा सकते हो क्या ? (कविता) 96
हिन्दुत्व के लिए आरे से सिर चिरवाने वाले शहीद भाई मतिराम 97

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुत्व के लिए सिर कटाने वाले गुरु तेगबहादुर 100
धर्म की आन पर दीवारों में चुने जाने वाले
सिंह बच्चे जोरावर सिंह-फतह सिंह 104
हिन्दुत्व के लिए शरीर के टुकड़े-टुकड़े कटवाने वाला
वीर छत्रपति शम्भाजी 107
हिन्दुत्व की रक्षा के लिए देह का मांस नुचवाने वाले
वीर वंदा बैरागी 111
धर्म की बलिवेदी पर शीश कटाने वाले
बालवीर हकीकतराय 115
हिन्दू धर्म की वेदी पर प्राण न्योछावर करने वाले
पिता-पुत्र शाहबेग सिंह और शाहबाज सिंह 118
आर्यों को बहिरागत बताने के पीछे एक षड्यन्त्र 122
—डा. ठाकुरप्रसाद वर्मा
क्या लक्ष्यहीन है आज का हिन्दू समाज ?—विशनस्वरूप गोयल 148
आयुर्वेद की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक देन 153
—पं. विश्वनाथ द्विवेदी—श्री गणनाथ द्विवेदी
मेरुस्तम्भ या कुतुब मीनार ?—श्री केदारनाथ प्रभाकर 158
नई शिक्षा ले डूबेगी इस देश को—डा. गौरीनाथ रस्तोगी 164
सिख कोई अलग धर्म नहीं :
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती से भेंटवार्त्ता 169
बपौती (कविता) डा. रतन लाल 'रतनेश' 174
मैं कल का हिन्दुस्तान हूं (कविता) —जगदीश श्रीवास्तव 175
कविहृदय महात्मा वेदभिक्षुः जी (पं. भारतेन्द्रनाथ जी)
और उनकी कविता 177
कवितायें 184
भारत के अमर शहीद 188
वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां 190

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

महात्मा वेदभिक्षुः और हिन्दू जागृति अभियान

चौदह मार्च हमारे उस प्रेरणा पुरुष का पावन जन्मदिवस है, जिसने अपने जीवन में धार्मिक क्रांति के जनक महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्य सिद्धांतों को स्वीकार किया था—जिसने मातृभूमि की बन्धन मुक्ति के लिए अपने पूज्य पिता पं. गयाप्रसाद शुक्ल के क्रांतिधर्मी पथ को स्वीकार किया था। वे दिव्यात्मा महात्मा वेदभिक्षु: सशरीर तो हमारे मध्य नहीं हैं, किन्तु उनके त्याग की अनूठी गाथा हमें कर्तव्यपथ पर अडिग रह अभावों—अभियोगों के प्रबल झंझावातों को झेलने की सतत प्रेरणा प्रदान कर रही है। उस आग्नेय जीवनव्रती को माता विद्यावती शारदा ने अपने लिए नहीं अपितु देश और समाज के लिए जीने का मन्त्र प्रदान किया था। विदेशी अंग्रेज प्रभुसत्ता की नौकरी के लिए नहीं बल्कि स्वदेश की मुक्ति के लिए ही आग्नेय जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए बालक भारतेन्द्रनाथ को बचपन से ही प्रेरणा दी थी। उन्होंने बाल्यकाल में ही अपने सहपाठियों को साथ लेकर ब्रिटिश सत्ता के प्रतीक स्थलों पर राष्ट्रपताका फहराने जैसे साहसिक कृत्य किये थे और यातनायें भी झेली थीं।

भारतीय स्वतन्त्रता के सूर्योदय में जहां उन्होंने अपने जीवन की एक साध को साकार होते हुए पाया था, वहीं परम पावन आर्यावर्त्त के विभाजन शूल ने भी उनके क्रांतिधर्मी हृदय को कसमसाया था। उन्होंने अपनी चिन्तनशील प्रवृत्ति के कारण इसके मूल में हुई भूल की गहन समीक्षा की थी। वे विभाजन को अंग्रेजों की "विभाजन करो और शासन करो" की नीति की फलश्रुति कहते थे।

वास्तव में देश की संस्कृति से ही स्वतन्त्रता स्थापित रह सकती है। इसी सिद्धांत पर वे आजीवन शार्दूल के तुल्य निर्भीकता से डटे रहे। उनके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन को अत्यन्त निकटता से देखने के कारण हम विश्वास के साथ निः-संकोच कह सकते हैं कि आज भी उनके स्मरण के साथ ही आर्यावर्त के उन ऋषि-मनीषियों के तपःपूत एवं तेजस्वी व्यक्तित्व सहसा मानस पटल पर चित्रित हो उठते हैं, जिन्होंने इस राष्ट्र के शरीर और प्राणात्मा को अपने मानस मन्दिर में भक्तिपूर्वक पूजा था।

महात्मा वेदभिक्षुः हुतात्मा संकल्प में ढले योद्धा और कर्मशूर ही नहीं, एक चिन्तक, लेखक, कवि और ओजस्वी वक्ता भी थे। उनकी यह महान् चारित्रिक विशेषता थी कि घोर अभावों, विपरीत परिस्थितियों और विरोधियों के सतत प्रहारों में भी उनकी मनस्विता कभी विचलित नहीं हुई। उनके मन का महासागर कभी अपनी मर्यादा से च्युत नहीं हुआ। उन्होंने देश और राष्ट्र के हित को ध्यान में रखकर बड़े से बड़े व्यक्तियों की उन नीतियों की कठोरतम आलोचना तो की, जिनके विरुद्ध एक शब्द कहने में भी अनेक धुरन्धर सकुचाते थे, किन्तु उन्हीं के उचित निर्णयों और नीतियों की सराहना करने में भी उन्होंने कभी संकोच नहीं बरता। जीवन की अन्तिम घड़ी तक वे द्वेष-भावना से सर्वथा मुक्त रहे। उन्होंने देव दयानन्द द्वारा पुनः उच्चारित "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" और वेदों की ओर लौट चलो के आह्वान का उच्चार मात्र नहीं किया था, अपितु अपनी लेखनी, वाणी और कृति से इस आह्वान को साकार करने के लिए वे आजीवन पूर्ण मनोयोग से जुटे रहे। दयानन्द संस्थान की स्थापना कर उन्होंने परम पिता परमात्मा की अमरवाणी वेद को जन-साधारण तक पहुंचाने का जो कार्य किया, वह उनके अनेक आलोचकों की दृष्टि में भी अभूतपूर्व है। वे विदेशी मिशनरियों के विरुद्ध आन्दोलन के वे अग्रगण्य सेनानी थे तो विदेशों से प्राप्त धन के बल पर भारत को इस्लामिस्तान बनाने की दुरभिसन्धि संजोने वालों से भी उन्होंने देश को सजग और सतर्क किया था। किसी मजहब का विरोध उनकी नीति नहीं थी, किन्तु धर्मान्तरण के माध्यम से राष्ट्रान्तरण के कलुषित इरादे पूरे करने वालों के वे प्रखर विरोधी थे। महात्मा ईसा के शांति संदेश अथवा हजरत मुहम्मद के बंधुत्व भाव संबंधी विचारों का वे पूर्ण आदर करते थे। किन्तु विदेशों से मिले धन-बल पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोगों का ईमान खरीदने और भारत को इस्लामिस्तान अथवा ईसाईस्थान बनाने या हिंदुत्व के लिए सर्वस्व बलिदान करने वाले दशमेश गुरु गोविन्द सिंह के सिंह सपूतों में 'खालिस्तान' के कलुषित विचार को प्रतिष्ठित करने के लिए सक्रिय विदेशों के क्रीत दासों की कलई खोलना वे अपना पावन कर्तव्य मानते थे।

हिंदुत्व को वे कोई संकीर्ण विचार नहीं, अपितु "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" की पवित्र भावना को साकार करने वाली एक जीवन-पद्धति मानते थे। सर्वपन्थ सद्भाव का महान् सिद्धांत उनकी आस्था था। किंतु मजहब के आधार पर किसी पंथ के तुष्टीकरण को वे एक विघातक पथ मानते थे। उनका स्पष्ट मत था कि तुष्टीकरण की नीति ही भारत विभाजन का कारण बनी। उनकी दृष्टि में हिंदू कोई मजहब या सम्प्रदाय नहीं, अपितु हिंदुस्तान में निवास करने वाले और इसे अपनी मातृभूमि, पितृभूमि तथा पुण्य भूमि मानने वालों की राष्ट्रीयतावाचक संज्ञा है। इसीलिए उन्होंने "हिंदू रक्षा समिति" के संस्थापक के रूप में देश को हिंदू राष्ट्र घोषित कराने के अभियान को गतिमान् किया था और "जनज्ञान" मासिक के माध्यम से भी इसे जन आंदोलन का रूप प्रदान करने के लिए अपनी लेखनी का उपयोग किया था। उनके अभियान में संकीर्णता अथवा साम्प्रदायिकता के लिए कोई स्थान न था। वे भारत में एक ऐसे लोकतांत्रिक राज्य के हृदय से समर्थक थे, जिसमें सभी मजहबों और मत-मतांतरों के अनुगामियों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार हो और किसी को भी केवल किसी विशेष मजहब का अनुगामी होने के कारण अधिमान न प्रदान किया जाये। भारत के प्रति अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक पालन ही वे राष्ट्रीयता की सच्ची कसौटी मानते थे।

महात्मा वेदभिक्षुः का स्पष्ट मत था कि हमारा दैनिक व्यवहार जो इतिहास, समाज और राष्ट्र को पुष्ट करता है, हमारा वास्तविक धर्म है। सम्प्रदायनिरपेक्ष हिंदू राष्ट्र के जिस समृद्ध और सुसंगठित स्वरूप की उन्होंने कल्पना की थी, उसके लिए हिंदू जागृति को वे एकमात्र पथ मानते थे। उनकी इस कल्पना को ही "जनज्ञान" का यह अंक समर्पित है। उनका यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अडिग विश्वास था कि जिस धर्मनिरपेक्षता को (जिसे वे सम्प्रदाय-निरपेक्षता कहना अधिक सटीक मानते थे) इस राष्ट्र ने स्वीकारा है वह तभी तक सुरक्षित रह सकती है, जब तक इस देश में हिंदू बहुमत है, क्योंकि हिंदुत्व ने ही अपने चिंतन में "वसुधैव कुटुम्बकम्" के महान् आदर्श को उतारा है। यही भावना मानवमात्र के प्रति सहज स्नेह की प्रेरक है। महात्मा वेदभिक्षुः के हिंदू जागृति अभियान का एक प्रमुख आधार यह था कि सहिष्णुता जहां हिंदू का सहज धर्म है, वहीं इस सद्गुण को विकृति में नहीं बदला जाना चाहिए। वे संगठित और बलशाली हिंदू राष्ट्र के गठन को विश्व शांति की प्रतिभूति मानते थे। उनका यह स्पष्ट आह्वान था कि हिंदू समाज कर्मयोग के प्रेरक भगवान् श्री कृष्ण के इस आह्वान को कदापि विस्मृत न करे कि "अत्याचार करना पाप है तो अत्याचार सहना महा-पाप है।"

अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में पंजाब की पीड़ा से उनके मन में जो कसमसाहट थी, उसे उन्होंने अस्पताल में अपने से भेंट करने आये बाबू जगजीवनराम जैसे राष्ट्रीय नेता के समक्ष भी व्यक्त किया था और हिन्दुत्व-निष्ठ कार्यकर्त्ताओं से भी। भारत के समुज्ज्वल भविष्य में भी उनकी आस्था अडिग थी। जब भी कोई इस विषय में उनके सम्मुख आशंका व्यक्त करता था तो उत्तर होता था कि 'यह सत्य है कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हम लोगों को निराश, हताश, विक्षुब्ध और नैतिकता से गिरता हुआ देख रहे हैं। आज भी जनसाधारण को दो वक्त की रोटी और अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। किन्तु इतने पर भी एक क्षण के लिए भी यह सोचना कि यह देश खंड-खंड हो जाएगा, पागलपन ही होगा। एक ऐसा देश, जिसने मर्यादापुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, चाणक्य, शिवाजी, प्रताप और गुरु गोविन्दसिंह जैसे राष्ट्र-योद्धाओं को गोदी में खिलाया है, जिस महिमामयी पुण्य भूमि की गोद में गौतम बुद्ध, महावीर, नानक और कबीर का पालना बना है, महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द जैसे धार्मिक क्रांति के पुरोधा जिसके आंगन में खेले हैं और स्वातन्त्र्यवीर सावरकर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, भाई परमानन्द, सरदार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भगत सिंह और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों ने जिसकी पावन रजकण को मस्तक से लगाया है, महात्मा गांधी एवं महात्मा फुले जैसों ने जहां सामाजिक समता का मंत्र गुंजाया है, वह राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से कदापि दिवालिया नहीं हो सकता। वे कहा करते थे कि सहस्रों वर्षों का इतिहास इस सत्य की साक्षी देता है कि भारत भूमि पर जब-जब संकट के बादल छाये हैं, तब-तब ही किसी-न-किसी महापुरुष ने इसका नेतृत्व कर राष्ट्र को सम्बल दिया है। जैसा अतीत में हुआ है; भविष्य में भी ऐसा ही होगा और ऐसे राष्ट्रभक्तों से यह देश कदापि शून्य नहीं होगा, जो देश का दिशानिर्देशन करेंगे, इसकी सेवा के लिए ही वे आजीवन कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ रहना अपना पावन कर्त्तव्य मानेंगे।

जनज्ञान का यह "हिन्दू जागृति विशेषांक" हमारी कल्पना के अनुरूप पूरी तरह सुसज्जित तो नहीं हो पाया, क्योंकि शारीरिक अस्वस्थता और चालीस से भी अधिक मुकद्दमों के कारण विद्यमान संकटजनित व्यस्तता हमारे आड़े आई है। फिर भी हमें यह संतोष अवश्य है कि आज हिन्दू राष्ट्र करवट ले रहा है। श्री रामजन्म भूमि प्रकरण पर हिन्दू समाज में एकता का संचार हो रहा है तो पंजाब के हिन्दू की पीड़ा को भी आज सारा राष्ट्र एकताबद्ध होकर अनुभव करने लगा है। विदेशी धन और थैलियों के बल पर भोले-भाले वनवासियों को धर्मान्तरित करने वाले तत्वों के विरुद्ध विभिन्न पीठों के जगद्गुरु शंकराचार्य भी अब कर्मक्षेत्र में उतरे हैं तो "जगे धर्म हिन्दू सकल धुन्ध भागे" के उद्गाता गुरु गोविन्दसिंह के वास्तविक संदेश को सत्य संदर्भों में समझकर आज पंजाब में केशधारी (सिख) बन्धु भी अकाल तख्त की गरिमा को धूलि-धूसरित करने के षडयन्त्र में लगे तत्वों के विरुद्ध डटकर खड़े होने लगे हैं। हमारा विश्वास है कि हिन्दू जागृति की यह लहर दिन-प्रतिदिन प्रबल होगी और देश के युवा प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को भी विभाजक तत्वों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए समुचित बल देगी। वे भारत की जिस प्राचीन संस्कृति, मर्यादा एवं मान्यता का यशोगान कर रहे हैं, वह अक्षुण्ण रहेगी। हमारी कामना है कि युवा जननायक श्री राजीव गांधी ऐसे बलिष्ठ और समृद्ध भारत की रचना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में अपनी विशिष्ट भूमिका निभायें, जिसमे अलगाववाद के विषधर मज़हबी केंचुलियां ओढ़कर इस राष्ट्र को अपनी विषभरी फुंकारों से दग्ध न कर पायें। उनके विषैले दंत सदा के लिए तोड़ दिये जायें, जो इस मातृभूमि के स्तनों से दुग्धपान करते हैं और बदले में विष उगलते हैं। उस स्थिति में ही राष्ट्रीयता की पावन गंगा वास्तविक अर्थों में प्रदूषण मुक्त हो सकेगी और फिर उसमें स्नान करने वाले रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला खां एवं सरदार भगतसिंह जैसे युवक राष्ट्र हेतु सर्वस्व समर्पण की भावना से सराबोर होकर समवेत स्वर में यह पावन उद्घोष कर सकेंगे—

"तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें न रहें।"

जनज्ञान के नियम

1. 'जन-ज्ञान' के पाठक पत्रव्यवहार करते समय अपनी **सदस्य संख्या** अवश्य लिखें। (सदस्य संख्या 'जन-ज्ञान' के रैपर पर लिखे पते में अंकित रहती है।)
2. 'जन-ज्ञान' पाठकों को प्रतिमास तीन या चार तारीख को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा **बैरंग** भेज दिया जाता है।
4. कागज, छपाई और डाक-शुल्क में अत्यधिक वृद्धि के कारण फरवरी सन् 1987 से 'जन-ज्ञान' की एक प्रति का मूल्य तीन रुपये के स्थान पर तीन रुपये पचास पैसे कर दिया गया है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक **सदस्य** को एक मास पहले भेज दी जाती है। **पत्र के साथ मनी आर्डर फार्म और पोस्ट कार्ड संलग्न रहता है।**
6. कृपया आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा तुरंत भेज दिया करें। मनी आर्डर न मिलने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जायेगा। वी. पी. में 7 रु. 50 पैसे का डाक व्यय अतिरिक्त लगता है, जिसका लाभ न तो सदस्यों का होता है और न ही संस्थान को।
7. 'जन-ज्ञान' की वी. पी. वापस आने पर संस्थान को 7.50 पैसे की हानि उठानी पड़ती है। अतः सदस्यों से निवेदन है कि वे (हमारे भेजे पोस्ट कार्ड पर) उत्तर देने की कृपा अवश्य करें। —प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

हम संसार में क्यों आये हैं और हमें यहाँ से क्या लेकर जाना है ?

इस धरती पर अमृत क्या है?
आनन्द और संगीत क्या है ?
मानव मन का वांछित स्वर्ग क्या है?
वह क्या है, जिसे पाकर मनुष्य देव बन जाता है ?
वह क्या है जो अन्धकार का शत्रु है?
वह क्या है जहां प्रकाश निरंतर नृत्य करता है ?
इन प्रश्नों का उत्तर है अध्यात्म ।

'अध्यात्म' वह शब्द है, जिसमें जीवन की सफलता का सार छिपा है । अणु बम से भी अधिक शक्तिशाली शस्त्रों का सामना करने का सामर्थ्य उत्पन्न करने वाला ब्रह्मास्त्र है अध्यात्म ।

अध्यात्म अर्थात् आत्मज्ञान । मनुष्य क्या है, क्यों है, किसलिए है और जो वह है वह वस्तुतः क्या है, यह जानना ही अध्यात्म है । अपने को जानना कितना साधारण किन्तु कितना कठिन है, इसकी कल्पना भी साधारण नहीं । व्यक्ति की महत्ता का स्रोत इस विज्ञान में है, इसीलिए ज्ञान की अनन्त महिमा ऋषि-मुनियों ने गाई ।

ब्राह्मण इसीलिए पूज्य था कि वह अध्यात्म जानता था । विद्या का लक्ष्य ही था आत्म-विज्ञान । इस विज्ञान द्वारा मनुष्य मनुष्य बनता था, वह सब कुछ पा लेता था, जिसे पाने के लिए उसने धरती पर जन्म लिया । समय के फेर ने आत्म-विज्ञान के स्थान पर प्रकृति-विज्ञान को महत्व दिया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमने आत्मा को भुलाकर शरीर की उपासना आरम्भ की। शरीर का उपासक पशु बन सकता है, मनुष्य नहीं।

सचमुच बिना अपने को जाने हम कितना भटक जाते हैं। हमारे मन और मस्तिष्क सभी बदल जाते हैं। हम मृत्यु में जीवन और जीवन में मृत्यु देखते हैं। हमें निर्माण में विनाश और महानाश में निर्माण प्रतीत होता है। शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। दृश्यों का रूप बदल जाता है। पता नहीं क्या हो जाता है इन दो मार्गों के अंतर में।

शरीर सत्य नहीं, इसका मूल्य भी कुछ नहीं। यह तो जलेगा, हम प्रतिदिन देखते हैं। फिर भी नहीं देखते। एक पल भी तो नहीं लगता, मैं चला जाता हूं तो सभी कुछ समाप्त हो जाता है और मेरे प्यारे-प्यारे शरीर को सभी जलाने हेतु उद्यत हो उठते हैं। क्यों? कभी सोचा है आपने? क्या कारण है इसका? शरीर को जीवन भर सजाया, आत्मा को भुलाया, पर आत्मा गई तो शरीर भी जलाया। सत्य तब प्रकट होता है जब "सत्य" समाप्त हो जाता है।

आज मनुष्य अंधा हो चुका है। प्रकृति-विज्ञान की सीमा लांघ उसने अपने को प्रभु से भी महान् समझ लिया है। किन्तु पशुता के उभार के अतिरिक्त इस विज्ञान की देन और क्या है?

आत्म-विज्ञान देवता उत्पन्न करता है और प्रकृति-विज्ञान राक्षस। परिणाम सामने है। आज की दुनिया राक्षसों की नगरी बनती जा रही है। हमने गहराई में पैठ कर सोचा है। जीवन के सत्य को समझने का यत्न किया है और अनुभवों के आधार पर हमारा यह सुदृढ़ मत है कि अध्यात्म-विज्ञान का पंडित हुए बिना कोई भी व्यक्ति मनुष्य की संज्ञा से अभिहित नहीं किया जा सकता।

योग क्या है—आत्मा-परमात्मा का संयोग। भोग क्या है—देह-प्रकृति का मिलन। देह-प्रकृति मिलकर जब आत्म-तत्व विस्मृत कर देती है, तब महानाश नृत्य करता है, किन्तु देह-प्रकृति मिलन में जब देह की ज्ञानेन्द्रियां "आत्म-तत्व" जान, देह द्वारा प्रकृति से लाभ उठा कर भी कभी 'मैं' को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विस्मृत नहीं करतीं, तब प्रकृति साधन बन जाती है, साध्य नहीं रहती। आत्म तत्व अपने उत्कर्ष के लिए प्रकृति का लाभ प्राप्त करता है, प्रकृति में लीन नहीं होता।

आत्म-तत्व को जान मैं देह का प्रयोग आत्म-तत्व के उत्कर्ष हेतु कैसे करूं ? प्रकृति के विशाल भंडार से कैसे वह साधन खोजूं जो आत्म-तत्व के उत्कर्ष का कारण बनें ? अपने को जान कर अपने प्रकाश से मैं स्वयं ज्योतित हो प्रकाशपुंज प्रभु के आनन्द का पान कैसे करूं ? यह सब ज्ञान ही आत्म-विज्ञान है।

आत्म-विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध आज कहीं नहीं। जो शिक्षक हैं भी वे बहकाने वाले हैं। भूमण्डल की सारी शक्ति आज अज्ञान को ज्ञान समझ उसी के प्रसार में लगी है। आर्यसमाज का कार्य अज्ञान को ज्ञान में बदलना या यों कहिए अध्यात्म-विज्ञान की शिक्षा देना है। दुर्भाग्य यह हुआ कि इस पवित्र आन्दोलन के संचालक स्वयं अध्यात्मशून्य हो गए और वैदिक धर्म के ये अध्यात्म विहीन ठेकेदार पशुओं की तरह आपस में संघर्षरत है। संस्थापक का महान् लक्ष्य भुला दिया। प्रभु का दिव्य संदेश, ज्ञान भूल गए। ऋचाओं के गीत गाने याद नहीं रहे, रह गई स्मरण गद्दियां, पद और स्वार्थ।

'आत्मा' को मारकर—अन्धकार में डालकर कौन आगे बढ़ा है, और आत्मा को जानकर कौन पीछे रहा या हारा है ?

हम अपने को मिटा रहे हैं तो कभी जीत नहीं सकते। आर्य पुत्र ! अपने को जान ! अपने को समझ। देख तो सही, तू कौन है ? आंखें खोल, अन्धा मत बन। ईश्वर पुत्र ! प्रभु की शरण में आ और उस मार्ग को जान, जो मार्ग देवताओं का है।

जिसे हम अपना-अपना कहकर जीवन की अनमोल घड़ियां नष्ट कर रहे हैं, वह सब हमारा नहीं है। जो हमारा है उसे जान ! जो साथ जायेगा, वह एकत्र कर। अपने को सजा। उठ ! अपना श्रृंगार कर ! मत बहक, मत

(शेष पृष्ठ 14 पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा आनन्द स्वामी का शुभाशीर्वाद

यदि आयु ने स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी (वानप्रस्थ पूर्व नाम पंडित भारतेन्द्रनाथ जी) का साथ दिया होता तो यह वर्ष उनका षष्टिपूर्ति वर्ष होता। 14 मार्च को वे 59 वर्ष के हो जाते। उन्हें हमसे विदा हुए सवा तीन वर्ष के करीब समय बीत चुका है। इस बीच उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। लेकिन उनके सम्बन्ध में जितना भी लिखा जाये, कम है। अचानक जनज्ञान के पिछले अंक पढ़ते हुए हमारी नजर पत्रिका के अक्तूबर-नवम्बर, 1977 के दीपमाला संयुक्तांक पर पड़ी। इस अंक में भारतेन्द्रनाथ जी का एक लेख है। शीर्षक है—सेब वाले स्वामी जी। 24 अक्तूबर 1977 को श्रद्धेय महात्मा आनन्द स्वामी जी दिवंगत हो गए थे। उक्त लेख स्वामी जी को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए लिखा गया था। प्रसंगवश भारतेन्द्र जी ने बताया है कि जनज्ञान का शुभारम्भ कैसे हुआ। यह प्रसंग भारतेन्द्र जी के ही शब्दों में पढ़िए—

"महात्मा आनन्दस्वामी जी से मेरा साक्षात्कार और परिचय पहले-पहल सन 1966 में हुआ। सन 1967 में मैं उनसे मिलने श्री नारायणदास जी (कपूर) के घर गया। मैं आशंकित था कि वे मुझे पहचानेंगे भी या नहीं। लेकिन वे अत्यन्त आत्मीयता से मिले। घंटों बातें हुईं। उन्होंने बताया कि वे मेरे लेखों और कार्यकलाप को 15-20 वर्ष से देखते रहे हैं।

बातचीत के दौरान वे प्रेमपूर्वक बोले—"बेटा भारतेन्द्र, सभाओं के चक्कर में क्यों शक्ति और जिन्दगी बर्बाद कर रहे हो ? कुछ काम करना है तो सबसे अलग होकर करो। अपनी शक्ति पर और प्रभु विश्वास को साथ लेकर चलो।" मैंने निवेदन किया कि "स्वामीजी, मैं निर्धन ब्राह्मण हूं। पैसा पास नहीं। मैं क्या करूं ?"

इस पर उन्होंने अपनी जेब से सौ रुपए का नोट निकाला, फिर एक रुपए का एक नोट निकाल कर 101 रु. मुझे देते हुए कहा कि "जाओ, इस रुपए से अपना पत्र निकालो। आगे भगवान सहायता करेगा।" मैं घर लौट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयां। 101 रुपए की पूंजी से पत्रिका निकालना आश्चर्य की बात है, लेकिन छोटे पैमाने पर जनज्ञान का प्रकाशन प्रारम्भ किया। आज स्वामी जी के 101 रुपए का परिणाम सबके सामने है। जनज्ञान महात्मा आनन्द-स्वामी जी का मानस पुत्र है। हम जो कुछ भी कर पाये, उसके प्रेरणास्रोत स्वामीजी ही थे। जब भी मन में निराशा पैदा हुई, चिन्ता हुई, हम उनके पास चले गए। उनके दर्शन कर निराशा, चिन्ता और कष्ट समूल नष्ट हो जाते थे। पिछले दस वर्षों में कम से कम पचास बार तो उनके दर्शन हुए ही होंगे। जब भी हम उनसे विदा लेते, वे हमारी झोली में कुछ न कुछ अवश्य डालते। पास बैठे लोगों से कहते कि "मैं संन्यासी हूं—यह गृहस्थी संन्यासी है। मुझसे भी बड़ा संन्यासी है। इसे जो भी दूं, वह थोड़ा है।"

हमारी पुत्री ऋचा तो उन्हें सदा "सेब वाले स्वामी जी" कहती थी, क्योंकि वे मिलने पर ढेर सारे सेब दिया करते थे।

उनकी स्मृतियां—उनका प्रेम सम्मोहन की-सी शक्ति रखता है।"

यहां यह लिख देना भी अप्रासंगिक न होगा कि महात्मा आनन्द स्वामी जी की तरह प्रायः मूर्धन्य संन्यासियों—स्वामी सत्यप्रकाशजी, स्वामी ओमानन्दजी, स्वामी ब्रह्ममुनिजी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी आदि का भी शुभाशीर्वाद सदैव जनज्ञान और दयानन्द संस्थान को प्राप्त रहा।

—सत्यपाल शास्त्री

(पृष्ठ 12 का शेष)

भटक, देख तो सही, तेरे गुरु ने अपने जीवन में कुछ भी करने से पहले कितनी साधना की थी।

बालक आत्म-तत्व के ज्ञान के लिए पढ़ता है। पढ़कर अपने को जान जब वह कर्मक्षेत्र में आता तो उस ज्ञानी बालक की पवित्रता से सर्वत्र महक उठती थी। जीवन में साकार स्वर्ग थिरकता था। और आज मन करता है कह दूं मैं इस दुनिया से कि—

लौटो जीवन की ओर और अध्यात्म-विज्ञान की उपासना करो। अपने को जानो। विद्या वह पढ़ो जो तुम्हें आनन्द दे सके। जो तुम्हें मनुष्य बना सके। जो तुम्हें ज्योति दे। जो तुम्हें यह बताए कि तुम कौन हो? यहां धरती पर क्यों आए हो? (जनज्ञान के नवम्बर 1970 के अंक से उद्धृत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

पंजाब की समस्या

(हमारे राजनैतिक समीक्षक की लेखनी से)

पंजाब की समस्या दिन-प्रतिदिन जटिल से जटिलतर होती जा रही है। आज जब से पंक्तियां लिखी जा रही हैं, 18 फरवरी है और निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि कल क्या होगा ? हत्याओं का सिलसिला जारी है और जैसा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने कहा भी है, "अब सम्भवत: अकाल तख्त पर कब्जा जमाकर बैठे लोग सरकार चलायेंगे। फलस्वरूप राज्य में अल्पसंख्यकों का कोई भविष्य नहीं।"

पंजाब की गड़बड़ अपने वर्त्तमान रूप में पिछले पांच साल से चल रही है। वैसे यह किसी-न-किसी रूप में तो चालीस वर्ष से अधिक से जारी है। उग्रवादी सिख एक के बाद दूसरा आंदोलन चलाते रहे हैं और मोर्चे लगाते रहे हैं। उनका सारा समय या तो मोर्चे लगाने में बीतता है या उनकी तैयारी में। उनकी मांगों का कोई अन्त नहीं है। जैसे मुस्लिम लीग ने अपनी मांगें सात से बढ़ाकर चौदह और चौदह से बढ़ाकर इक्कीस कर दी थीं, वैसे ही अकाली दल की मांगें बढ़ती ही जाती हैं। अकाली भले ही इस तथ्य को छिपायें, लेकिन वास्तविकता यह है कि वे अपनी 43 मांगें मनवाना चाहते हैं। वे ऐसी-ऐसी मांगें करते हैं कि सुनकर विश्वास नहीं होता कि कोई समझदार राजनैतिक दल ऐसी बेतुकी मांग भी कर सकता है। उदाहरणार्थ उनकी एक मांग यह है कि न केवल पंजाब में अपितु पूरे भारत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर रोक लगा दी जाए। कभी पंजाबी सूबे की मांग, कभी चंडीगढ़ की मांग, कभी नहरी पानी की मांग और कभी स्वायत्तता की मांग। अब तो अकालियों का एक वर्ग खुल्लमखुल्ला कहने लगा है कि हम खालिस्तान से कम किसी बात पर राजी न होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नया सिलसिला 15 दिन पूर्व प्रारम्भ हुआ, जिसके बारे में इतना ही लिखना पर्याप्त है कि सिखों के मजहबी नेता राजनैतिक नेताओं की नकेल अपने हाथ में रखना चाहते हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी कमजोरी के कारण अथवा अन्य किसी भी कारण से एक बार झुक जाता है, तब प्रायः उसे दुबारा और अधिक झुकाने की कोशिश की जाती है। तब उस व्यक्ति के लिए डटे रहना कठिन हो जाता है। पंजाब के मुख्यमंत्री सुरजीत सिंह बरनाला ने एक बार प्रायश्चित्त के तौर पर जूते साफ करके स्वयं ही अपने रास्ते में कांटे बिखेरे हैं। अब अकाल तख्त के महन्त उन्हें और अधिक झुकने के लिए विवश कर रहे हैं। आम आदमी समझ नहीं पा रहा कि झगड़ा कुर्सी का है या सिखों के नाम पर मांगी जाने वाली मांगों का। अब तक की घटनाएं तो यही बताती हैं कि सिखों के विभिन्न गुट सिखों को अधिकाधिक दिलवाने का लालच देकर अपने वोट बैंक का बैलेंस बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

आजकल उग्रवादी अकालियों का नेतृत्व एक पंथिक कमेटी के हाथ में है। इस पंथिक कमेटी को अकाल तख्त से भी ऊपर रख दिया गया है। यह पंथिक कमेटी खालिस्तान की स्थापना की समर्थक है। इसने बड़े-बड़े गुरुद्वारों के मुख्य ग्रंथी भी अपनी मर्जी से नियुक्त करवा लिए हैं, क्योंकि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष जत्थेदार गुरुचरणसिंह तोहड़ा उग्रवादियों के समर्थन के मामले में पंथिक कमेटी से पूर्णतः सहमत हैं। दोनों का आपसी सम्बन्ध 'चोर-चोर मौसेरे भाई' वाला है। अकाल तख्त के कार्यकारी मुख्य ग्रंथी प्रो. दर्शनसिंह रागी ने सुरजीतसिंह बरनाला को सिख पंथ से बेदखल कर दिया है। बरनाला ने साहस का परिचय दिया है और वे अपने पक्ष पर डट गए हैं। विद्रोही अकालियों के कहने पर रागी ने पन्थ की एकता के नाम पर बरनाला को उलटे-सीधे आदेश दिये, जिन्हें न मानने का परिणाम यह है कि उनकी विद्रोही अकालियों से ठन गई है। सिख जनता की सहानुभूति अर्जित करने के लिए जत्थेदार इसे अकाल तख्त और दिल्ली तख्त की लड़ाई का नाम दे रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 191 पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय दिवस, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रभाषा का अपमान कब तक सहन किया जाएगा ?

—शिवकुमार गोयल

भारत का संविधान 26 जनवरी सन् 1950 को लागू हुआ था अतः यह दिन (गणतन्त्र दिवस) स्वाधीन भारत का एक महान् पर्व बन गया है। किन्तु यह कैसी विडम्बना है कि देश के कुछ नेता संविधान की प्रतियां फाड़ने या जलाने और गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार की घोषणा करने के बावजूद संसद् व विधान मंडलों की कुर्सियों पर विराजमान हैं। जिन्हें राष्ट्र-द्रोह के आरोप में नागरिकता से वंचित कर जेलों में पहुंचा दिया जाना चाहिए था वे मौलिक अधिकारों की आड़ लेकर वर्ग-विशेष के नेता बने देश की शान्ति भंग करने पर उतारू हैं।

यह भारत ही है, जहां जिसके जी में आता है, संविधान का अपमान कर डालता है। जिसका जो चाहता है वह राष्ट्रगान को साम्प्रदायिक बता कर उसकी अवहेलना करने का फतवा दे डालता है। जिसके मन में फितूर उठता है वह राष्ट्रध्वज जलाने लग जाता है तथा जो चाहता है, राष्ट्र-भाषा हिन्दी को गंवारों व जाहिलों की भाषा बताने लगता है। लगता है कि विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को हमने "स्वच्छन्दता" मान लिया है। जो लोग अपने देश के संविधान, राष्ट्रगान, राष्ट्रभाषा, राष्ट्र-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिवस व राष्ट्रध्वज का सम्मान नहीं कर सकते, उनसे राष्ट्रीय हितों की रक्षा की अपेक्षा करना पागलपन ही कहा जाएगा।

अपने को दूसरा जिन्ना सिद्ध करने की होड़ में मियां शहाबुद्दीन ने बाबरी मस्जिद के प्रश्न की आड़ में जिस बैठक में गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार का आह्वान किया था, उसमें इन्दिरा कांग्रेस, जनता पार्टी, लोक दल आदि राजनैतिक दलों के मुस्लिम नेता शामिल थे। भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल जैसे नेता की उपस्थिति में गणतंत्र दिवस के बहिष्कार का प्रस्ताव पास होना शर्मनाक है। श्री गुजराल 'उन्हें टोक सकते थे कि मस्जिद के मसले के बीच गणतन्त्र दिवस को क्यों घसीटा जा रहा है? परन्तु लगता है कि एक वर्ग-विशेष की नाराजगी के भय से उन्होंने मौन रहना ही ठीक समझा। तुष्टीकरण की इस घातक नीति ने अलगाववादी तत्वों को प्रोत्साहित किया है। भारत का विभाजन इसी घातक नीति का परिणाम था। नगालेंड में ईसाई मिशनरी विदेशी धन के बल पर विद्रोहियों को भड़काते रहे और हमारी सरकार स्थिति की अनदेखी करती रही। बंगलादेश से असम में घुसपैठ होती रही और राजनैतिक दलों के नेता वोटों के लालच में घुसपैठियों को संरक्षण देते रहे।

संविधान जलाना सहन क्यों?

हाल ही में तमिलनाडु में द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम के कुछ विधायकों ने हिन्दी के विरोध में सार्वजनिक रूप से संविधान की प्रतियां जलाईं। क्या विदेशी भाषा अंग्रेजी को बनाये रखने की मांग संविधान के अपमान से ही की जा सकती थी? दक्षिण भारत के हिन्दी विरोधी ये तत्व जानते हैं कि जब अकाली सांसद व विधायक संविधान की प्रतियां राजधानी दिल्ली में जला सकते हैं और उनकी कुर्सियों को कोई खतरा नहीं हो सकता, तो फिर उन्हें इस कृत्य में क्या डर है? यह बात अलग है कि तमिलनाडु के दूरदर्शी राजनेताओं ने उन्हें सदस्यता से वंचित कर एक आदर्श कायम किया।

संविधान जलाने का दुस्साहस सबसे पहले श्री प्रकाश सिंह बादल जैसे उन अकाली नेताओं ने किया था जो संविधान की बदौलत ही पंजाब के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे थे। हिन्दुओं व सिखों पर एक ही धारा क्यों लागू होती है, सदृश प्रश्न पर संविधान जलाने वाले नेताओं को यदि उसी समय नागरिकता से वंचित कर दिया जाता या पांच वर्ष के लिए चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर दिया जाता तो शायद कोई दूसरा राजनैतिक नेता ऐसा दुस्साहस न करता ?

राष्ट्रगान का विरोध

कुछ ही दिन पूर्व गोआ में कोंकणी को राजभाषा बनाने की मांग करने वालों ने राष्ट्रध्वज तिरंगा ही जला डाला। राष्ट्रगान "वन्देमातरम्" के प्रश्न पर पहले महाराष्ट्र में तथा बाद में पश्चिम बंगाल में फतवे जारी किए गए कि यह इस्लाम विरोधी है। मुसलमान जमीन के टुकड़े को मां के समान मानने को तैयार नहीं। उन्हें "आनन्दमठ" जैसी राष्ट्रीय कृति के लेखक श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी भी साम्प्रदायिक नजर आने लगे हैं।

पहले कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधी व नेहरू जी की उपस्थिति में मौलाना मुहम्मद अली व शौकतअली ने राष्ट्रगान पर आपत्ति उठाई थी। उन्हें "वन्देमातरम्" में हिन्दू साम्प्रदायिकता की गंध आई थी। राष्ट्रगान के समय अन्य नेता श्रद्धा के साथ खड़े हो गये, लेकिन ये मौलाना बैठे रहे थे। उस समय महात्मा गांधी ने समझौते की नीति अपनाई, इसी से अलगाववादी तत्वों को प्रोत्साहन मिला था।

महान् क्रांतिकारी स्वातन्त्र्यवीर सावरकर हिन्दू महासभा के शीर्षस्थ नेता थे। भगवा ध्वज हिंदू महासभा का ध्वज था। सावरकर जी ने भारत विभाजन का डटकर विरोध किया था तथा कहा था कि देश विभाजन के कारण आजादी अधूरी है। किन्तु जब 15 अगस्त की पावन वेला आई तो उन्होंने गद्गद होकर बम्बई स्थित अपने निवासस्थान पर अपने हाथों से राष्ट्रध्वज तिरंगा फहराया। कुछ लोगों को आपत्ति हुई। सावरकर जी ने उन्हें उत्तर दिया—"यह ठीक है कि देश का एक भूभाग हमसे अलग कर दिया गया है, किन्तु हम आजाद तो हुए ही हैं। तिरंगा हमारा राष्ट्रध्वज है अतः उसका सम्मान करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र सर्वोपरि

आज कुछ अलगाववादी व कट्टरपंथी तत्व मजहब व भाषा को राष्ट्र से अधिक महत्व देते हैं। ऐसे तत्व ही समय-समय पर राष्ट्रदिवस, राष्ट्र-ध्वज, राष्ट्रगान व राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान करने का दुस्साहस करते हैं और सत्तारूढ़ दल सहित सभी राजनैतिक दल ऐसे तत्वों के विरुद्ध इस-लिए मुंह नहीं खोलते कि चुनाव में कहीं उन्हें उनके वोटों से वंचित न होना पड़ जाए। तुष्टीकरण की इस घातक नीति के कारण ही ऐसे राष्ट्रविरोधी तत्वों का राष्ट्रीय मानबिन्दुओं का अपमान करने का दुस्साहस होता है।

राष्ट्र के मानबिन्दुओं का अपमान करने की दुःखद घटनाएं भारत में ही होनी संभव हैं। अन्य कोई भी देश अपने संविधान, राष्ट्रध्वज व राष्ट्रगान का अपमान कदापि नहीं कर सकता। इनका अपमान करने वालों को नाग-रिकता से वंचित कर दिया जाता है।

★

श्रेष्ठ जीवन का उद्देश्य

श्रेष्ठ जीवन का उद्देश्य न तो लाभ-सत्कार एवं प्रशंसा की प्राप्ति में है, न समाधि-लाभ में। चित्त की अचल विमुक्ति ही श्रेष्ठ जीवन का असली उद्देश्य है और इसके लिए विचारों की श्रद्धा कभी भी ढीली नहीं होनी चाहिए। वह हमेशा मजबूत रहनी चाहिए। अगर मैं श्रद्धा की व्याख्या करूं, तो मैं यह कहूंगा कि, सद्विचार पर बुद्धि रखने का ही नाम श्रद्धा है। यही श्रद्धा मनुष्य को बल देती है, सब तरह से प्रेरणा देती है और उसके जीवन को सार्थक बनाती है।

—सन्त विनोबा

जीवन का लक्ष्य

मुच्यमानेषु सत्वेषु ये मे प्रमोदसागराः।
त एव ननु पर्य्याप्तं मोक्षेणारसिकेन किम् ॥

—दूसरों के मुक्त होने से मेरे मन में आनन्द के जो सागर उठते हैं, वे मेरे लिए पर्याप्त हैं। मैं इस व्यक्तिगत मोक्ष को, जिसमें कुछ रस नहीं है, लेकर क्या करूंगा?

—'बोधिचर्यावतार से'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में शाँति के लिए हिन्दू संगठन जरूरी है : पं. मदनमोहन मालवीय

देश के विभाजन और स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देश की जैसी स्थिति थी, आज फिर वैसी ही स्थिति पैदा हो गई है। स्थान-स्थान पर साम्प्रदायिक उपद्रव और पंजाब से हिंदुओं का पलायन उसी का परिणाम है। ऐसी अवस्था में महामना पं० मदनमोहन मालवीय द्वारा उन परिस्थितियों में हिंदू जाति के नाम दिया गया संदेश आज भी प्रासंगिक है।

हिन्दू वर्षों से लगातार सच्ची हिन्दू-मुस्लिम एकता को मूर्तिमान् देखने के लिए अपनी ओर से पूर्ण चेष्टा करते रहे और उदारता से काम लेते रहे हैं। आज भी हिंदू सहयोग करने और सहिष्णुता से काम लेने को तैयार हैं। परन्तु मुझे यह देखकर दुःख होता है कि उनकी सहिष्णुता का अर्थ दुर्बलता लिया जा रहा है और उनके सहयोग को अधिकतर मुसलमानों द्वारा ठुकराया जा रहा है। असहिष्णुता की भावना से नहीं, वरन पूर्ण सावधानी तथा मनन-चिन्तन के उपरान्त मैं यह वक्तव्य दे रहा हूं। क्योंकि यह निश्चित है कि जब तक हिन्दू एक जाति के रूप में कमर कसकर तैयार नहीं हो जायेंगे, तब तक हिन्दू-मुस्लिम समस्या अपनी सारी भयंकरताओं के साथ बनी रहेगी।

हिंदू नेताओं का जैसा कर्त्तव्य अपनी मातृभूमि के प्रति है, वैसा ही अपने धर्म, संस्कृति और अपने हिंदू बन्धुओं के प्रति भी है। यह नितांत आवश्यक है कि हिंदू अपने को संगठित करें। सब एक होकर काम करें, निःस्वार्थ और देशभक्त कार्यकर्त्ताओं का एक दल गठित करें, जिनका एकमात्र उद्देश्य सेवा हो। जाति तथा वर्णगत भेदों को भुला दें, और हिंदू जाति की रक्षा के लिए और अपने आदर्श तथा संस्कृति को बचाने के लिए अधिक से अधिक त्याग करें।

हिन्दुओं को प्रभावपूर्ण रूप से संगठित होने की नितांत आवश्यकता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्यों है ? आज देश भर में मुसलमानों की राजनैतिक और धार्मिक संस्थाओं के कैसे विचार हैं और वे क्या कर रहे हैं, यहाँ इसका उल्लेख करना आवश्यक है। मुसलमान नेताओं द्वारा दिए हुए अग्निमय भाषण, अज्ञात मुस्लिम संस्थाओं द्वारा सावधानी के साथ जानबूझकर तैयार किए हुए गुप्त लेख, मुस्लिम लीग का धमकियों से भरा हुआ राजनैतिक रुख, कलकत्ते का हिंदू हत्या-कांड, पूर्व बंगाल में मुसलमानों के सुसंगठित बलों द्वारा किए हुए कुकर्मों के रोमांचकारी समाचार और देश भर में दंगों का प्रवर्त्तन देखकर प्रत्येक हिन्दू का हृदय निश्चय ही रोष से खौलने लगना चाहिए और हिन्दू जाति की रक्षा के लिए कुछ कर डालने को उमड़ उठना चाहिए। पिछले कुछ महीनों से हिन्दुओं पर सोच-समझकर जो अगणित अत्याचार किए जा रहे हैं, उनमें कुछ ये हैं—जबर्दस्ती धर्म-परिवर्तन, हिन्दू पुरुष, नारी और बच्चों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार, स्त्रियों पर बलात्कार और शिशुओं की निर्मम हत्या, पवित्र स्थानों-मन्दिरों का ध्वंस एवं हिन्दू-दुकानों तथा निवास स्थानों की लूट।

राष्ट्रीयता के साथ धर्म

वर्तमान घटनाचक्र के निरीक्षकों और आलोचकों में से बहुतों का यह निश्चित मत है कि परिस्थिति का यह रूप क्षणिक नहीं है और हिन्दू जाति को यदि जीवित रहना है तो उसे कमर कसकर तैयार हो जाना चाहिए। वर्षों और दशाब्दियों से हिन्दुओं की मनोवृत्ति धर्म की अपेक्षा राष्ट्रीयता की ओर अधिक झुकी रही है। हिंदू सत्य का प्रेमी और अहिंसा का विश्वासी है। उसमें युद्ध की भावना का अभाव है और एकराष्ट्रगत मनुष्यों में परस्पर लड़ाई-झगड़े की भावना से उसे घृणा है। हिंदुओं की इस मनोवृत्ति से लाभ उठाकर मुसलमानों ने अपनी मांग बढ़ा दी और उन पर धार्मिकता का रंग चढ़ाकर नया जोश भर दिया है। इस प्रकार के लड़ाई-झगड़ों की जड़ झूठा प्रचार है और मुसलमान इस कार्य में अपनी आशा से भी अधिक सफल हुए हैं।

पिछले तमाम वर्षों में हिंदुओं ने सदा हानि उठाई है। कांग्रेस एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय संस्था है और मुस्लिम लीग सांप्रदायिक। फिर भी दोनों के साथ बराबरी का व्यवहार किया गया है और इस प्रकार बहुसंख्यक (हिन्दू) जाति के अधिकारों को कुचला गया है। उनकी आशाओं पर विकसित होने के समय ही पानी फेर दिया गया है और भारतीय राष्ट्रीयता के नाम पर उनकी संस्कृति और धर्म की सर्वथा अवहेलना की गई है।

हिंदुओं की तथा अन्य जातियों की राजनैतिक उन्नति कांग्रेस के हाथों में सुरक्षित मानी जा सकती है परंतु हिंदुओं की धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक उन्नति के प्रश्नों पर अंतिम निर्णय देने का अधिकार निश्चय ही किसी हिंदू संस्था को ही है, जो उसकी ओर से बोलने तथा कार्य करने के लिए प्रतिनिधित्व करती हो। धर्म-परिवर्तन निश्चय ही रुकने चाहिए। साथ ही, ऐसे मुसलमानों को और खासकर उन्हें जिनका जबर्दस्ती धर्म-परिवर्तन कर दिया गया है और जो हिंदू होना चाहते हैं—विशेष सुविधा देनी चाहिए। हिंदुओं को निश्चय ही ऐसे आवश्यक उपाय कर लेने चाहिए, जिनसे मुसलमानों द्वारा दी हुई आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार की धमकी उल्टे उन्हीं के सिर पर जाकर नाचे। हिंदुओं को भयमुक्त होकर बहादुर और मजबूत बनना चाहिए। सैनिक शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। स्वयंसेवकों की संस्थाएं बनानी चाहिए और आत्मरक्षा के लिए एक केन्द्रीय स्वयंसेवक सेना का गठन करना चाहिए।

चेतावनी की घंटी

बहुसंख्यक हिंदू जाति के लिए मृत्यु का परवाना लेकर आने वाली इस महामारी के आक्रमण के विरुद्ध हिन्दुओं को सिर उठाना चाहिए। चेतावनी की घन्टी बज जानी चाहिए। पर कमर कसकर तैयार होकर, स्वयं सेवक संस्थाओं का गठन कर या अपने दृष्टिकोण को सैनिक रूप देकर वे किसी के प्रति किसी प्रकार की हिंसा की इच्छा नहीं करेंगे। आत्मरक्षा और आत्मस्थिति ही उनका ध्येय है। स्वयं जीवित रहना और दूसरों को जीवित रहने देना ही उनके उद्देश्य हैं। जो हिंदुओं को शांति के साथ नहीं रहने देना चाहते उनके प्रति किसी प्रकार की सहिष्णुता नहीं हो सकती। यदि धर्म की ही पुकार है तो अवश्य ही उससे धार्मिक दृढ़ता की गूंज होनी चाहिए। रक्षा की व्यवस्था निश्चय ही इतनी प्रभावशाली हो कि आक्रमण निश्चित रूप से व्यर्थ हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाए। आत्मसम्मान ऐसी बहादुरी से भरा होना चाहिए कि जिससे स्फुट आक्रमण भी निश्चित रूप से असफल हो जाए।

कोई भी मूल्य देकर शांति चाहने से समस्या का समाधान नहीं होता– सांप्रदायिक समस्या का तो और भी नहीं। हिंदुओं को निश्चय ही अपने प्रत्येक हिंदू भाई के प्रति कर्तव्य-पालन करने के लिए उत्साहित करना चाहिए और उन्हें अपने को धन्य मानना चाहिए कि वे उन ऋषियों और महात्माओं के धर्म के अनुयायी हैं, जिन्होंने मनुष्यों की वासस्थली वसुन्धरा को स्वर्ग बनाने की चेष्टा की और सारे जगत् को कुटुम्बवत् मानकर, भ्रातृत्व का प्रचार किया।

हिंदुओं को हिंदुओं की सेवा अवश्य करनी चाहिए। हिंदुओं को आज अपने संरक्षण की बहुत आवश्यकता है। बर्बरतापूर्ण आक्रमण, मिथ्या राजनैतिक प्रचार अथव मेल-मिलाप की नीति की मिथ्या कल्पना या निर्जीव बना देने वाले तत्वज्ञान द्वारा हिंदू अपने धर्म को मरने देना नहीं चाहते, अपनी संस्कृति को मिटने देना नहीं चाहते और न अपनी संख्या को ही घटने देना चाहते हैं। यदि हिंदू अपनी रक्षा नहीं करेंगे तो वे मर जायेंगे। यदि वे अपना संघटन नहीं करेंगे तो उनके नष्ट होने में देर नहीं लगेगी। यदि वे पिछड़े रहे तो रौंदकर क्रियारहित और निर्जीव बना दिये जायेंगे। उन्हें अकर्मण्य बिल्कुल नहीं रहना चाहिए। उनमें आत्मविश्वास अवश्य होना चाहिए। उनमें अवश्य ही साहस होना चाहिए। उन्हें मरने से कभी नहीं डरना चाहिए। उन्हें परस्पर भाई-भाई की तरह प्रेम करना चाहिए और प्रत्येक हिन्दू के प्रति सहनशील बनना चाहिए, परन्तु उन सिरफिरों के प्रति सहनशील बिल्कुल नहीं होना चाहिए, जो उन्हें शांति के साथ रहने देना नहीं चाहते।

मैं इस प्रकार की प्रेरणा करना अपना कर्तव्य समझता हूं, क्योंकि इस समय मानवता दांव पर लगी है। हिंदू संस्कृति और हिंदू धर्म खतरे में है। परिस्थिति संकटापन्न है और ऐसा समय आ गया है कि हिंदू एक होकर सेवा तथा सहायता के साधनों को परिपुष्ट करें और अपनी रक्षा तथा अपने अस्तित्व को प्रभावशाली बनायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिंदुओं को चुनौती

समूचे भारतवर्ष में अनेकों मुस्लिम नेताओं ने अपने लेखों और आडम्बरपूर्ण व्याख्यानों में जहर उगला है। मुस्लिम लीग के नेता मि. गजनफर अली खां तथा दूसरों ने अपने लेखों तथा व्याख्यानों में जंगली और दायित्व-शून्य भाषा में हिंदुओं को चुनौती दी है। बंगाल की घटनाओं पर एक भी मुस्लिम लीगी नेता ने घृणा प्रकट नहीं की। बल्कि इन बर्बर तथा पाशविक घटनाओं पर वे एक आन्तरिक आनन्द का अनुभव करते हैं। मैं उनकी-सी विषघुली स्याही में अपनी लेखनी डुबो कर कुछ नहीं लिखना चाहता।

मैं अपने हिन्दू भाइयों से यह नहीं कहता कि जहां मुसलमान कमजोर या कम हों, वहां वे उन पर आक्रमण करें। पर हिंदुओं से मैं यह अवश्य कह रहा हूं कि जहां वे दुर्बल हैं, वहां सबल बनें, और जहां उनकी संख्या कम हो, वहां सफलतापूर्वक अपनी रक्षा करें।

हिन्दू बहुसंख्यक प्रान्तों में हिंदुओं ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों का कभी विरोध नहीं किया, बल्कि उनके अधिकारों की गारंटी दी है। हालांकि वे देखते आ रहे हैं कि मुस्लिम बहुसंख्यक प्रान्तों में न केवल हिन्दुओं के अधिकारों की भीषण एवं क्रूर अवहेलना की जाती है बल्कि उनके जीवन, धन और धर्म पर भी आघात होता है। सामाजिक संघटन के आधार पर निर्मित अराजनैतिक संस्थाओं के अभाव में राष्ट्रीयता के मोर्चे को बहुत दुर्बल बना दिया गया है और इससे खुश करने की राजनीति तथा मुस्लिम लीग की असम्भव मांगों को जन्म दिया गया है।

केवल धर्म और संस्कृति के नाम पर ही नहीं अपनी प्यारी जन्मभूमि के नाम पर भी मैं समस्त हिन्दुओं से अपील करता हूं कि यदि वे भारतवर्ष में चिरकाल के लिए शान्ति चाहते हैं और ऐसा सन्देश देना चाहते हैं जिसे मुसलमान तथा अन्य जाति एवं धर्म के लोग सुनें तो वे एक हो जायें और अपनी रक्षा करें। सन्देश यह कि जैसे वे पहले रह चुके हैं, अब भी वे एक साथ, एक ही भूमि पर रहना चाहते हैं और यदि वे हिन्दुओं के साथ शांति से रहना चाहते हैं तो उन्हें निश्चय ही हिन्दुओं के धर्म का आदर करना होगा, वे हिंदुओं के पूजागृहों और मन्दिरों को भ्रष्ट नहीं कर सकेंगे और धार्मिक स्वतन्त्रता, जीवन की पवित्रता एवं स्त्रियों के सतीत्व का उन्हें अवश्य सम्मान करना पड़ेगा। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'हिन्दू' शब्द का पुनर्जन्म हो रहा है !

—चन्द्रकांत बक्षी

'हिन्दु' शब्द का आज पुनर्जन्म हुआ है। रक्त जैसा लाल एक और शब्द है, जो अखबारों के प्रथम पृष्ठों पर बार-बार छपने लगा है—'हिन्दू बैकलैश' यानी हिन्दुओं का उल्टा तमाचा। 'जातिवाद' शब्द की प्रतिध्वनियां, एक बार फिर सम्पादकीय लेखों से उठने लगी हैं। रह-रह कर प्रश्न पूछा जाता है, " 'सैक्युलर' यानी क्या ? क्या केवल हिन्दुओं का विरोध ? और आखिर क्यों हिन्दुस्तान एक हिन्दु राष्ट्र नहीं है ?"

भारतीय राजनीति में शब्दों की भारी मिलावट हो गई है। आजादी आई 1947 में और देश को नया संविधान मिला 1950 में। नये संविधान के साथ एक नया शब्द भी प्रचलित हुआ—'सेक्युलर' या धर्म-निरपेक्ष'। दावा किया गया कि हमारे यहां सभी धर्म समान है। भारत का कोई राष्ट्र-धर्म नहीं है। भारत हिन्दू राष्ट्र नहीं है। 'हिन्दू' शब्द ही, उन दिनों, कभी कभार इस्तेमाल होता था। उसी 'हिंदू' शब्द का आज पुनर्जन्म हुआ है। रक्त जैसा लाल एक और शब्द है, जो अखबारों के प्रथम पृष्ठों पर बार-बार छपने लगा है—'हिंदू बैकलैश', यानी हिंदुओं का उल्टा तमाचा ! 'जातिवाद' शब्द की प्रतिध्वनियां, एक बार फिर, सम्पादकीय लेखों से उठने लगी हैं। रह-रह कर प्रश्न पूछा जाता है, "सेक्युलर' यानी क्या ? क्या केवल हिंदुओं का विरोध ? और आखिर क्यों हिंदुस्तान एक हिंदु राष्ट्र' नहीं है ?"

हिंदुओं के हृदय में ऐसी भावना पनप चुकी है कि हिन्दुस्तान में सबसे अधिक अन्याय हिन्दुओं के साथ ही होता है—सिर्फ इस कारण कि वे हिन्दू हैं। यदि आप अल्पमत वर्ग के या कमजोर वर्ग के हैं, तो सरकार से मनमाने लाभ छीन सकते हैं। केरल में करुणाकरन की सरकार ने मुहर्रम की तीन छुट्टियां दे दी थीं। तीन-चार ही वर्ष पहले, केन्द्रीय सरकार ने दीपावलि और दशहरे की छुट्टियां रद्द कर दी थीं, क्योंकि लोकसभा में एक मन्त्री ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तर्क दिया था कि ये त्योहार पूरे देश में नहीं मनाए जाते। बाद में सरकार को होश आया और इन दोनों त्योहारों पर छुट्टियां घोषित की गईं। उसी अरसे में, यानी अगस्त, 1983 में, केनिया के राष्ट्रपति डेनियल आर्क मोई ने घोषित किया कि केनिया में दीपावलि पर हिंदुओं की छुट्टी घपले में पड़ रही थी, जबकि केनिया में वही छुट्टी हिंदुओं को मिलने लगी थी।

गत तीन-चार वर्षों में अनेक छोटी-बड़ी घटनायें घटी हैं, जिनके परिणाम विस्फोटक ही हुए हैं। गुजरात में अमरसिंह चौधरी ने जब अहमदाबाद में कृष्ण-जन्म रथ यात्रा बंद करवा दी थी, तब पूरे सौराष्ट्र-गुजरात के नगरों में रथ यात्राएं निकली थीं। सैयद शहाबुद्दीन नामक एक कट्टर जातिवादी ने बाबरी मस्जिद की तरफदारी में एक अत्यंत घातक कुतर्क किया था कि यदि रामचंद्र अयोध्या में जन्मे थे, तो बताइए कि 'ठीक कौन-से स्थान पर' जन्मे थे। आम आदमी को इतिहास के पूरे परिप्रेक्ष्य की जानकारी नहीं हुआ करती। इसीलिए ऐसे कुतर्क काम कर जाते हैं और पिघली बर्फ की एक-एक बूंद आखिर नदी में बाढ़ ले आती है।

जातिवाद का जन्म होता है अन्याय के अहसास में से। फिर सरकार भावनात्मक एकता के चाहे कितने ही नारे लगाए, जातिवाद की यह आग सरकार के तोता-रटन्त प्रचार से बुझने का नाम नहीं लेती। केवल चुनाव के तराजू का पल्ला झुकाने के लिए अहिन्दुओं के मतों का वजन तोलने वाले राजनीतिज्ञ अब असमर्थ हो जाएंगे, क्योंकि अब जो राष्ट्रीय चुनाव होगा, उसमें सभी दलों के उम्मीदवारों का हिन्दूपना भी पूरी ढिठाई से उसी तराजू पर चढ़ने वाला है। 'सेक्युलर' अथवा 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द, भारत के सांप्रत इतिहास में, 'भिंडरांवाले' नामक जो एक घटना घटी है, उसके बाद अर्थहीन हो गया है।

साउदी अरब और कुछेक अन्य अरब देशों में आप अपने घर के अन्दर भी अपने देवी-देवताओं की तसवीरें या मूर्तियां नहीं रख सकते। यदि कोई धार्मिक कैसेट आडियो अथवा वीडियो आपके घर से बरामद होता है, तो यह भी एक गुनाह है। संयुक्त अरब अमीरात में दो हिंदू श्रमिकों को, अप्रैल 1983 में, हिंदू धर्म का प्रचार करने के अपराध में 50 महीनों की कैद की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
सजा दी गई थी। तुर्की में, 1973 में, गीता, उपनिषद् एवं डा. राधाकृष्णन् की पुस्तक 'द हिन्दू व्यू आफ लाइफ' पर सरकारी प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। खाड़ी के एक अरब देश में जब एक हिन्दू त्योहार पर छुट्टी के लिए आवेदन किया गया, तब अरब प्रशासकों ने प्रतिप्रश्न किया, "क्या इस हिन्दू त्योहार पर आपके हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय छुट्टी दी जाती है ? जब हिंदुस्तान में हिदुओं के लिए इस त्योहार की राष्ट्रीय छुट्टी नहीं है, फिर हमारे अरब देश के हिंदू कैसे इस त्योहार की छुट्टी पा सकते हैं ?"

हमारे शासक 'हिन्दू' शब्द के साथ इस हद तक छुआछूत क्यों बरतते हैं ? मुस्लिम देश इंडोनेसिया में उनके संविधान का मुद्रालेख है – 'धर्मो रक्षति रक्षितः' यानी जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। उनका राष्ट्रीय प्रतीक है गरुड़। उनका रिजर्व बैंक 'कुबेर' कहलाता है। उनकी वायुसेना का नाम है 'हनुमान्'।

सिंगापुर में हाई स्कूल के विद्यार्थियों को 1984 से हिन्दू धर्म की शिक्षा दी जाने लगी है–भले ही अंग्रेजी भाषा में। इस शिक्षा की व्यवस्था उनके राष्ट्रीय शिक्षा विभाग ने की है। सिंगापुर के हाई स्कूलों में 1982 में 4,300 विद्यार्थी ऐसे थे, जो भारतीय थे। काबुल में सात लाख की लागत से एक गणेश मंदिर आशामाई टेकरी पर तैयार किया जा रहा है, ऐसा समाचार 1983 में छपा था। वेस्ट इंडीज के ट्रिनिडाड और टोबेगो में लगभग एक-तिहाई आबादी हिन्दू है। वहां बारह हिन्दू संस्थानों ने मिलकर एक हिन्दू संगठन तैयार किया है। नेपाल में 1975 में गोवध पर रोक लगाई गई थी और दोषी व्यक्तियों को 12 वर्ष तक की कैद की सजा दी जा सकती थी। नेपाल स्वतंत्र और स्वायत्त हिन्दू राज्य है। मार्च, 1985 में छह नेपालियों को ईसाई हो जाने के अपराध में छह मास का कारावास दिया गया था, हालांकि बाद में उन्हें मुक्त कर दिया गया था। नेपाल के कानून के अनुसार, वहां यदि कोई व्यक्ति, किसी बौद्ध या हिन्दू को किसी अन्य धर्म में ले जाने का प्रयास करता है, तो उसे छह वर्ष तक का सश्रम कारावास दिया जा सकता है। जाम्बिया की हिन्दू एसोसिएशन की प्रशंसा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वहां की सरकार खुल कर करती है। श्रीलंका में हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं की रक्षा के लिए एक विशिष्ट मंत्री को नियुक्त किया गया था, जिनका नाम था सी. राजदुरे। श्रीलंका ने 1982 में विश्व हिन्दू परिषद् का आयोजन किया था। मलयेशिया के पेनांग में 1983 में 19वां 'नेशनल हिन्दू यूथ कन्वेशन' आयोजित हुआ था। उसका उद्घाटन मलयेशिया के निर्माण मंत्री एस. स्वामी वेलु ने किया था। वाशिंगटन में तीन हिन्दू मंदिर हैं। अन्य अमरीकी नगरों में भी हिन्दू मंदिर बनते जा रहे हैं। चीन और जापान में गणपति की पूजा होती रही है।

जब बहुमत का धार्मिक 'बैकलैश' यानी उल्टा तमाशा आता है, तब उसे रोकना मुश्किल हो जाता है—इतिहास साक्षी है। डा. भीमराव रामजी आम्बेडकर ने आजादी मिलने से पहले सलाह दी थी कि हिन्दू और मुस्लिम आबादियों का पूरा-पूरा स्थानान्तरण कर लेना चाहिए, ताकि हिन्दुस्तान को एक हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जा सके। ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि गांधी-नेहरू को यह उचित नहीं लगा। गांधी-नेहरू ने हिन्दू 'बैकलैश' की कल्पना भी नहीं की थी। मई 16, 1986 के दिन लन्दन के टी. वी. चैनल 4 पर 'बाण्डुंग फाइल्स' नामक कार्यक्रम में तारीक अली और फरोख धोंडी ने विश्व हिन्दू परिषद् को फासिस्ट कहा था। तारीक अली एक पाकिस्तानी है, जिसे स्वयं पाकिस्तान में प्रवेश नहीं मिला था। फरोख धोंडी एक हिन्दू-विरोधी और भारत-विरोधी इंग्लेंड स्थित पारसी हैं। हिन्दू 'बैकलैश' कहां से आता है? वह ऐसे कार्यक्रमों में से और उनसे उभरती अन्याय की भावना में से आता है।

क्लोज अप—

"मैं हिन्दू हूं, क्योंकि मेरे सभी पूर्वज हिन्दू थे। उन्होंने जो संस्कृति और सिद्धांत मुझे दिए हैं, उनका मैं सम्मान करता हूं।"—मुहम्मद करीम चागला। □

सुख का रास्ता सत्य का रास्ता है। सत्य का रास्ता प्रभु से मिलने का रास्ता है। प्रभु से मिलना ही सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्ति का एकमात्र उपाय है। —महात्मा वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादक के नाम पत्र

पंडिता राकेशरानी जी के विरुद्ध मुकद्दमे वापस लिये जायें

महोदय,

आपकी पत्रिका जनज्ञान में जैसी सामग्री मिलती है, वैसी अन्य पत्र-पत्रिकाओं में कम ही मिलती है। आपकी पत्रिका हिंदू समाज और राष्ट्र का सही प्रतिनिधित्व करती है। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों के शिविर आयोजित किये जाने का समाचार हमें सबसे पहले जनज्ञान से ही मिला था। जनज्ञान ने लगभग चार वर्ष पूर्व ही यह मांग उठाई थी कि पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू करके उसे सेना के हवाले किया जाये।

धार्मिक हिंदू नेता पंडिता राकेशरानी राष्ट्र के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं और जन जागरण के कार्य में लगी हुई हैं। वे सरकार को देशद्रोही व्यक्तियों और संगठनों की अन्तर्राष्ट्रीय कारंवाइयों से अवगत कराती रहती हैं। सरकार ने उन्हें पुरस्कृत करने की बजाय उनपर इकतालीस मुकद्दमे चला रखे हैं। ये मुकद्दमे तुरन्त बिना शर्त वापस लिये जायें।

—मनोहर सिंह ठाकुर, जसमत (प्राण्टा)

शान्ति और आनन्द के लिए

(1) जीवन में झूठ कभी न बोलो।

(2) कभी कोई ऐसा काम न करो, जिसे दूसरों से छिपाना पड़े। जो किसी से भी छिपाना पड़े वही पाप है, झूठ है।

(3) सत्य की महिमा समझो और सत्य को जीवन का आधार बनाओ।

(4) अपने जीवन के कार्यक्रमों को देखो और सोचो कि इसमें तुम कितना समय अपने लिए देते हो ?

(5) यह जानने का यत्न करो कि तुम कौन हो ?

(6) तुम कौन हो ? यह सोचो और यह भी सोचो कि तुम्हें यहां से जाना भी होगा।

(7) सोचो कि जब दुनिया से जाओगे तो क्या लेकर जाओगे ?

(8) अधिक नहीं तो 5-10 मिनट सुबह-शाम इन प्रश्नों पर विचार करो। तुम्हें स्वयं उत्तर मिलेगा।

(9) अपने को जानकर कभी कोई दुःखी नहीं रहता और अपने को भुला कर कभी किसी को सुख नहीं मिलता।

(10) संसार में धन-साधनों से किसी ने आनन्द पाया है क्या ?

—महात्मा वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असरदार सरदारों से

—निर्भय हाथरसी

मान-प्रतिष्ठा कभी नहीं बढ़ती मन के मक्कारों से।
गद्दी कभी नहीं चलती है गुण्डों से, गद्दारों से।
सही रागिनी नहीं निकलती, ढीले पड़े सितारों से।
सच्ची शान्ति न स्थापित होती है खूनी तलवारों से।
कहना है सर देने वाले असरदार सरदारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से।

गुरुद्वारों में गुरुवाणी को छोड़, कोई भी जाप न हो।
ऐसे कर्म करो जिससे पीछे कुछ पश्चात्ताप न हो।
जन-मन करे विलाप, कहीं कोई ऐसा आलाप न हो।
धार्मिक-श्रेष्ठ बनें पापी भी, पापी हों पर पाप न हो।
धर्मस्थल गुंजित हों सद्गुरुओं के शुद्ध विचारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से।

यह सच है कर्त्तव्य निभायें तो अधिकार जरूरी है।
पर अधिकारों से भी मन का सच्चा प्यार जरूरी है।
प्यार भरे अधिकार में भी सुविवेक-विचार जरूरी है।
सत्य-अहिंसा-प्रेम सभी का सुख-शृंगार जरूरी है।
जननी का शृंगार न करिये बारूदी अंगारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से।

हिन्दू-सिख भाई-भाई हैं, मिल-जुलकर ही रहना है।
दुख हों चाहे सुख हों, सब-कुछ मिल-जुलकर ही सहना है।
घर-बाहर के हर दुश्मन से घर भर की रक्षा करिये।
राष्ट्र-धर्महित तत्पर रहिए, बस इतना ही कहना है।
कच्छा-कंघा-केश-कृपाण-कड़े के पंच 'क'कारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाहर से चिनगारी आई, घर में शोले दहक रहे।
कोयल ने चुप्पी साधी, उपवन में कौवे चहक रहे।
समझदार भी मूर्ख हो गये, यह दुर्भाग्य हमारा है—
पाकिस्तानी बहकाते हैं, हिन्दुस्तानी बहक रहे।
कष्ट पराये देते पर मिलते हैं हमें हमारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से।

कब तक कोई बेचैनी से जीये, चैन नहीं पाये ?
अपनों की हत्या पर कोई कब तक आँसू बरसाये ?
लाचारी में कब तक कोई आंसू पीये, गम खाये।
दिल्ली हो या चण्डीगढ़ हो कोई तो यह बतलाये।
कब तक बहकेगा जन-गण-मन झूठे कौल-करारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से।

हमने सच्चे मन से जितना वादों पर विश्वास किया।
हिंसक-हत्यारों ने अपना उतना ही उपहास किया।
हमने शांति-व्यवस्था चाही तो अशांति के दूतों ने।
लाशों के ऊपर चढ़-चढ़कर उतना ही उल्लास किया।
संहारों की बदबू आती है अब तो उपहारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से।

सुख जितना खो चुका खो चुका, अब तो सोच-समझ करके।
दुख जितना रो चुका रो चुका, अब तो सोच-समझ करके।
राष्ट्र हेतु सर देने वाले भूले-भटके सरदारो।
जो कुछ भी हो चुका हो चुका, अब तो सोच-समझ करके।
जो बोले सो निहाल करो 'सत श्री अकाल' के नारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से।

शीश हथेली पर रखकर तो कभी कहीं जा सकते हो।
किन्तु शांति के साथ एक भी कौर नहीं खा सकते हो।
दुर्जन बन सज्जन-समाज को कभी नहीं भा सकते हो।
घर की शांति मिटाकर तुम भी शांति नहीं पा सकते हो।
इससे अधिक कहें भी क्या मानवता के हत्यारों से।
ज्ञान-धर्म की ज्योति जगाओ, गुरुओं के गुरुद्वारों से। ✶

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या ये सभी गप्पें हैं ?

—आदित्यपाल सिंह आर्य

स्वर्ण-यज्ञोपवीत

अथर्ववेद में एक मन्त्र आता है—

नवप्राणान्नवभिः सं मिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
हरिते त्रीणि रजते त्रीण्ययसि त्रीणि तपसाविष्ठितानि ॥

—अथर्व० (5/28/1)

(शत-शारदाय) सौ वर्ष वाले (दीर्घायुत्वाय) दीर्घ जीवन के लिए (नव प्राणान्) नव प्राणों को (नवभिः) नव इन्द्रियों से (सं मिमीते) मिलाकर रखता है, जिनमें से (त्रीणि) तीन इन्द्रियां (तपसा) अपने तपः सामर्थ्य, वीर्य से (हरिते) हरित—सात्विक भाव में (आविष्ठितानि) नाना प्रकार से स्थित हैं और (त्रीणि रजते) तीन इन्द्रियां रजत—राजस भाव से विराजती हैं और (त्रीणि अयसि) तीन अयस्—तामस भाव में रहती हैं। शरीर के तीन भाग हैं। एक ग्रीवा तथा मुख से ऊपर का भाग। उसमें कान, आंख, नाक ये तीन प्राण विराजमान हैं। इससे आगे नाभि तक के भाग में तीन प्राण हैं, अन्न-ग्राहक मुख, रस-वाहक जीभ और हाथ। नाभि से चरणों तक या गुदा तक तीन प्राण हैं—लिंग, गुदा, चरण। इस प्रकार नव प्राण शरीर के तीन भागों में बंटे हैं। इन तीन भागों के नाम हरित—स्वर्ण, रजत—चांदी और अयस्—लोह हैं। ये ही सात्विक, राजस और तामस तीन विभाग हैं।

इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर अपनी पुस्तक 'दीर्घायु कैसे प्राप्त हो ?' के पृष्ठ 84 (प्रथम संस्करण, सं. 2019) पर लिखते हैं—

(शतशारदाय दीर्घायुत्वाय) सौ वर्ष वाले दीर्घ जीवन के लिए (नव प्राणान् नवभिः सं मिमीते) नौ प्राणों को नौ इन्द्रियों के साथ समानता से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिलाता है। (हरिते त्रीणि, रजते त्रीणि, अयसि त्रीणि) सोने के तीन, चांदी के तीन, लोहे के तीन (तपसा आविष्ठितानि) तप से विशेष प्रकार से स्थित हैं।

स्वर्ण के तीन, चांदी के तीन और लोहे के तीन ऐसे नौ मणि करके धारण करने से सौ वर्ष की दीर्घ आयु प्राप्त होती है।

इसी पुस्तक की भूमिका के पृष्ठ 12 पर वे इसी मन्त्र के संदर्भ में लिखते हैं कि "प्राचीन काल में धातुओं के तारों से बने हुए यज्ञोपवीत को भी पहनने की परिपाटी थी। सोने के तीन, चांदी के तीन और लोहे के तीन तारों से युक्त यज्ञोपवीत सौ वर्ष की दीर्घायु के लिए होता है।"

इस प्रकार सोने का यज्ञोपवीत धारण करना वेद सम्मत है और प्राचीन काल में सम्पन्न लोग ऐसे यज्ञोपवीत धारण करते थे।

मुझे मेरे बंगलूर निवासी साथी पं. उपेन्द्रराव (भोपाल) ने बताया है कि—

1. मैसूर के स्वर्गीय महाराजा कृष्णराज वाडेयर चांदी का यज्ञोपवीत पहनते थे।

2. दक्षिण भारत के धन-सम्पन्न श्रेष्ठी सोने का यज्ञोपवीत पहनते थे।

3. दक्षिण में गणेश चतुर्थी के दिन गणेश की मूर्ति को चांदी का यज्ञोपवीत पहनाया जाता है।

4. तिरुपति में बाला जी को सोने का यज्ञोपवीत अलंकार बदलने के समय पहनाया जाता है।

मुझे स्वर्गीय स्वामी काव्यानन्द जी ने बताया था कि पं. गोविन्द वल्लभ पन्त के पुत्र पं. कृष्णचन्द्र पन्त को सोने का यज्ञोपवीत पहनाया गया था।

ऋषि दयानन्द ने अपने पिता के सम्बन्ध में अपनी स्वलिखित आत्मकथा में लिखा है कि "वहां (ओखीमठ) के महन्त ने कहा कि तुम हमारे चेले हो जाओ, यहां रहो, लाखों के कारखाने तुम्हारे हाथ हो जायेंगे। मेरे पीछे तुम्हारी महन्त होगे।' मैंने उनको उत्तर दिया कि सुनो, ऐसी मेरी इच्छा होती तो अपने माता-पिता, बन्धु, कुटुम्ब और घर आदि ही को क्यों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छोड़ता। क्या तुम्हारा स्थान और तुम उनसे भी अधिक हो सकते हो ?" स्वामी जी के इस कथन से सिद्ध है कि उनके माता-पिता उस समय लखपति से कम नहीं थे। और जिस समय की यह बात है, उस समय एक रुपये में गेहूं 1 मन, चना डेढ़ मन, चावल 35 सेर, दूध एक मन, घी 5 सेर, तेल दस सेर, कपड़ा (गजी) 32 गज मिलता था और राज की मजदूरी एक आना प्रतिदिन थी*। इन भावों की आज के भावों से तुलना करने पर स्वामी जी के माता-पिता करोड़पति से कम नहीं ठहरते।

ऐसे धनाढ्य माता-पिता ने यदि अपनी प्रिय सन्तान को सोने का यज्ञोपवीत पहनाया तो इसमें गप्प की क्या बात हो गई ?

स्वामी जी का सोने का यज्ञोपवीत धारण करना उस 'अज्ञात जीवनी' में लिखा है, जिसे डा. भवानीलाल भारतीय प्रारम्भ से ही गप्पों का पिटारा कहते चले आए हैं, जबकि उन्होंने अपने पक्ष की सिद्धि में कोई प्रमाण नहीं दिया। उनकी दृष्टि में जो उन्होंने नहीं लिखा, वह सब गप्प ही है। तभी तो वे एक दूसरे आर्य विद्वान् द्वारा वर्षों की खोज के पश्चात् प्रस्तुत की गई सामग्री को सर्वथा मनगढ़न्त ही कहते चले आ रहे हैं। यद्यपि उनके ऐसे कथनों का एकाधिक बार उत्तर दिया जा चुका है। तथापि उनकी यह रट 'मेरी मुर्गी की एक ही टांग' वाली कहावत को चरितार्थ करती है।

ऋषि दयानन्द का देश-देशान्तर भ्रमण

स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण की हस्तलिखित प्रति में अपने विषय में एक विज्ञापन के माध्यम से जानकारी देते हुए लिखा था कि 'ऐसे ही देश-देशान्तर में भ्रमण किया*। जहां-जहां जो-जो पुस्तकें मिलीं, उनका विचार किया।' यदि स्वामी जी ने तिब्बत-सहित हिमालय पर्वत एवं सम्पूर्ण देश (आर्यावर्त, जिसकी सीमाएं सत्यार्थ प्रकाश के 8वें समुल्लास में वर्णित हैं) एवं देशान्तर (तिब्बत, श्रीलंका, नेपाल) का भ्रमण उन वर्षों में किया हो, जिनके विषय में देवेन्द्रबाबू ने लिखा है कि "वस्तुतः

* द्रष्टव्य, फर्रुखाबाद का इलिहास, पृष्ठ 31

** ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन(प्रथम भाग, सं. 2037 वि०, पृष्ठ 36)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस पहाड़ी ग्राम के वृक्ष के नीचे रात्रि भर विश्राम करके जब अगले दिन वह सन्ध्योपासना के पीछे आगे जाने को उद्यत हुए उसके पीछे का जीवन न केवल हमारे लिए ही अन्धकार में छिपा हुआ है बल्कि वह संसार के लिए भी अज्ञात है।" अन्यत्र उन्होंने एक प्रसंग में दयानन्द के मुख से कहलाया कि "मैं एक बार गंगोत्री से चलकर गंगासागर तक और एक बार गंगोत्री से रामेश्वरम् तक गया था।" अज्ञात जीवनी में वर्णित यात्राओं से स्वामी जी के इन कथनों की पुष्टि होती है। तब स्वामी जी द्वारा की गई उन स्थानों की यात्राएं गप्पें कैसे हो गईं जिनका डा. भवानीलाल भारतीय पता नहीं लगा सके जबकि एक दूसरे ऋषि भक्त आर्य विद्वान् स्वर्गीय पं. दीनबन्धु जी वेदशास्त्री ने अपनी 45 वर्ष की खोज के पश्चात् संसार के सामने उन्हें उजागर कर दिया है। यदि पं. दीनबन्धु जी द्वारा प्रस्तुत सभी विवरण गप्प मात्र हैं तो पहले डा. भारतीय को देवेन्द्र बाबू को महागप्पी ठहराना चाहिए।

स्वामी ओमानन्द की आयु

स्वामी पूर्णानन्द के गुरु स्वामी ओमानन्द की आयु 1857 में मैंने 160 वर्ष के लगभग लिखी, जिसे डा. भारतीय ने गप्प ठहराया। यदि यह गप्प है तो डा. भारतीय को उनकी उस समय की सही आयु बतानी चाहिए और यदि उसे उन्होंने इस आधार पर कि इतनी आयु वर्त्तमान में किसी मनुष्य की नहीं हो सकती, इसे गप्प ठहराया हो तो अपने लेख में मैंने यह भी लिखा था कि "2 दिसम्बर 1985 के अखबारों में छपा है कि 'पाकिस्तान के सर्वाधिक बूढ़े 169-वर्षीय व्यक्ति पीर सैयद अब्दुल जिलानी का शनिवार को इस्लामाबाद में निधन हो गया। उनका जन्म 1816 ई. में बगदाद में हुआ था।" इस समाचार का भी खण्डन करना चाहिए था। और महर्षि दयानन्द को महागप्पी ठहराना था जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में 400 वर्ष तक आयु को बढ़ाने की प्रेरणा दी है। फिर हम यह नहीं समझ पा रहे हैं कि स्वामी ओमानन्द की आयु का स्वामी दयानन्द के जीवन चरित से क्या सम्बन्ध है जो डा. भारतीय ने इसका उल्लेख अपने लेख में करना उपयुक्त समझा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काशी में स्वामी जी द्वारा शिक्षा प्राप्ति

स्वामी जी ने बड़ौदे से बनारस जाकर जिन गुरुओं से शिक्षा पाई उनमें से एक पं. रामनिरंजन शास्त्री से विद्या ग्रहण करने की बात स्वयं भारतीय जी ने वेदवाणी (दयानन्द विशेषांक-2, पृष्ठ 47) में इस प्रकार स्वीकार की है कि "पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के अनुसार स्वामी दयानन्द ने अपने अध्ययनकाल के प्रारम्भिक दिनों में पं. रामनिरंजन शास्त्री से कुछ समय तक अध्ययन किया था। इन्होंने कालान्तर में संन्यास ले लिया और चतुर्थाश्रमी होने पर अपना नाम स्वामी महादेवाश्रम रखा किंतु लोग इन्हें रामनिरंजन स्वामी के नाम से ही पुकारते और जानते थे। इनका जन्म 1842 वि. (1785 ई.) में बिहार प्रांत के हथुआ राज्य के निकटवर्ती किसी ग्राम में पं. रामधन मिश्र के यहां हुआ था। वर्षों पर्यन्त ये हथुआ नरेश छत्रधारी शाह के राजपंडित के रूप में रहे। कालान्तर में ये काशी आ गए और दीर्घ काल तक यहां निवास किया। मार्गशीर्ष अमावस्या 1927 वि. (1870 ई.) को इनका 85 वर्ष की आयु में निधन हुआ।"

अन्य प्रसंग

डा. भारतीय द्वारा इंगित अन्य मतावलम्बियों द्वारा प्रचारित कुछ बातें तो निःसन्देह गप्पें ही हैं। ऐसी ही एक गप्प कि "स्वामी दयानन्द अपने प्रश्नों के उत्तर पाकर सन्तुष्ट हुए और मत में (राधास्वामी मत में) सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की।" का खण्डन हम आर्य सेवक, नागपुर (जुलाई 1963, पृष्ठ 5,12 पर) के माध्यम से 23 वर्ष पूर्व ही कर चुके हैं। परन्तु अन्य मतावलंबियों द्वारा द्वेष भावना से प्रचारित ऐसी गप्पों को डा. भारतीय द्वारा आर्य नेताओं और भद्र पुरुषों के मत्थे मढ़ना शोभनीय नहीं है।

सम्पादक के नाम पत्र

आप हिन्दुओं की माता हैं

आदरणी माताजी, चरणस्पर्श।

मैं आपको हिन्दुओं की माता समझता हूं। जैसे माता अपने पुत्रों के जीवन का निर्माण करती हैं, वैसे ही आप हिन्दुओं के जीवन का निर्माण कर रही हैं। आप भारत को सच्चे अर्थों में आर्यावर्त्त बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। 41 मुकदमे तो क्या, सौ मुदकमे भी आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। सारा हिन्दू समाज आपके साथ है।

—डालूराम तुलसीरामजी आर्य
नान्द्रा (खरगोन)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महन्त दिग्विजयनाथ

—गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ, पूर्व सांसद

वरेण्य गुरुदेव (महन्त दिग्विजयनाथ जी) महाराज को ब्रह्मलीन हुए यद्यपि पन्द्रह वर्ष पूरे हो चुके हैं तथापि ऐसा प्रतीत होता है, मानो अभी कल की ही बात है। उनकी संकल्पशक्ति, दूरर्दाशता एवं धर्म के लिए अविचल निष्ठा आसेतु हिमाचल सम्पूर्ण हिन्दू समाज के लिए आज भी प्रेरणा का प्राणमय स्रोत बनी हुई है। पूज्य गुरुदेव की यह विशेषता रही है कि देशभक्ति से ओत-प्रोत एकनिष्ठ हिन्दू धर्म के धर्माचार्य होते हुए भी वे परधर्म विरोधी नहीं थे। प्रत्येक धर्म का अत्यन्त उदार दृष्टि से समादर करते हुए भी उन्हें हिन्दू धर्म पर पूर्ण अभिमान था। वे सनातन धर्म के अत्यन्त दृढ़ स्तम्भ और महान् योगी थे। उनका योगैश्वर्य अत्यन्त अपार और असीम था। महाराज का धर्म सम्बन्धी दृष्टिकोण निष्पक्ष, विशाल और उदार तथा सर्वहितकर था।

"स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:"—गीता का यह आदर्श उन्हें पूर्णत: मान्य था। हिन्दू समाज में व्याप्त ऊंच-नीच, छुआछूत, जाति-पांति एवं धनी-निर्धन का भेदभाव उन्हें किंचित् भी मान्य नहीं था। महाराज जी ने अस्पृश्यता-निवारण के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए हरिजनों के प्रति जो सम्मान का भाव प्रकट किया था, वह उनके व्यक्तित्व की असाधारण महनीयता है। उनका कथन है कि "हरिजन भी हिन्दू समाज के उसी भांति अभिन्न अंग हैं जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण तथा जैन, बौद्ध, सिक्ख आदि विभिन्न पंथों के लोग हैं। उनके प्रति समाज में उत्पन्न भेदभाव की भावना, चाहे वह धार्मिक हो या सामाजिक, राजनैतिक हो अथवा आर्थिक, समाप्त कर दी जानी चाहिए। हमारा दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य का सामाजिक स्तर उसके जन्म के आधार पर नहीं, अपितु जीवन में उसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
द्वारा किए गए कार्यों द्वारा आंका जाना चाहिए। खेद है कि कुछ समय पूर्व से अस्पृश्यता का यह अभिशाप हमारे समाज में बहुत व्याप्त हो गया है। शास्त्रों में इसके लिए कोई स्थान नहीं है। भूतकाल में इसके कारण काफी क्षति उठानी पड़ी है। यह हिन्दू समाज के लिए पूर्ण आत्महत्या सदृश ही है। समाज के इस कृत्रिम विभाजन से हिन्दुओं का वास्तविक जीवन दर्शन काफी पीछे पड़ गया है।''

गुरुदेव की दीक्षा यद्यपि नाथ सम्प्रदाय में हुई थी, तथापि वे उसे हिन्दू धर्म के अन्तर्गत प्रचलित उपासना-पद्धतियों में से एक पद्धति मानते थे। हिंदू धर्म और हिन्दू समाज के अन्तर्गत प्रचलित विभिन्न उपासना पद्धतियों के लिए उनके हृदय में समान आदर था। उन्हें संकीर्ण साम्प्रदायिकता किंचित् भी प्रभावित नहीं कर सकी थी। उनका कथन है कि हिन्दू नाम न तो साम्प्रदायिक है, न राष्ट्र विरोधी ही है। वह युगों से इस देश की राष्ट्रीयता का बोधक बना हुआ है। हिन्दू शब्द का प्रयोग करने का हमारा मुख्य उद्देश्य यह है कि हिन्दुत्व की थाती राष्ट्रीय एकता की सर्वाधिक सुगठित शक्ति रही है, जिसने विभिन्न जातियों, विरोधी जलवायु, अनेक भाषाओं और धार्मिक विश्वासों की विभिन्नताओं के बीच इस देश को एक राष्ट्र बनाया है। उनका कथन है—

"बहुत-से विचारक हिन्दू शब्द के अर्थ से घबरा जाते हैं। वे यह समझने में असफल रहे हैं कि हिंदू उस ऐतिहासिक प्रक्रिया की संज्ञा है, जिसने सभी धर्मों, संस्कृतियों और सामाजिक प्रभावों को एक राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठापित किया है। जो हिन्दुत्व को विभेदक और पक्षपातपूर्ण बता कर उसकी निंदा करते हैं, वे इस ऐतिहासिक प्रक्रिया गरिमा को नहीं समझ सके हैं। जो लोग भारत में राष्ट्रीय एकता को प्रतिष्ठापित करना चाहते हैं, उन्हें इस एकीकरण की शक्ति हिंदुत्व का अधिकाधिक उपयोग करना है, जो विभिन्न भाषा-भाषियों, विभिन्न जलवायु में निवास करने वालों और विभिन्न रीति-रिवाजों तथा विश्वासों के लोगों को राष्ट्र के रूप में ढाल सकें। हिन्दुत्व के प्रति इस विशाल भावना को दृष्टि में रखकर सनातन धर्मी, आर्यसमाजी, सिक्ख, जैन, बौद्ध—सभी पन्थों और मतों के लोग उन्हें अपार श्रद्धा की दृष्टि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से देखते थे। उनका यह अटल विश्वास था कि वे उनके ही मत अथवा पंथ में निष्ठावान हैं। वास्तव में हमारे गुरुदेव ब्रह्मलीन महन्त जी महाराज का दृष्टिकोण व्यापक, उदार, सहिष्णु एवं लोकप्रिय तथा जन-जन के लिए कल्याणकारी था। सचमुच वे प्रियदर्शी महात्मा थे।

श्रीगोरक्षपीठ जैसे मान्य सिद्ध स्थान के महन्त और संन्यासी होते हुए भी वे संघर्षात्मक राजनीति में भाग लेते थे। इसमें होने वाले निन्दा, द्वेष तथा विरोधात्मक प्रवृत्तियों से वे कभी भी प्रभावित नहीं हुए। उनका सुदृढ़ विश्वास था कि धर्म और राजनीति परस्पर विरोधी नहीं अपितु एक-दूसरे के पूरक और पोषक हैं। धर्म के बिना राजनीति को अन्धी तथा राजनीति के बिना धर्म को वे पंगु समझते थे। इस हेतु पूरे धर्म शास्त्र के निर्देश को वे साक्षीरूप में देखते थे। श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का वे पद-पद पर उल्लेख करते हुए कहा करते थे कि जब संन्यासी भी अपने जीवन में कर्म के बिना नहीं रह सकता, कर्म करने के लिए विवश हो जाता है तो उसे व्यापक करने के लिए विवेकपूर्वक निष्ठा और दृढ़ता के साथ अग्रसर होना चाहिए। सच तो यह है कि जिस अनासक्त, निष्काम, कर्मयोग का सन्देश गीता में दिया गया था, वह एक संन्यासी के लिए ही सम्भव है।

हमारे श्रद्धेय गुरुदेव के महिमामण्डित व्यक्तित्व के प्रति देश के सभी प्रमुख नेता आकर्षित रहते थे और उन्हें आदर तथा श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। स्वर्गीय देशरत्न डा. राजेन्द्रप्रसाद, डा. सम्पूर्णानन्द जैसी विभूतियों ने उनसे कहा कि महाराज जी! आप एक सर्वमान्य नेता हैं और पूज्य स्थान सिद्ध पीठ के अधिकारी हैं, आचार्य हैं। आपके लिए हम सभी का समान आदर भाव है। अतः आपको ईर्ष्या-द्वेष एवं कलह की राजनीति में नहीं पड़ना चाहिए। इस पर हंस कर महाराज ने नम्र भाव से कहा था—

"उद्धरेदात्मनात्मानम्" (गीता ६।५)

अपने आप अपना उद्धार करना चाहिए। गीता के इस श्लोक पर ध्यान देने की आवश्यकता है। धर्म का उद्धार और उसकी रक्षा धर्म को स्वयं करनी चाहिए। धर्मनिरपेक्ष और धर्मविरोधी राजनीति यह कार्य नहीं कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकती। यह तभी हो सकता है जब हम सक्रिय राजनीति में प्रवेश करें। हम धर्म के उद्धारार्थ धर्म के प्रतिनिधि बनकर इस क्षेत्र में आये हैं।

हमारे श्रद्धास्पद गुरुदेव सच्चे कर्मयोगी थे। वे अन्तिम क्षण तक कार्यरत रहे। ब्रह्मलीन होने के पांच वर्ष पूर्व उन्हें प्रथम बार हृदयाघात हुआ था। डाक्टरों ने उनकी समुचित चिकित्सा करके यह परामर्श दिया था वे अधिक परिश्रम न किया करें। इस परामर्श की सर्वथा उपेक्षा करते हुए वे अन्त समय तक घोर परिश्रम करते रहे। उनका कहना था कि मैं उस धर्म में विश्वास करता हूं, जिसके अन्तर्गत व्यक्ति प्रारब्ध लेकर आता है और उससे न तो वह किसी भी दशा में एक दिन पहले जाता है, और न एक दिन बाद तक रहता है। वे यह भी कहा करते थे कि हो सकता है कि मै निष्क्रिय रहने से दो-चार वर्ष और जीवित रह जाऊं, पर मुझे निष्क्रिय शरीर रखना पसंद नहीं है। वे सदा एकरस थे तथा कर्मयोगी की भांति कर्म की ही पूजा करते थे। एक संन्यासी होते हुए भी वे कर्म को बहुत अधिक महत्व देते थे। वे प्रायः कहा करते थे कि ज्ञान और ध्यान से केवल व्यक्ति को आत्मिक शक्ति मिल सकती है, इससे हम भगवान् को प्रसन्न कर सकते हैं, किन्तु असंख्य मानवों की, जो भगवान् के रूप हैं, सेवा करना अधिक व्यापक अर्थों में संन्यासी का कर्म है। अपने इस आदर्श पर वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक चलते रहे।

अपने संन्यस्त जीवन में उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक सभी क्षेत्रों में व्यापक कार्य किया। महाराज ने शिक्षा के सम्बन्ध में कहा था कि शिक्षा राष्ट्रीय विकास, सांस्कृतिक और सामाजिक तथा आर्थिक विकास का एक प्रबल साधन है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जो भारतवासियों के देश की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास करे। धार्मिक जगत् में उनके स्वप्नों को साकार करता हुआ भव्य एवं विशाल गोरखनाथ मन्दिर विद्यमान है। इसी तरह अखिल भारतवर्षीय योगी महासभा के मंच से उन्होंने देश के योगी समाज में नयी चेतना उत्पन्न की। षड्दर्शन साधु सम्मेलन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन के मंच से भी उन्होंने हिंदू समाज की जो सेवा की है, वह चिरस्मरणीय है। महाराज ने संस्कृत भाषा के गौरवमय उत्थान तथा राष्ट्र की महनीय सम्पत्ति गौ की रक्षा पर भी विशेष बल दिया। महाराज ने साधिकार कहा था कि इतिहास की ज्ञानराशियां जहां तक अतीत को प्रकाशित कर सकी हैं, उनके साक्ष्य पर निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि गाय हमारे राष्ट्रीय चिंतन का प्रतीक है और हमारी राष्ट्रीय विचारधारा की मूल प्रेरणा रही है। हमारा सांस्कृतिक इतिहास गाय के चारों ओर केन्द्रित है। गाय हमारी राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है तथा आन्तरिक विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों और बाहरी धमकियों के विरुद्ध अभेद्य कवच है।

बहुसंख्यक लोगों ने महाराज को राजनीतिज्ञ के ही रूप में देखा है। उनके राजनैतिक विरोधी कहा करते थे कि संन्यासी को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए। उनके विचार इस विषय में बिल्कुल स्पष्ट थे। वे कहा करते थे कि हिंदू धर्म का राजनीति से कभी कोई विरोध नहीं रहा है। वस्तुतः वे हिंदू धर्म और हिंदू समाज की रक्षा के लिए ही राजनीति के क्षेत्र में कार्य करते थे, उनका राजनीति में प्रवेश समाज के कल्याण के लिए ही था। वे कहा करते थे कि यदि हिंदू ही नहीं रहेगा तो न धर्म बचेगा, न साधु ही रह सकेंगे। हिन्दू जीवन पद्धति को व्यवस्थित करने और उनकी मान्यताओं की रक्षा के लिए वे हिन्दू संगठन पर विशेष जोर दिया करते थे। संसद में हिन्दुओं के एकमात्र प्रतिनिधि होने पर भी वे एकाकीपन से कभी विचलित नहीं हुए। जब कभी आवश्यकता हुई, उन्होंने भारत के कोटि-कोटि हिन्दुओं की भावनाओं को निर्भीकता से स्वर प्रदान किया। जब वे बोलते थे तो ऐसा प्रतीत होता था मानो करोड़ों हिन्दू बोल रहे हैं। महाराज ने कहा था—"हिन्दुत्व एक सागर है, जिसमें भिन्न-भिन्न सम्प्रदायरूपी नदियां आकर विलीन हो जाती हैं और विलीन होने पर सागरमय हो जाती हैं। वे विभिन्न तरंगों के रूप में लहराती हुई एकमात्र समुद्र की ही शोभा बढ़ाती हैं और उनकी महत्ता की घोषणा करती हैं। ये सब मिलकर सागर का ही प्रतिनिधित्व करती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे पूज्य महाराज जी अखिल भारतीय हिंदू महासभा को एक राष्ट्रीय मंच समझते थे। वे हिन्दू ध्वज-स्तम्भ की भांति खड़े होकर समस्त भारत के हिन्दुओं का "उठो, जागो और अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करो"— सम्बोधन से आह्वान करते थे। आध्यात्मिक तत्वज्ञान-चिन्तन की अपेक्षा व्यवहारिक तत्वज्ञान पर उन्होंने अधिक जोर दिया। उनका विश्वास था कि हिन्दू जगत् में व्यावहारिक एकता के अभाव के कारण ही देश में दुःख एवं दैन्य व्याप्त हो रहा है। इसे दूर करने का एक मात्र उपाय संगठन ही है।

पूज्य महन्त दिग्विजय नाथ जी महाराज का नाम तो आज केवल इतिहास-शेष है, पर उनके आदर्श, उनकी सेवायें, उनके कार्य, उनकी अक्षय कीर्ति, उनकी प्रभावोत्पादक महिमामण्डित दृढ़ राष्ट्रनिष्ठा और सेवावृत्ति के भाव से पूर्ण व्यक्तित्व हमारे सामने प्रत्यक्ष है। भौतिक तत्वों से रचित शरीर के न रहने पर उनकी यशःकाया सदा अमर रहेगी। वे एक अमर योगी थे, जिन्होंने महायोगी गुरु गोरखनाथ की पावन परम्परा को अपने कर्म-कौशल से समुज्ज्वल बनाकर समस्त जगत् को योग तत्व का मर्म समझाया। वे समत्व योगी थे और उनका जीवन "समत्वं योग उच्यते" गीता के श्लोक का अपूर्व भाष्य था। गोरखनाथ जी की तपःस्थली गोरखनाथ मन्दिर के परिसर में निर्मित उनका समाधि मन्दिर उनके यश का उज्ज्वलतम मौन प्रतीक है और उसी परिसर में निर्मित श्री महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति भवन उनकी विशालहृदयता, अप्रतिम शौर्य, तपोमयी गरिमा का शाश्वत परिचायक है। उनके पवित्र आदर्शों पर चलने से इस देश, हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म और समग्र भारतीय संस्कृति का कल्याण प्रशस्त होगा। ★

हम भारत मां के 60 करोड़ बेटे एक स्वर में, एक राह पर चलने के लिए शुद्धि यज्ञ में उन सब विचारों की आहुति दे दें, जो हममें अलगाव उत्पन्न करते हैं। महानाश की लपटें देश को भस्म कर दें, इससे पूर्व ही धर्म के पहरेदारों को शुद्धि का चक्र फिर से चलाने का संकल्प लेना होगा। भारत मां के लौह लाड़लों को एक बार फिर मां की रक्षा के लिए शुद्धि चक्र चलाना होगा। भले ही हमें सैकड़ों श्रद्धानन्द शहीद करने पड़ें पर मां की रक्षा के लिए हम आगे बढ़ें, यही समय की मांग है। —महात्मा वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साम्प्रदायिकता की जड़ें कहां हैं ?

—धर्मपाल शर्मा

बाबरी मस्जिद के मुद्दे पर कुछ मुस्लिम संगठनों के साथ मिलकर शहाबुद्दीन ने गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार की धमकी दी और फिर व्यापक राष्ट्रीय जनमत के दबाव के आगे झुककर वापस ले ली। लेकिन इससे यह प्रश्न समाप्त नहीं हो जाता कि आखिर मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्य धारा से काटने के ऐसे प्रयास क्यों होते हैं ? मुसलमानों की साम्प्रदायिक भावनाओं को पृथकता के स्तर तक भड़काने में ये नेता सफल क्यों हो जाते हैं ? विगत मास कर्नाटक में एक कहानी को लेकर साम्प्रदायिक भावना भड़काई गई जिससे 18 लोग मारे गए। श्रीनगर में भी इसी मुद्दे पर हिंसा भड़काने की कोशिश की गई थी। आखिर ऐसा क्यों है कि रचनात्मकता और सृजन की मानसिकता की बजाय मुसलिम समाज विक्षुब्धता और अशांति के तट पर खड़ा पाया जाता है और कोई भी सिरफरा नेता उसे आन्दोलित कर अलगाववादी धारा में बहा ले जाने में सफल हो जाता है ?

क्या मुसलिम समाज के सामने पर्सनल लॉ की रक्षा और मुसलिम महिलाओं के अधिकारों के अतिक्रमण से बड़े मुद्दे नहीं रह गये हैं ? इसके विपरीत तथ्य तो यही बताते हैं कि मुसलिम समाज में पिछड़ेपन, गरीबी और बेरोजगारी का प्रतिशत अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा कहीं अधिक है। फिर मुस्लिम नेतृत्व मुसलमानों को विकास के धरातल पर खड़ा करने के मुद्दों की ओर ध्यान क्यों नहीं देता ?

दरअसल मुस्लिम समाज को राष्ट्र की मुख्य धारा से पृथक् रखने का एक ही कारण है और वह है मुस्लिम नेतृत्व की सुविधाभोगी राजनीति। मुस्लिम समाज को सामाजिक पिछड़ेपन, अशिक्षा, रूढ़िवाद और धार्मिक जनून के घेरे में बन्द रखकर, और इस यथास्थिति की सुरक्षा का नारा लगाने से इस स्वार्थी नेतृत्व को अपना नेतृत्व बरकरार रखने में अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ती और पिछड़ेपन तथा रूढ़ियों के घेरे में बन्द समाज समस्याओं के अन्धेरे में ही इतना उलझा रहता है कि उसके ऊपर नेतृत्व का फन्दा कसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रखने में सेवा या बौद्धिक चातुर्य की जरूरत ही नहीं रहती। इसलिए तथाकथित मुस्लिम नेता मुस्लिम समाज को नकारात्मक और साम्प्रदायिक मुद्दों में उलझाये रखना ही अधिक सुविधानजक समझते हैं।

भारत के बहुसंख्यक समाज को विकास गति से पृथक् रखने के लिए अल्पसंख्यकों में अलग पहचान की दीवार बनाए रखना भी इन्हें जरूरी लगता है। अलग पहचान और विशिष्ट संस्कृति का नारा मुसलमानों के लिए कितना "उपयोगी" रहा है यह तो इस आधार पर बने पाकिस्तान की नियति से ही स्पष्ट है। हाल में ही कराची में हुए साम्प्रदायिक दंगों में जो भयावह नरसंहार हुआ है उसने इस्लामी बंधुत्व की अवधारणा की धज्जियां उड़ाकर रख दी हैं। इस्लामी बन्धुत्व की भावना इराक-ईरान युद्ध को भी नहीं रोक पा रही है। स्पष्ट है कि अलग पहचान और विशिष्ट संस्कृति के नारों की आड़ में साम्प्रदायिक उन्माद को बरकरार रखने के पीछे मुसलिम समाज के व्यापक हित नहीं बल्कि सुविधाभोगी राजनीतिज्ञों के निहित स्वार्थ ही हैं।

उल्लेखनीय है कि विदेशी राष्ट्रों का हित इसी में है कि भारत के अल्पसंख्यक राष्ट्र की मुख्य धारा से पृथक् बने रहें। इसके कारण उन्हें अल्पसंख्यकों को दबाव की राजनीति के रूप में प्रयोग करने का सुअवसर प्राप्त रहता है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अलगाववादी अल्पसंख्यकों को इन राष्ट्रों का वरद हस्त भी प्राप्त रहता है।

दुर्भाग्य यह है कि सत्तापक्ष और विरोधपक्ष द्वारा भी कभी राष्ट्रवादी मुस्लिम नेतृत्व को प्रोत्साहन नहीं दिया गया। इसलिए सब दलों में मुस्लिम मतों के थोक दावेदार साम्प्रदायिक मुस्लिम नेता ही बने रहे।

बहुसंख्यक समाज की प्रतिक्रिया—उपर्युक्त कारणों से लगातार बढ़ती मुसलिम साम्प्रदायिकता और पंजाब में आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य में अकाली साम्प्रदायिकता के प्रतिफल जब बहुसंख्यक समाज को भुगतने पड़े तो उसमें प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक थी। बहुसंख्यक समाज पर होने वाले साम्प्रदायिक हमलों से उसकी रक्षा करना प्रशासन का दायित्व था। किन्तु प्रशासन इस मामले में पूरी तरह विफल रहा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मरक्षा की प्रवृत्ति प्राणिमात्र का प्रकृति प्रदत्त नियम है। फलस्वरूप जब प्रशासन साम्प्रदायिकता का उन्मूलन करने और बहुसंख्यक समाज को संरक्षण देने में विफल रहा तो हिन्दू समाज में आत्मरक्षा के भाव से संगठित होने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी और हिन्दुओं में आंदोलन और शक्ति प्रदर्शन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। देश के समाचारपत्रों, बुद्धिजीवियों और राजनीतिज्ञों ने इसे हिन्दू प्रतिक्रियावाद और हिन्दू साम्प्रदायिकता कहकर गाली देना शुरू कर दिया। बहुसंख्यक समाज की प्रतिक्रिया को घातक करार दिया गया।

निसन्देह बहुसंख्यक समाज में भी प्रतिक्रियास्वरूप यदि इस प्रकार की विध्वसंकारी साम्प्रदायिकता उभरने लगे तो वह देश के लिए सबसे अधिक घातक हो सकती है। किन्तु सवाल यह है कि विवश आत्मरक्षा में उभरे स्वरों को भी क्या साम्प्रदायिकता कहा जा सकता है? और यदि निश्चयात्मक रूप में यह साम्प्रदायिकता ही है तो इसके लिए जिम्मेदार कौन है? क्या बहुसंख्यक हिन्दू समाज को गाली देने से यह "सांप्रदायिकता" रुक जाएगी?

क्या हिन्दू साम्प्रदायिक है?—इस तथाकथित हिन्दू सांप्रदायिकता पर विचार करने से पहले हिन्दू इतिहास और परम्पराओं पर एक दृष्टि डाल लेना उचित होगा। हिन्दू इतिहास साक्षी है कि सहिष्णुता और समन्वय ही हिन्दुओं की परम्परा रही है। विदेशों में हिन्दू संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए गए शांतिदूत इसके उदाहरण हैं। इन्डोनेसिया, मलेशिया, थाईदेश और कम्बोडिया जैसे दूरस्थ देशों में आज भी इसके चिह्न देखे जा सकते हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्" इस संस्कृति का उद्घोष रहा है।

"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" को हिन्दू शासकों ने अपने आचरण में चरितार्थ कर दिखाया है। फारस (वर्तमान ईरान) से पलायन कर आने वाले पारसी रहे हों या रणजीतसिंह के दरबार में नौकरी करने वाले ईसाई और यवन—सबको इस देश में अपने गिरजे और मस्जिद आदि पूजास्थल बनाने की सुविधा दी गई।

हिन्दू समाज ने धर्म और उपासना को कभी संगठन और शक्ति का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आधार नहीं बनाया। धर्म और उपासना सदैव मानव की मुक्ति के माध्यम ही रहे। अतः हिन्दू धर्म कभी समाज को सांप्रदायिकता में आबद्ध करने का सूत्र बन ही नहीं सकता था। हिन्दू धर्मस्थल कभी हथियारों के भंडार नहीं बने। हिन्दू मन्दिरों और समागमों को कभी शक्ति प्रदर्शन का माध्यम नहीं बनाया गया। ये माध्यम रहे केवल व्यष्टि से समष्टि तक व्यक्ति की ऐकांतिक यात्रा के। इसलिए कुम्भ मेले में लाखों की संख्या में पुंजीभूत मानव समुदाय भी कभी सांप्रदायिकता या शक्ति प्रदर्शन का केन्द्र नहीं बना। इसके विपरीत अन्य पंथों ने अपने पूजास्थलों और समागमों को शक्ति प्रदर्शन का केन्द्र बनाया। पूजास्थलों को सांप्रदायिक एकजुटता, राजनैतिक दबावगुट और संघर्ष के लिए किलों के रूप में प्रयोग किए जाने की प्रवृत्ति ने साम्प्रदायिकता पर धार चढ़ाई। इस परिप्रेक्ष्य में हिन्दुओं के एक वर्ग में यहां तक प्रतिक्रिया उभरने लगी कि हिन्दू मंदिरों, और समागमों को भी इसी प्रकार शक्ति प्रदर्शन का केंद्र बनाया जाना चाहिए। व्यष्टि से समष्टि तक की यात्रा के माध्यम महान् हिंदू धर्म में निर्बलता के बीज खोजे जाने लगे। सोचा जाने लगा कि हिंदू समाज के ढांचे में अनादिकाल से ही शक्ति संचय की प्रवृत्ति का अभाव क्यों रहा? यहां यह विस्मरण कर दिया गया कि हिंदू पूजास्थलों को साम्प्रदायिक एकजुटता की बजाय व्यक्ति की चेतना के विकास और राष्ट्रीय एकजुटता का माध्यम बनाना हिंदू समाज और हिंदू धर्म की कमजोरी नहीं बल्कि विशिष्टता और महानता ही रही। हिंदू समाज की इस श्रेष्ठता ने ही हिंदू संस्कृति को मानवतावादी धरातल पर फलने-फूलने का अवसर प्रदान किया।

शक्ति प्रदर्शन के प्रेरक तत्व—ऐसा नहीं कि "शक्ति की विजय" के सिद्धांत वाले विश्व में हिंदू समाज के मनीषियों ने शक्ति पक्ष की उपेक्षा की हो। उन्होंने राष्ट्र और समाज के संरक्षण के लिए शक्ति की उपादेयता को समझा था। इसलिए चार वर्णों की रचना करते समय एक वर्ण—क्षत्रिय के जिम्मे केवल राष्ट्र रक्षा का कार्य ही निर्धारित किया गया। शासन का संचालन भी इसी क्षत्रिय वर्ग का दायित्व था। इस समाज-व्यवस्था में धर्म का कार्य केवल आत्मविकास और समाज नियमन ही था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसलिए धर्म अपनी विराट् भूमिका निभाने में समर्थ रहा। अतः हिंदू समाज में आत्म-संरक्षण के लिए धार्मिक आधार पर संगठित होने की प्रवृत्ति बढ़ी तो सम्भवतः इसीलिए कि क्षत्रिय पक्ष यानी शासन ने संरक्षण के अपने दायित्व से हाथ खींच लिया। निश्चय ही यह स्थिति हिन्दू समाज की विकास प्रक्रिया के लिए हितकर नहीं है। किन्तु विवशता में अपनाये गए इस आपद्धर्म की जिम्मेदारी क्या केवल हिंदू समाज पर है? क्या फैशन के वशीभूत होकर विगत इतिहास का अवलोकन किये बिना हिंदू समाज को गाली देने से हिन्दुओं में बढ़ती आक्रामकता रुक सकेगी?

वस्तुतः हिंदू समाज में बढ़ती इस प्रतिक्रिया के लिए शासन की संरक्षण वाली भूमिका में अकर्मण्यता तथा तुष्टीकरण के लिए अल्पसंख्यकों की साम्प्रदायिकता को हवा देने की प्रवृत्ति ही जिम्मेदार है।

सत्ताधारी दल अल्पसंख्यकों के थोक मतों के लालच में उनकी साम्प्रदायिकता को संरक्षण देता है तो शहाबुद्दीन जैसे मुसलिम नेता अपनी सुविधापरस्त राजनीति के कारण इसे बढ़ावा देते हैं।

सही दृष्टि, सही उपाय—किन्तु साम्प्रदायिकता का यह समीकरण सत्ताधारी दल, अन्य राजनैतिक दलों, अकाली और मुसलिम नेताओं तथा स्वयं अल्पसंख्यकों, किसी के भी हित में नहीं है। अल्पसंख्यकों की सांप्रदायिकता के दबाव से बहुसंख्यक हिन्दू समाज में और अधिक आक्रामकता ही बढ़ेगी। बहुसंख्यक हिन्दू समाज की सहज प्रतिक्रिया को आलोचना या गाली देकर नहीं रोका जा सकता। इसके लिए जरूरी है कि अल्पसंख्यक सांप्रदायिकता के सभी कारणों पर अंकुश लगाया जाए। यदि समय रहते इस अल्पसंख्यक सांप्रदायिकता पर अंकुश न लगाया गया तो सन्देह नहीं कि शान्त, सहिष्णु और समन्वय के पक्षधर हिन्दू समाज में भी साम्प्रदायिक एकजुटता की प्रवृत्ति बढ़ने लगे और यदि हिन्दू समाज को बलात् सांप्रदायिकता की ओर धकेल दिया गया तो निश्चय ही वह देश के अल्पसंख्यक वर्ग के लिए हितकर न होगा। इसलिए अल्पसंख्यकों के हितैषी विचारकों, बुद्धिजीवियों और राजनीतिज्ञों का कर्त्तव्य है कि सांप्रदायिकता के बारे में यथार्थ दृष्टिकोण से विचार करके ही इसके उन्मूलन के बारे में विचार व्यक्त करें। अन्यथा सांप्रदायिकता के उन्मूलन के लिए किये जाने वाला हर अंधा प्रयास देश को सांप्रदायिकता की और अधिक गहरी खाई की ओर धकेलने का ही कारण बनेगा। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यहाँ दो सौ प्रतिशत स्वराज्य है !

—डा० रतनलाल 'रतनेश'

अधिकांश लोग अर्थात् सौ प्रतिशत यह कहते देखे जाते हैं कि यहां कोई स्वराज्य नहीं ।···मैं उनकी बात से बिलकुल सहमतन हीं ।···स्वराज्य नहीं तो यहां पर कौन-सा राज्य है ?···मैं तो कहूंगा, यहां दो सौ प्रतिशत स्वराज्य है ।···यहां स्वराज्य मन के भीतर ही नहीं, बाहर भी बहने लगा है ।

मैं इस स्वराज्य को देखकर बहुत प्रसन्न होता हूं ।···मेरा मन हर्ष के मारे बल्लियों उछलता है—जब देखता हूं, इस स्वराज्य की आंखें अमिताभमय और मन जानीवाकर हो गया है ।··लोग इसीलिए इक्कीसवीं सदी को दो-तीन सप्ताह में ही लाने का ध्येय बनाकर चिल्ला रहे हैं और इक्कीसवीं सदी अपनी ओर खींच रहे हैं··बड़े प्रसन्न हो रहे हैं !

मैं तो यह देखता हूं कि बीसवीं सदी में अपूर्व अनैतिकता आई, जिससे उसके पांव भारी हो गए, कोई नहीं जान सका ।···हो सकता है कुंवारा बीसवीं सदी का प्रसव नैतिक रहा हो, जैसे कुंवारी मरियम के पेट से पैदा हुए ईसा मसीह नैतिकता के अवतार हो गए ।···लेकिन यहाँ तो लोग लड़के के लिए नहीं इक्कीसवीं सदी की लड़की के लिए बड़े लालायित हो रहे हैं ।···शायद अब लड़कों पर लोगों का विश्वास नहीं रहा···सौ प्रतिशत लड़के कपूत निकलते हैं । इसलिए उन्होंने इक्कीसवीं शताब्दी न कह कर इक्कीसवीं सदी अर्थात् लड़की को ही प्राथमिकता दी है ।

हमारे एक परिचित-सज्जन भी यही कहते हैं कि मेरे दो लड़के हैं । अगर वे कपूत निकल गए तो मैं बड़ा अभागा होऊंगा, क्योंकि मेरी कोई लड़की नहीं है । मेरी अन्तिम अवस्था पर कोई दो आंसू गिरानेवाला नहीं होगा । मुझे मेरे लड़की नहीं होने का अत्यन्त दुःख है ।

हमको हंसी आती है, अब लोगों का पूरा-पूरा ध्यान इक्कीसवीं सदी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर है···अम्बर पर है···खाओ-पीओ मौज उड़ाओ···स्वराज्य से मनमाना लाभ उठाओ···और लोग उठा भी रहे हैं मनमाना लाभ···चाहे नैतिक हो, चाहे अनैतिक···इसीलिए मैंने दो सौ प्रतिशत स्वराज्य बतलाया है।

यहां कोई यह नहीं कह सकता कि हमें स्वाधीनता नहीं है। दीन-हीन, पीन-मीन, अमीर-गरीब, शोक-अशोक, शराब-कबाब, शबाब-जनाब, दूर-दर्शन, पास-दर्शन, आत्म-दर्शन, प्रियदर्शन, फिल्म-इल्म, चिलम-विलम, टी. वी. वी सी, टेप-वेर, टोन-फोन, नर-नारी, ब्रह्मचारी-दुराचारी सबको ही समान स्वराज्य है···सब इस स्वराज्य में फल-फूल रहे हैं। इसीलिए भ्रष्टाचार भी दो सौ प्रतिशत स्वराज्य-सुख भोग रहा है। देखा जाए तो सबसे अधिक स्वराज्य विदेशियों और विदेशी वादों को मिला। अर्थात् अंग्रेजी और अंग्रेजियत को मिला। हम लोगों ने कबीरदास के सिद्धान्तों को पूरा-पूरा अपनाया है—'जो तोका कांटा बुवै ताहि बोइ तू फूल।'

अंग्रेजों ने हमें गुलाम बनाया था···हम उसकी अंग्रेजी और अंग्रेजियत को बिलकुल स्वाधीन बना रहे हैं···हमारे देश को उससे चाहे जितनी हानि हो, हम बरदाश्त करेंगे। हम अपना अलौकिक आदर्श नहीं छोड़ेंगे।

स्वराज्य का अर्थ लोगों ने अपना ही राज्य लगाया है, इसलिए सब अपना-अपना राज्य भोग रहे हैं।

अब कोई नेता सुराज्य में विश्वास नहीं रखता। सब स्वराज्य में ही अटूट विश्वास रखते हैं। इसलिए अधिकांश नेता चुनावों के समय अनेक ज्योतिषियों-ढोंगी संत-महंतों के आगे हाथ जोड़ते देखे जाते हैं और उन्हें भरपूर धनधाम से सम्मानित किया जाता है, ताकि इनकी कुर्सी पर आंच न आए। लेकिन मेरा दावा है सत्य और न्याय पर चलनेवाले की कुर्सी कोई छीन नहीं सकता।

यदि आज लालबहादुर शास्त्री होते तो वे किसी प्रकार नहीं हारते। उनका विश्वास सुराज्य में था। स्वराज्य के साथ-साथ सुराज्य को कभी त्यागा नहीं जा सकता। भारत के लिए वह दिन दुर्भाग्य का था जब लालबहादुर शास्त्री ताशकंद समझौते के लिए गए और वहीं काल के गाल में समा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गए। यह कुर्सी स्वराज्य भक्तों के हाथ आई। ये लोग देश को न जाने कौन-सी उन्नति के शिखर पर ले जा रहे हैं ? जहां भारतीयता नाम की कोई वस्तु ही नहीं है।

यहां सबके लिए दो सौ प्रतिशत स्वराज्य बांटा गया। चाहे वह हिन्दू-विन्दू हो, चाहे मुसलमान-वसलमान, ईसाई-विसाई हो, सिक्ख-विख हो, अकाली-दुकाली, चाहे साली-वाली अथवा जाली-जंजाली सबको समान स्वाधीनता है, चाहे ये देश खंडित करें, चाहे मंडित।

रोज ही भाषणों में यह बताया जाता है। सरकार कभी हिंसा को बरदाश्त नहीं करेगी। लेकिन अकालियों की हिंसा कई वर्षों से बरदाश्त की जा रही है। यही है केवल लोगों को भुलावा देनेवाला कथनी और करनी का अलौकिक विरोधी दो सौ प्रतिशत स्वराज्य।

यहां पर जो विषपायी हैं, एकता और अखंडता में विश्वास रखते हैं, सच्चे देशभक्त हैं, वे अपराधी समझे जाते हैं और जो विषवमन करनेवाले देश में फूट और आतंक का मसाला पैदा करते हैं, वे अपराधी की श्रेणी में नहीं आते। शायद उनका विश्वास है कि 'उलटा ही काम करते हैं दीवानगाने इश्क, आंखों को बन्द करते हैं, दीदार के लिए।' इसीलिए सब आंखें बन्द करके चल रहे हैं। खुदा से दीदार हो रहे हैं, तब वे कैसे नीचे गिरेंगे ? ऊपर ही चढ़ेंगे। तभी प्रगति के ऊंचे-ऊंचे गाने गा रहे हैं—'तुझे दिल में बन्द कर लूं, दरिया में फेंक दूं चाबी।' बड़ी तेजी के साथ इसी ओर प्रगति हो रही है। इसी का नाम है दो सौ प्रतिशत स्वराज्य।

लालबहादुर शास्त्री और वल्लभभाई पटेल ने ऐसे स्वराज्य की कल्पना नहीं की थी। वे जैसे को तैसा में विश्वास रखते थे। उन्होंने किसी की पग-चुम्बी नहीं की। उन्होंने झुकना नहीं सीखा था। कटना उनका आदर्श था। वे सच्चे देशभक्त थे। अब तो लोग जिस पत्तल में खाते हैं, उसी में छेद करते हैं। लेकिन अब तो पत्तलों का भी युग नहीं रहा। अब यह कहना चाहिए कि लोग जिसके स्टील के बरतन में खाते हैं उसको ही तोड़-फोड़कर उनके मुंह पर मारते हैं…और हम इतने सहनशील हो गए हैं कि हमने महात्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गांधी की सहनशीलता का सिद्धान्त अपनाया। यदि कोई एक गाल पर चांटा मारे तो फौरन दूसरा गाल आगे कर दो और कहो—लीजिए साहब, इस पर भी चांटे जमाइए। हम यह अलौकिक आदर्श कैसे छोड़ दें।

विज्ञापनों की भरपूर स्वाधीनता है। चाहे श्लील विज्ञापन हो, चाहे अश्लील। विज्ञापनों की आंधी बड़ी तेज चली है, जिससे तम्बाकू, शराव आदि के कैलेन्डरों पर महात्मा गांधी, राम-कृष्ण के चित्र छपते हैं। विज्ञापन धड़ल्ले से बड़ी शान से छापे जाते हैं—**लाइफ ब्वाय है जहां, तन्दुरुस्ती है वहाँ।** हमारी सरकार शायद बिना खाए, बिना दवा के जनता को पूर्ण स्वस्थ रखना चाहती है। फिल्मों में अश्लील प्रदर्शन का बोलबाला है। यह हमारी ऊंचे दर्जे की प्रगति है। लोग दिन-रात नशे में चूर, मनोरंजन से भरपूर होकर गाते हैं—'**आई एम ए डिस्को डांसर।**' देश निरन्तर अपनी भारतीयता को लेकर प्रगति कर रहा है। जो जीवन पहले भक्ति, आराधना, शुभ कर्मों में कटते थे, आज वे एक पल चाकुओं से कट जाते हैं। इसी का नाम सच्ची प्रगति है। सच्ची स्वाधीनता है। अपूर्व उन्नति है।

अभी थोड़े दिनों पहले ही टी. वी. पर विज्ञापनों के सम्बन्ध में बड़ी चर्चायें हुईं। लोगों ने प्रश्न किए—अश्लील विज्ञापनों पर रोक क्यों नहीं लगाइ जाती ? सरकार की ओर से बताया गया कि सरकार बराबर रोक लगाती है···फिर अश्लील प्रदर्शन क्यों होता है ? हां, सरकार का कहना ठीक ही है रोक तो लगाई जाती है, पर लगती नहीं, क्योंकि विज्ञापन-दाताओं और फिल्म उद्योगपतियों की अर्थ सरिता की बाढ़ इतनी तेज होती है कि उसमें रोक टूट जाती है। बड़े-बड़े पुल, बांध, भवन सब पहली बरसात में ही टूट जाते हैं। तब सरकार की रोक यदि टूट जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। ऐसे अश्लील विज्ञापन और प्रदर्शन जिन्हें देखकर शर्म से हमारा सिर नीचा हो जाता है। हमारे सिर का मूल्य ही क्या है? हमारा सिर चाहे कट कर गिर जाय तो भी किसी को चिन्ता नहीं होगी। सिर तो उन लोगों का मूल्यवान् है जो कुर्सियों पर चिपके हैं। महान् नेता, महान् पदाधिकारी अंग्रेज़ियत के रंग में रंगे हैं। उनका सिर अपनी संस्कृति की धूल उड़ाकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऊंचा हो जाता है। गौरवान्वित होता है। अश्लीलता के अभिनयों को पुरस्कृत करते हैं। ऐसी स्वाधीनता कहीं मिलेगी ? अश्लील प्रदर्शन को दंडित होने की बजाय पुरस्कार मिलता है। अलौकिक स्वाधीनता है।

अंग्रेज चले गए—अंग्रेजी छोड़ गए। रखैल विवाहिता से अधिक प्रिय होती है। इसी से जो वह मार्ग दर्शन करती है हम उसी पर चलते हैं, क्योंकि अंग्रेजियत का प्रभाव हमारे मन-मस्तिष्क पर छा गया है।

देखिए हमारी प्रगति—जहां लाखों भिखारी फुटपाथ या मन्दिर के द्वार पर बैठकर कटोरा फैलाकर भीख मांगते हैं, चालीस वर्षों में एक भी भिखारी ऐसा नहीं मिलेगा, जिसने भीख मांगना छोड़ दिया हो। भिक्षा-वृत्ति ज्यों की त्यों है, स्वाधीन भारत के लिए यह बड़े गौरव, बड़े सौभाग्य की बात है। हमारी प्रगति–हम लोग अरबों रुपये खर्च करके राकेट से चांद की सैर करते हैं। भिखारी चांद से रोटी का टुकड़ा मांगता है। कुछ लोग अपने महलों में बैठकर गाते हैं—'**मेरे सामने वाली खिड़की में इक चांद का टुकड़ा रहता है।**' हमारी दृष्टि तो चांद के टुकड़ों पर लगी है। आतंकवाद फैला है। राष्ट्र-विरोधी तत्त्व प्रबल हो रहे हैं। अपने ही आदमियों द्वारा अपने ही आदमी मौत के घाट उतारे जाते हैं। उस पर केवल निन्दा का प्रस्ताव पास करके सान्त्वना और सहानुभूति प्रकट करने में गौरव समझा जाता है। यही है हमारी आजादी, हमारी प्रगति का सही चित्र !

हमारी नैतिकता का भंडार बढ़ता जा रहा है। आप सबने देखा होगा, टैम्पो या बस में कहीं सवार होकर जाइए, बेहद भीड़ रहती है। कन्डक्टर सवारियों को जानवर नहीं, भूसा समझता है। सवारियों को ठूंस-ठूंसकर भरता है। पैसा देकर भी मुर्गा बन जाती हैं सवारियां। मुर्गा बनाने का अधिकार मास्टर साहब से छीनकर कन्डक्टर को दे दिया गया है। कन्डक्टर बूढ़े-बच्चे, ज़वान सबको मुर्गा बना सकता है। कुछ नवयुवक अपनी सीटों पर ऐसे डटे होते हैं मानो उन्होंने प्रधानमन्त्री की सीट पाई है। पहले हमारे बचपन में हमें भली प्रकार याद है कि लोग अपने से बड़े-बूढ़ों, महिलाओं, बीमारों को देखकर उनका बड़ा सत्कार करते थे। उनके पैर छूते थे और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनको अपनी सीट छोड़ देते थे। चाहे वह अजनबी हो या पहचान वाला हो। तब उनमें मानवता थी। अब हमारी स्वाधीनता ने ऐसा स्वराज्य का असर दिखाया कि सारा प्रेम-व्यवहार गायब कर दिया। अब तो कल ही मेरे सामने एक बूढ़ा व्यक्ति एक सीट पर बैठने लगा तो एक नवयुवक ने धक्का दे दिया और स्वयं बैठ गया। नवयुवक ने थप्पड़ मार दिया। हंगामा मच गया। इस प्रकार के झगड़े, हंगामे, संसद् और विधान सभाओं में भी हो जाते हैं। कहां गई मनुष्यता ? यहां मनुष्य कोई नहीं बना। लेकिन देवता सब बन गए। 40 वर्षों के दो सौ प्रतिशत स्वराज्य का कैसा सुन्दर प्रभाव पड़ा। सब लोग अपने मनमाने स्वराज्य का लाभ उठा रहे हैं।

जिधर देखो उधर गांधीवाद की आंधी में छल, कपट, बेईमानी, रिश्वत, चोरी, अपहरण, बलात्कार का बोलबाला है। खुल्लमखुल्ला भ्रष्टाचार के बड़े दरवाजे खुल गए हैं। लोग अपनी रंगीनी में मस्त हो रहे हैं। जहां कहीं रंगीनी में कोई संगीन मामला फंस जाता है, वहां पुलिस को थैलियां भेंट चढ़ा दी जाती हैं। लोग निर्दोष हो जाते हैं। यही है हमारा अलौकिक दो सौ प्रतिशत स्वराज्य।

क्या इसी नैतिकता की नींव पर इक्कीसवीं सदी का महल खड़ा होगा। जिस इक्कीसवीं सदी को लोग अपनी ओर खींच रहे हैं। शायद यहां के दो सौ प्रतिशत स्वराज्य को और भी प्रतिशत बढ़ाने का विचार जगमगा रहा है। महात्मा गांधी का नाम तब और भी उज्ज्वल हो जाएगा। ★

जो लोग चंचल प्रकृति के होते हैं, जिनका स्वभाव एकदम उत्तेजित हो जाने का होता है, ऐसे असहिष्णु स्वभाव वाले लोग यशस्वी नहीं हो सकते। धैर्य, सहिष्णुता, विचारशीलता, गम्भीरता, क्षमशीलता, प्रतिशोध न लेने का भाव, अहिंसा की मनोवृत्ति, वाणी का संयम, सभी का सम्मान करना—ये महापुरुषों के गुण हैं। उनके स्वभाव में माधुर्य होता है—वाणी से अमृत बरसता है। जो भी उनके सम्पर्क में आता है, आनन्दित होकर जाता है। महान् बनने के लिए अपने अन्दर ऐसे गुणों का विकास करना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वाभिमान

—नारायणदेव चिल्कलवार

सर्वप्रथम हिन्दुस्तान की भूमि में गुलाम वंश को हिन्दुस्तानियों ने आश्रय दिया। हिन्दुओं के निकट सम्पर्क से गुलामी से आजाद हो गया। हिन्दुओं की यह भारी उदारता व सहनशीलता थी। हिन्दुओं की सहायता से यह छोटा वर्ग भारत देश में शासक होने के काबिल हो गया। यहां बहुसंख्यक हिन्दुओं की भारी कमजोरी दिखाई पड़ती है। इसका बड़ा फायदा मुसलमानों ने इस्लामी सत्ता मजबूत बनाने के लिए उठाया। इसी तरह मुगल साम्राज्य भारत में फैल गया। फल-फूल गया। अतः स्वतन्त्र हिन्दुओं का आधिपत्य धीरे-धीरे नष्ट होता रहा। बहुत-से शासकों ने (मुसलमानों ने) तलवार के बल पर बहुत-से हिन्दुओं को मुसलमान धर्म के अनुयायी बनाना आरम्भ कर दिया। वास्तविक धर्म परिवर्तन में भोला हिन्दू मुसलमान सम्प्रदाय में विलीन हो गया और उसे जीवनदान मिलने लगा। क्योंकि इस्लाम धर्म में तलवार ही स्वर्ग की कुंजी कही जाती है। तर्क वितर्क अथवा शास्त्रार्थ करना अज्ञानियों के लक्षण समझा जाता है। यहां पर विवेक और विद्वत्ता को स्थान नहीं रहता है। यहां युद्धत्व विराजमान है।

इसी मुहम्मद साहब के मतावलम्बियों में भारत में बहुत-से सुल्तान राजा, सम्राट और बादशाह हो गये। भारत में अपनी हुकूमत जमा बैठे थे। इस तरह हिन्दुस्तान में एक नवीन मुगल युग का जन्म हुआ। इसी मुगलकाल में औरंगजेब नाम का एक बादशाह हो गया। बादशाह की गद्दी की लालसा से धूर्त औरंगजेब ने अपने सगे भाइयों को मार डाला। इसी ने अपने पिता शाहजहां को कैदी बनाया। गृह कलह प्रिय औरंगजेब ने येन-केन सम्राट सिंहासन का भार सम्हालने में सफलता पाई। ऐसा अन्यायी, अविवेकी, खूनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और क्रूर व्यक्ति कैसे अच्छा और शांतिप्रिय शासक हो सकता है ?

इसके राज्य में प्रजा कैसे सुखी हो सकती है ? नागरिक जनता के ऊपर जजिया कर लगाया। इसका खास निजी उद्योग था टोपियां बनाना और बेचना। परिणामस्वरूप राज्य कर्म में शिथिलता हुई थी। औरंगजेब कला-कौशल में चित्रकला, साहित्य, संगीत और कलाकृतियों का बांगा अप्रेमी था। लूटपाट और आक्रमण करता था। हिन्दुओं को मुसलमान बनाना एक खुला धन्धा हो गया था। यद्यपि उसके सिद्धांत को अस्वीकृति प्राप्त हो गयी तो उन लोगों का कत्लेआम कर दिया करता था। इसके राज्य में खून की नदियां बहती थीं। ग्रामीणों और शहरी लोगों को मुसलमान बनाने का जोर-शोर से उद्यम चलता था। जो हिन्दु कच्चे और नरम दिलवाले थे वे हिन्दू लोग इस्लामी बन जाते थे। क्योंकि तलवार का डर था। जो हिन्दू लोग अभय, पक्के व दृढ़ मन के थे वे हिन्दू लोग मुक्ति प्राप्ति के लिए अपना सिर कटवा देने के लिए तैयार हो जाते थे। जो हिन्दू आत्मविश्वासी और स्वाभिमानी थे उन्हीं का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता था।

औरंगजेब सनकी था। एकपक्षीय न्याय मिलता था हिन्दुओं को। मुसलमान अपराधी दण्ड से छूट जाते थे। हिन्दुओं का अनादर होता था। विपक्षी मुसलमान का आदर होता था इसलिए वह अपार अविवेकी, अन्यायी और अज्ञानी था। हिंसा प्रेमी था। हिन्दुओं के मठ-मंदिर और पवित्र पूजा-स्थल नष्ट करता था—तोड़-फोड़ करता था। भारतीय संस्कृति को तहस-नहस करने का निरंतर भारी प्रयत्न करता रहता था। हिन्दुओं के पवित्र स्थल पर मस्जिद-दरगाह बना दिया करता था। हिन्दू भावना को ठेस देता था। विद्रोह, उग्रवाद, जातिवाद, आतंकवाद और धर्मवाद की भावना भड़क उठती थी। इसी पीड़ा और ताड़ना के कारण कुछ जनता ग्राम और शहर छोड़कर जंगली और पहाड़ी प्रदेश में निवास करने चली गई। इन सभी छल कपटपूर्ण कृत्यों में कुछ लुच्चे हिन्दू भी सहयोगी थे। भारतीय सभ्यता से औरंगजेब कभी भी प्रसन्नचित्त नहीं रहा। गो-वध दिन-दहाड़े होता था। क्योंकि मुसलमानों को गोमांस भक्षक बना दिया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वस्तुतः औरंगजेब निर्माण, विकास, विज्ञान और सुधार इत्यादि कार्य में लक्ष्य शून्य था। हिन्दू स्वाधीनता की सुगन्ध नष्ट होने लगी। और इधर-उधर गुलामी फैलने लगा। ऐसी बिगड़ी नाजुक परिस्थिति और बेला में बीर शिवाजी छत्रपति ने अलग-अलग स्वतन्त्र हिन्दू राज्य की स्थापना की। उसका जेष्ठ पुत्र था वीर शंभाजी। शिवाजी की मृत्यु के बाद राजगद्दी शंभाजी को मिली। इसका एक शाही दरबारी सलाहकार था कलुशाकब्जी तांत्रिक। उसको राजकीय कार्यभार का कोई ज्ञान नहीं था। राजकारण में कोरा था। वह वाक-पण्डित शंभाजी इसी के वश में हो गया। वह दूसरे पुराने दरबारी और पत्नी का सुनता नहीं था। सिर्फ कलुशाकब्जी पर पूर्ण भरोसा था। उसने जो शिक्षा शंभाजी को दी वह सारी अहितकारी थी। उसने जो मार्ग बताया वह जीवन मार्ग असफलता का था। अमंगल लक्षण थे। राज-नीतिज्ञ और सैनिक बल से तांत्रिक जादूटोना और तंत्रमंत्र से कोई समता नहीं है। तांत्रिक तत्व या पदार्थ विद्या केवल मनोरंजन व करमूलक खेल क्रिया है। इसी अज्ञानता से शंभाजी का विवेक भंग हो गया था।

वीर शंभाजी को दुष्कर्म, दुगुर्ण और दुत्सनी से लगन लगाना कलुशाकब्जी का प्रताप था। शंभाजी का जीवन बेकार हो गया था। घोषित घंटे नशीली चीजों का सेवन करने में मस्त था। शंभाजी संगमेश्वर गढ़ में निवास या आराम करने गया। वहां नशे के प्रभाव में था। इसी स्थिति में शंभाजी को औरंगजेब के सेनापति तकरीब खान ने पकड़ा। शंभाजी औरंगजेब की गिरफ्तारी में गुलाम था। औरंगजेब के आदेशानुसार शंभाजी को तुरन्त तुलापुर के कारागार में जिन्दा रखा गया। शंभाजी की धर्मपत्नी वंशुबाई और उसके औरस पुत्र शाहू को भी कैदी बनाया गया। उन्हीं के संबंधियों और सहयोगियों को भी बन्दी बनाया गया। यह एक अप्रिय घटना भारतवासियों और नगरवासियों के लिए अनोखी थी। औरंगजेब ने अपनी दहशत या खौफ जमा दिया। प्रजा और बन्दियों को तकलीफ देना शुरू कर दिया। उन्हीं पर चोर और प्रहार करने का उद्योग बल बढ़ा दिया। उन्हीं के साथ कठोर व्यवहार था। बन्दी गृह में किसी कैदी के साथ सहसा मिलने की आज्ञा नहीं थी। दुर्दैवतः कैदी सख्त सजा भोग रहे थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शंभाजी को अति असहनीय वेदना और अमानवीय दुःख सहना करना पड़ा अंधकारपूर्ण कोरी में। वह अत्यन्त पीड़ित था। पीड़ा सहन करने की शक्ति कम हो गयी थी। अधिक पीड़ा के कारण तड़प रहा था। मृत्यु की अभिलाषा पसन्द करने लगा। जीवन की अंतिम घड़ियां गिन रहा था। बादशाह ने एक शासकीय फरमान निकाला। उस में शंभाजी को चेतावनी दी थी कि यदि शंभाजी इस्लाम धर्म को स्वीकारता है तो उसको जीवनदान दिया जायेगा। इस प्रकार की करारी शर्त घोषणा को शंभाजी ने नामंजूर कर दिया। इसके अलावा उसने अपनी इच्छा प्रकट की कि यदि औरंगजेब अपनी खुद की औरत बेटी देता है तो मैं इस्लाम धर्म कबूल करूंगा। अन्यथा इस्लाम स्वीकार करने की कोई गुंजाइश नहीं है। इस प्रकार के वक्तव्य पर औरंगजेब चिढ़ गया। जल्दी से औरंगजेब ने शाही फरमाइश–हुकुम शंभाजी को मार डालने को तुलापुर भेजा।

तदनुसार सैनिक सिपाही शंभाजी का नाशवान् शरीर नोचने के लिए दौड़ पड़े। जैसे गीदड़ झुंड मृत शरीर पर आक्रमण करता है। शरीर के अलग-अलग टुकड़े करना जारी रहा। देह छिन्न-भिन्न करने का प्रगाढ़ उत्पात प्रवाहित रहा। अन्त में स्वाभिमानी शंभाजी के प्राण पखेरू उड़ गये। इस रीति से हिन्दू सेनानी को मुक्ति प्राप्त हुई। ★

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहां वेद का स्वर।

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

पुस्तकालय संस्करण : लागत मूल्य ५०० रुपये
उपहार संस्करण : लागत मूल्य १,१०० रुपये

प्रचार के लिए

५०० रुपये के प्रत्येक वेद-सेट के साथ २५१ रुपये का साहित्य (वैदिक सम्पत्ति, महाभारत, गीता (हिन्दी भाष्य), वेदांजलि, संक्षिप्त रामायण तथा अन्य ग्रंथ) उपहार दिया जाएगा।

आदेश का सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।
रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-११००३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुत्व, शासन और दायित्वबोध

—आचार्य चन्द्रभूषण तिवारी, एम. ए. पी. एच. डी.

वर्तमान भारत की शासन प्रणाली प्रजातांत्रिक है प्रजातंत्र में शासक नौकर व प्रजा राजा होती है परन्तु वर्तमान समय में ठीक विपरीत परिस्थितियाँ चल रही हैं जो प्रजातंत्र के लिए समीचीन नहीं हैं। छोटे से लेकर बड़े तक कर्ज़ से लेकर दान तक के प्रशासनिक कार्य जो प्रजा (राजा) अधिकारी (नौकर) से कराना चाहे तो अवश्य ही रिश्वत के अभाव में नहीं होगा। उदाहरणस्वरूप यदि बैंक से पांच हजार रुपया ऋण लेना हो तो सर्वप्रथम बैंक दलाल ढूंढ़िए, फिर पंचायत सेवक बी. डी. ओ. तथा बैंक कर्मचारियों को प्रतिशत के आधार पर बंधी हुई रकम देने का वादा कीजिए। दौड़-धूप, चाय-पानी व मक्खन पालिश में एकाध हजार गंवाइए, तब ऋण पाने का विश्वास प्राप्त होगा अन्य था बैंक मैनेजर एक न एक आपत्ति करता रहेगा। यदि आप ने साहस कर इस भ्रष्टाचार का मुकाबला करने का प्रयास ठाना तो सभी बड़े अकिधारी यही कहते मिलेंगे कि बैंक मैनेजर की आपत्तियां सही हैं। यदि पुलिस विभाग से आप का पाला पड़ा हो तो आप यदि एक आवेदन पत्र दरोगा के खिलाफ राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री व पुलिस निदेशक को दीजिए तो बाद में परिणाम मिलेगा कि आपके सभी पत्र पुनः उसी दरोगा के पास आयेंगे जिसके खिलाफ आपने लिखा था। अब आप बताइये "चाम का वेरहा कुत्ता रखवाल"। दरोगा अपने खिलाफ कौन-सी जांच करेगा? ठीक इसी प्रकार दान की भी स्थिति है। यदि कोई अचल सम्पत्ति किसी धार्मिक संस्था को आप को दान देना हो तो मालियत के अनुसार टिकट लेकर निबन्धक के पास निबन्धन हेतु जाइए तो वहां भी प्रतिशत के अनुसार कर्मचारिंयों व अधिकारियों को घूंस दीजिए तब आप किसी संस्था की अपनी अचल सम्पत्ति दान-पत्र के रूप में रजिस्ट्री कर सकेंगे।

कहने को तथा देखने को भारत ने उन्नति की है, चमकते, भवन महकते शरीर, धोबी, दर्जी व सेन्ट पाउडर से सजे-सजाए सुगन्ध बिखेरते हुए पढ़े-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिखे नव जवान शाम को चौक पर मस्ती लेते हुए देखें पर इनको गम नहीं कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति विदेश का लगभग साढ़े तीन सौ रुपये का कर्जदार है। "धनात् धर्मम्" का स्थान अब "धनात् मत्स्य-शराम्" ने ले लिया है। अण्डा, मांस और शराब पीकर परिवार नियोजन की शरण लेकर "यावत् जीवेम् सुखम् जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत" चार्वाक का सिद्धांत मानकर की भारत की जनता आगे बढ़ रही है। यदि अभी हम कहें कि यह आगे बढ़ना नहीं अपितु "चलती को गाड़ी कहें, फटे दूध को खोया।

घटनी को बढ़नी कहे, देख कबीरा रोया ॥

अर्थात् भारत के लोग बाहरी आवरण से चिकने हो रहे हैं परन्तु भीतर से "पर्दा उठाकर देखो बिगड़ी मशीन है"। अध्यात्म चिंतन व चरित्र रसातल को जा चुका है इसे कौन बचाएगा ? रजनीश, ब्रह्माकुमारी, निरंकारी, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी बचायेंगे ? नहीं-नहीं। इसका मूल-मंत्र है स्वामी दयानन्द के भाषणों तर्कों व वेदों के पास। स्वामी जी ने कहा था कि पाश्चात्य सभ्यता की ओर न भागो। पीछे मुड़ो। वेदों की ओर जाओ।

इसी परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द जी की बातें सर्व धर्म सम्मेलन शिकागो की याद आती हैं। अमेरिका के निवासियों ने स्वामी जी से प्रश्न किया था कि (1) श्री कृष्णजी की बांसुरी की आवाज सुनकर लाखों नर-नारी इकट्ठे हो जाते थे। क्यों ? (2) भारत विश्व गुरु कहा जाता है। क्यों ? इन प्रश्नों का उत्तर स्वामी जी ने बाद में देने का वादा किया। स्वामी जी का विचार अमेरिका वासियों को पसन्द आया। इसलिए सभाओं के ढेर व अगणित कार्यक्रम लगने लगे। एक दिन बहुत ही वीरान स्थल पर स्वामी जी का प्रवचन हो रहा था। वहां भी स्रोताओं की अपार भीड़ थी। स्वामीजी ने सोचा कि दोनों प्रश्नों का उत्तर यहीं देना समीचीन होगा और उत्तर दिया कि (1) मेरे जैसे साधारण सन्यासी की बात सुनने के लिए इतनी अपार भीड़ उमड़ पड़ी है तो श्री कृष्ण जी तो योगिराज थे उनको बांसुरी की आवाज पर भीड़ होना कोई असम्भव बात नहीं ? (2) भारत के मनुष्यों का चरित्र गुरुकुलों में अर्थात् गुरु के आश्रमों में बनाया जाता है, जबकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमेरिका में धोबी व दर्जी बनाते हैं।

आज इसी का अभाव दिन प्रतिदिन होता जा रहा है। ईश्वर जाने कि विश्व गुरु भारत की नैया किधर जाएगी जबकि उचित पतवार व केवट का अभाव दिन-प्रति-दिन बढ़ता ही जा रहा है। अब हम आप को मुख्य विषय की ओर चलने के लिए आमन्त्रित करते हैं।

हिन्दुत्व

भारत एक हिंदू राष्ट्र है। आज की परिस्थितियों में हिंदूवादी विचार-धारा की बात करना एकदम मूर्खता पूर्ण है। मेरे जनपद में श्री शीतलाजी का स्थान निजामाबाद में है जहां कि श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध की जन्म भूमि है। मिट्टी का बर्तन विश्व में एक स्थान रखता है। आर्यमगढ़ जनपद ऋषि वाल्मीकि दुर्वासा, देवल, दत्तात्रेय (सती अनसूया) द्रोणाचार्य, का आश्रम, राजा सिराथू की तपोभूमि जयद्रथ वध के समय सिर गिरने का स्थान ब्रह्म विष्णु महेश को बालक बनाकर अनसूया द्वारा सेवा करने का स्थान तथा आल्हा ऊदल की जन्म भूमि प्रभृति स्थानों की घोर उपेक्षा तो होती ही है और इसका दायित्व हिंदू पर है जो ध्यान ही नहीं देता है। कहना था कि श्री शीतला जी, स्थान पर लाखों नर-नारी प्रति सोमवार व शुक्रवार को इकट्ठा होते हैं परंतु वह स्थान चहुंतरफा मुस्लिम आबादी से घिरा है जिससे घोर उपेक्षित है। उसके संबंध में जिलाधिकारी व परगना-धिकारी से बात की तो उन्होंने यही जवाब दिया कि क्यों इस पचड़े में पड़े हैं। छोड़िए यह सब वक्त कमाने खाने का धन्धा सोचिए। दुःख है कि उन दोनों अधिकारी हिंदू थे और मूर्ति पूजक भी. जबकि मैं भिन्न विचार का व्यक्ति हूं। बहरहाल किसी तरह सम्पर्क मार्ग बना और विद्युत् व जल व्यवस्था हुई।

आइए, अब हम हिंदू शब्द को विचारें। हमारे यहां आर्यसमाज के अनेक विद्वान् हिंदू शब्द से घृणा रखते हैं और कहते हैं कि हम आर्य हैं बात तो सच है पर सोचना चाहिए कि हमने तो शकों, हूणों, द्रविणों को बचा डाला। औरंगजेब की क्रूर तलवार, अकबर का समभाव विचार, मानसिंह और जयचंद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि के अत्याचार सह डाले तो एक शब्द हिंदू क्या हम नहीं पचा सकते हैं। अवश्य पच सकता है। आप ध्यान दें और विचार करें सावरकर से पूर्व और पश्चात् के हिंदू शब्द की व्याख्या करने वालों को छोड़ें और हिंदू शब्द कैसे बना इस पर भी विचार करना बंद करें अपितु अब यह नई परिभाषा आप ग्रहण करें। हिंदू उसे कहते हैं जो हीन भावना को दूर करे। अर्थात् छुआछूत, भेदभाव जात-पात सब मिटाकर वेदमार्गी को ही हिंदू कहा जा सकता है।

आशा है कि आप मेरे विचारों को ग्रहण कर सबको इस आशय की शिक्षा देंगे तथा भविष्य में हिंदू की आलोचना-प्रत्यालोचना व घृणा समाप्त करने में सभी विद्वत् वर्ग व सामान्य-जन हमारा साथ मनसा, वाचा व कर्मण. देंगे यही मेरी अपील है। साथ ही इस लेख के माध्यम से मैं यह भी आग्रह करूंगा कि आप सभी हिंदूवादी विचार-धारा का विस्तार करें तथा जहां कहीं भी हिंदू विषय खड़ा हो, वह विषय धार्मिक हो या राजनैतिक—जमकर अंगद का पैर बन जायें ताकि राजनेता कर्मचारी व अधिकारी आपके पैरों तले रावण की तरह झुक जायें यही मेरे हृदय की पुकार है। आपसे इस मार्ग पर चलने के लिए स्वामी विरजानन्द सदृश स्वामी दयानन्द मर्यविश्व के हिंदुओं से गुरुदक्षिणा मांग रहा हूं।

शासन

प्रशासन के दो प्रमुख अंग हैं। न्याय व पुलिस। न्यायालयों की यह स्थिति है कि घूस के आधार पर ही सारा कार्य सम्पन्न हो रहा है। तहसील स्तर के न्यायालयों में एक रुपया व दीवानी में दो रुपया तथा इसी प्रकार हाई कोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में दस व बीस रुपए तो खुलेआम पेशी के नाम पर पेशकार ले रहा है। पुकार डालने वाला व्यक्ति दोनों पक्षों से बार-बार तगादा किया करता है और पेशी का पैसा लेकर ही जान छोड़ता है। न्याय विभाग तो नंगा होकर नाच रहा है। मात्र न्यायालयों का कंकाल ही खड़ा है। भारत में भ्रष्टाचार मिटाने का आह्वान तो सभी राजनैतिक दल करते हैं परन्तु राजनैतिक नेता स्वतः अधिकारियों और कर्मचारियों की दलाली करते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। इनसे देश का भला होना एक दुराशा है। कोई भी स्थिति हो, क्यों न कोई उजड़ रहा हो पर न्यायालय के न्यायमूर्ति नोट देखकर ही न्याय देते हैं। एक उदाहरण आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरे ही जनपद आजमगढ़ के रफी व सफी नाम के प्रसिद्ध वकील हैं। नान्हू नामक राजभर के निजी मकान पर किरा दारी का दावा दाखिल किया जबकि नान्हू महमूदपुर गांव में रहता है जहां किराएदारी का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता है। उक्त द्वय बकील मुंसिफ व जज से अपने पक्ष में फैसला करवा लिया। नान्हू हाई कोर्ट गया। हाई कोर्ट ने नान्हू की अपील खारिज कर दी तो दुर्गाप्रसाद यादव विधायक ने अपने गुण्डों के माध्यम से नान्हू का घर गिरवा कर सभी छज्जे उठा ले गए। बताइए, यही न्याय व नेता का गुण है। आज नान्दू इस बरसात व भीषण गर्मी में पशु व 15-16 परिवार के सदस्यों के साथ पेड़ की छाया में जी रहा है। इसी प्रकार के एक भूतपूव उपकृषि मंत्री रामवचन यादव हैं जो मोहनपुर के अपने गरीब कमजोर पड़ोसी का खेत मकान कब्जा कर रखे हैं। वह गरीब व्यक्ति मजदूरी करके परिवार को जिला-खिला रहा है। यह है शासन।

पुलिस विभाग के पास आप यदि प्राथमिकी रिपोर्ट लिखाने जाइए तो पहले तो आपके ऊपर कथित राक्षस की भांति टूट पड़ेगा। मालूम नहीं किस परिवार में पुलिस के लोग पैदा होते हैं जहां उनका नाश्ता, ओढ़ना व बिस्तर ही गालियों से सजाया जाता है। जब जरा गर्मी कुछ शान्त हुई तो तुरन्त रुपए पर बात आ रुकेगी। जब आपने मन चाही रकम उन्हें दे दी तो जैसा चाहिए रिपोर्ट दर्ज करा दीजिए। इसके बाद जांच के लिए जिस कर्मचारी के पास गया वह भी मनचाही रकम पाने के बाद ही आपके विवादित स्थल पर जाएगा और यदि दूसरे पक्ष से भी पैसा पा गया तो दस-पांच गाली पहला पक्ष फिर सुनेगा और हजारों की गिनती गिनकर पुलिस विभाग के कर्मचारी पुनः आने को वापस हो जाते हैं तथा दूसरे मुलजिम की ताक पर रहते हैं कि कब कौन आ जाये और नोट बरस जाये। इस प्रकार एक साधारण दरोगा जी फटे कपड़े के साथ घर से ट्रेनिंग करने गया था या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुच्छ धन राशि सरकार द्वारा देकर बोझ उतारा जाता है। ऐसी ही घटनाएं बस, तीर्थस्थल आदि पर भी होती हैं जिसके मूल कारण कर्मचारी ही हैं। अन्त में सरकारी मशीनरी द्वारा बोझ उतारने की क्रिया ही होती है न कि अन्य कुछ।

इस प्रकार भारत का नागरिक दोषपूर्ण व्यवस्था व संविधान के कारण पिसा जा रहा है और प्रत्येक सरकारी कार्य उसके लिए बोझ बन बैठा है। भले ही सरकार 5 नहीं अपितु एक दिन का ही हफ्ता मान कर कार्य कराये पर दोष जल्दी मिटने वाला नहीं है—जब तक चरित्रवान व्यक्ति नहीं बनेगा। यह गुण धर्म में है न कि धर्मनिरपेक्षता में। आइए, भारत को धर्मराज्य बनाने में आप हमारा सहयोग कीजिए। ☆

कैसे-कैसे बर्बर कानून ?

कुछ वर्ष पूर्व एक अरब देश में एक दम्पती ने चोरी के आरोप में अपने 12 वर्षीय घरेलू नौकर को पुलिस स्टेशन भेज दिया, ताकि उसे उचित सबक मिल जाये और वह सुधार की दिशा में कदम बढ़ा सके। दो-तीन दिन वह बाद नौकर (बालक) दंड भुगतकर वापस लौटा तो उसका दाहिना हाथ गायब था और कटे भाग पर पट्टी बंधी थी। दम्पती के पूछने पर उसने बताया कि चोरी के अपराध की शिकायत के आधार पर इस्लामी अदालत ने उसका दाहिना हाथ काट डाला है। दम्पती इस कटे हाथ को देखकर फूट-फूटकर रोए और उन्हें घोर पश्चाताप हुआ। उन्हें क्या पता था कि उनकी छोटी-सी शिकायत पर इस बालक को यह कठोर दंड मिलेगा। उन्होंने स्वयं को क्षमा नहीं किया और उस बालक को आजीवन अपने बच्चे की तरह पालने का फैसला किया। विचार का विषय है कि प्रगतिशील मानव के लिए बर्बर युग के ये कानून और दंड कहां तक उचित है ? क्या इस प्रकार मानवीय गरिमा और उसके देवत्व की भावना का उपहास नहीं उड़ाया जाता ? बालक भूल करके सुधर सकता है ! परम्परागत अपराधियों को भी आज वैज्ञानिक युग में ऐसा दंड देने की बजाय सुधारने के मनोवैज्ञानिक प्रयोग चल रहे हैं। क्या इस्लाम विश्व भर को दारुल इस्लाम बनाकर उसके ऊपर ऐसी ही अभिशप्त सभ्यता और संस्कृति लादना चाहता है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गीता पर विदेशी विद्वान् भी लट्टू हैं

मेरठ के प्रमुख शिक्षाविद् व आध्यात्मिक विषयों के लेखक प्रो. शिवानन्द जी के "गीता रसामृत" ग्रंथ ने विदेशों में भी शीर्षस्थ विद्वानों को प्रभावित कर अपनी छाप छोड़ी है। चैकोस्लोवाकिया, इटली, अमरीका, ब्रिटेन आदि के अनेक विद्वान् व बुद्धिजीवी इस ग्रंथ से प्रभावित हुए हैं।

चैकोस्लोवाकिया के प्रख्यात हिन्दी विद्वान् और प्राहा विश्वविद्यालय के प्राच्य भाषा विभाग के अध्यक्ष डा. आदोलेन स्मेकल ने लिखा है—"गीता रसामृत को मैं हमेशा अपनी कार्य-मेज पर रखता हूं तथा प्रतिदिन कुछ पंक्तियों का रसामृत करना मेरी दिनचर्या बन चुकी है। इस महान् ग्रंथ की प्रत्येक पंक्ति में आनन्द प्रदान करने वाला रस विद्यमान है, जिससे मुझे परम शांति मिलती है।"

डा. स्मेकल लिखते हैं—"यद्यपि मैं भारत से बहुत दूर हूं फिर भी मेरा चिन्तन-मनन भारतीय विचारधारा से इतना ओत-प्रोत है कि मुझे बार-बार लगता है कि मैं आपके पास ही बैठा हूं। मैं गीता रसामृत की इन पंक्तियों कि "अपना स्वाभाविक कर्म करते रहने से ही व्यक्तित्व का विकास होता है तथा मनुष्य पूर्णता की ओर अग्रसर होता है" को भारतीय दर्शन का सार मानता हूं।

इटली के प्रमुख शिक्षाविद् तथा साहित्यकार डा. एन्जो टर्बियानी ने गीता रसामृत से प्रभावित होकर लिखा है—"इटली के कठिन-कठोर व अशान्त जीवन से निराश था कि "गीता रसामृत" ने मुझे आशा व धैर्य प्रदान किया। इस ग्रंथ के अध्ययन से मैं भारत व भारतीय संस्कृति व हिन्दू दर्शन से प्रभावित हुआ हूं। स्पष्ट रूप से समझ गया हूं कि केवल सनातन धर्म मोक्ष का मार्ग दिखाता है। पश्चिम में धर्म की उपेक्षा व विनाश से ही वहां का जीवन अशान्त हो गया है।

गीता के सिद्धांत सर्वोच्च हैं अतः इसका सारे जगत् में प्रचार होना चाहिए। गीता की जो टीका प्रो. शिवानन्द जी ने लिखी है, वह समस्याओं का समाधान करने वाली व हृदय को सन्तोष देने वाली है।

इस महान् ग्रंथ का अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाना चाहिए, जिससे संसार गीता तथा भारतीय दर्शन का लाभ उठाकर शांति प्राप्त कर सके।

प्रेषक : शिवकुमार गोयल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म सहिष्णु है : मोरारजी देसाई

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई का मत है कि सब धर्मों का समान आदर करना हिंदू धर्म की ही विशेषता है, अन्य किसी धर्म की नहीं। आज जो नए-नए धर्म प्रचलित हो गए हैं, वे मानव धर्म नहीं हैं, सिर्फ सम्प्रदाय हैं, जो आपस में एक-दूसरे का विरोध करके लड़ते हैं।

हिंदू ही सर्वाधिक सहिष्णु है, फिर भी हिंदू समाज को आदर नहीं मिलता। इसका कारण है अन्दरूनी कमजोरी, जात-पांत व आपसी फूट। हिंदू समाज कमजोर है, अतः उसे तिरस्कार मिलता है। परन्तु मेरा विश्वास है कि यह बीमारी 15-20 साल में खत्म हो जायेगी और भारत में एकता और शक्ति आयेगी।

मोरारजी भाई ने एक भेंट में कहा कि यद्यपि अहिंसा में उनका पूर्ण विश्वास है किन्तु राज अहिंसा का तो है नहीं, राज में हिंसा है ही। अतः दुष्ट लोगों को भय दिखाये बिना राज्य चल नहीं सकता।

दुष्ट लोगों का हृदय परिवर्तन करना राज्य का काम नहीं। वह सन्तों का काम है। अहिंसा का उपयोग तब है, जब प्रत्येक व्यक्ति अहिंसक बन जाए। परन्तु आज कितने लोग अहिंसक हैं? अतः राज्य को तो भय का उपयोग करना पड़ेगा। राज्य के लिए शक्ति व भय द्वारा देश में शांति रखना अनिवार्य हो जाता है। इसीलिए रामायण में कहा गया है "भय बिनु होई न प्रीति"।

गांधी जी हर समस्या को अहिंसा द्वारा ही हल करते थे पर राज्य ऐसा नहीं कर सकता, नहीं तो फौज की जरूरत ही क्या। राज्य का कर्तव्य है कि वह अपनी शक्ति से दुष्ट तत्वों का सफाया करे। आज यदि गांधी जी होते तो वे आतंकवादियों को समझाने की कोशिश करते। पर वे भी शायद सफल नहीं होते।

नागरिकों को बचपन से ही सैनिक शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए। क्योंकि सैनिक शिक्षा से ही जनता को शक्तिशाली व अनुशासित बनाया जा सकता है। यदि अहिंसा का उपयोग करना हो तो पहले शक्तिशाली बनकर फिर अहिंसा दिखानी चाहिए—दुर्बल की अहिंसा निरर्थक है।

प्रेषक : शिवकुमार गोयल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय संस्कृति के मूलाधार

—बलदेव उपाध्याय

भारतवर्ष की संस्कृति अपनी विशिष्टता और महत्ता के लिए संसार भर में विख्यात है। जहां यूनान, मिस्र, रोम, बाबुल आदि की संस्कृतियां सदा के लिए विकराल काल के गाल में समा गईं, वहां हमरी वैदिक संस्कृति का अस्तित्व अभी तक अक्षुण्ण है।

हम लोग अंग्रेजी के कल्चर शब्द के लिए हिन्दी में संस्कृति शब्द का व्यवहार करने लगे हैं। दोनों के अर्थों में भिन्नता है, लेकिन दोनों का अर्थ समकक्ष है। कल्चर शब्द लेटिन भाषा के कुलतुरा (Cultura) शब्द से निकला है। इस लेटिन शब्द का अर्थ है पौधा लगाना अथवा पशुओं का पालन करना। इसका लाक्षणिक अर्थ होता है मस्तिष्क और उसकी शक्तियों को विकसित करना। संस्कृति का शाब्दिक अर्थ है मन और हृदय की वृत्तियों को संस्कार द्वारा सुधारना और उदात्त बनाना। प्रत्येक संस्कृति का यही लक्ष्य होता है। लेकिन भारतीय संस्कृति में कुछ ऐसी विशेषता है कि उसका उद्देश्य और लक्ष्य अन्य संस्कृतियों की अपेक्षा अधिक उच्च, अधिक महनीय, अधिक उपयोगी और अधिक उदात्त है। हम भारतीय संस्कृति की विशेषता को तीन शब्दों में अभिव्यक्त कर सकते हैं—त्याग, तपस्या और तपोवन।

आइये, हम इन तीनों को बारी-बारी से लें। त्याग—मानव जीवन की सफलता त्याग में है, भोग में नहीं। पाश्चात्य संस्कृति भोग की शिक्षा देती है—भारतीय संस्कृति योग की। त्याग एक महामन्त्र है। भारतीय संस्कृति सब का हित चाहती है। वह क्षुद्र स्वार्थ के त्याग की शिक्षा देती है। यही यज्ञ की महनीय भावना है। तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गधः कस्य स्विद्धनम्—यजुर्वेद का यह मन्त्र इसी त्यागभाव की शिक्षा दे रहा है।

तपस्या—त्याग के लिए तपस्या आवश्यक है। तप की अग्नि में तपाये बिना मानव जीवन कुन्दन नहीं बनता—उसके मल जलकर राख नहीं होते। हमारा साहित्य तप की महिमा से भरा पड़ा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तपोवन—तपस्या के लिए उपयुक्त स्थान है तपोवन। नगरों के कोलाहलपूर्ण वातावरण में दिन-रात के संघर्ष में तपस्या की साधना सफल नहीं हो सकती। इसके लिए शान्त और एकान्त स्थान में निवास आवश्यक है, जहां चित्त प्रपंचों से दूर हट कर आत्मचिन्तन में लीन हो जाये। भारतीय संस्कृति का जन्मस्थान तपोवन ही है। तपोवन की गोद में लालित और पालित हमारी संस्कृति स्वार्थ और परमार्थ के, स्वजीवन और परजीवन के सामंजस्य की पोषिका है। हमारी सभ्यता के विकास में नगर का महत्व बहुत कम रहा है। पाश्चात्य सभ्यता नगरों में पनपी—इसीलिए हानिकारक सिद्ध हुई। इस प्रकार हमने देखा कि भारतीय संस्कृति के मूल में त्याग, तपस्या और तपोवन के तत्व क्रियाशील हैं।

आइये, अब भारतीय संस्कृति की कुछ अन्य उत्कृष्टताओं पर विचार करें—

आध्यात्मिकता—भौतिकवाद का अनुरागी राष्ट्र अध्यात्मचिन्तन का प्रेमी कभी नहीं हो सकता। मिस्र की सभ्यता भौतिकता में सनी थी—भौतिक सुख की प्राप्ति ही उस देश के राजाओं का परम लक्ष्य थी। फलस्वरूप अध्यात्मचिन्तन के अभाव में वहां की सभ्यता आदर का स्थान न पा सकी। इसके विपरीत भारत और भारतीय सभ्यता से अनुप्राणित पूर्वी देशों में दार्शनिकों का बोलबाला था। वे समाज के अग्रणी थे। राष्ट्र के निर्माता थे। समाज को परमकल्याण की ओर ले जाने वाले महनीय नेता थे।

प्राचीन और मृत्युंजय—आर्य सभ्यता प्राचीन और मृत्युंजय है। यह अमर है। यह प्राचीन होकर भी नवीन है। इसे मृत्यु मुख में समेटने के अनेक अवसर आये, विकराल आपत्तियां आईं, विदेशियों के प्रबल आक्रमण हुए, लेकिन अब भी यह अदम्य उत्साह से पूर्ण है। क्षात्र बल का ब्रह्मतेज से सुन्दर सहयोग आर्य राजनीति की विशेषता है। छत्रपति शिवाजी ने समर्थ गुरु रामदास की आध्यात्मिक मन्त्रणा से औरंगजेबी अत्याचारों का मुकाबला किया।

हमारी सभ्यता के अमरत्व का रहस्य तीन शब्दों में अभिव्यक्त किया जा सकता है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामंजस्य, सहिष्णुता और ग्रसिष्णुता—स्थिति के अनुकूल परिवर्तनशीलता, सब कुछ सहने की योग्यता और अन्य सभ्यताओं को ग्रस लेने की शक्ति।

आर्य संस्कृति बहुत उदार है, उदात्त है। वह अपनी उदारता के ही बल पर अब तक जीवित रही है। आगे भी जीवित रहेगी। आज दानवता के भीषण प्रहार से मानवता छिन्न-भिन्न हो रही है। मानव मानव का शत्रु बना हुआ है। यदि हमें संसार में मानवता की रक्षा करनी है, तो हमें भारतीय संस्कृति को अपनाना ही होगा।

यदि मुसलमान नहीं बदलते तो उन्हें पाकिस्तान जाना होगा और शासन यदि इसी तरह उन्हें सिर चढ़ाता रहा, जामा मस्जिद का इमाम यदि इसी तरह धमकियां देता रहा तो हम चाहें या न चाहें, हिंदुओं को या तो संगठित होना होगा या फिर मरना होगा। और कोई मार्ग है ही नहीं।

देश भीतर-भीतर सुलग रहा है। एकता की अपीलें समस्या का हल नहीं है। हिन्दुओं को दबाना या कोसना भारत राष्ट्र की सेवा नहीं—हत्या है। रास्ते केवल दो हैं—मुसलमान भारत मां के पुत्र बन जायें या भारत छोड़कर अपने घर पाकिस्तान चले जायें। ये दोनों विकल्प न माने गए तो हिन्दुओं को संगठित होकर संकट का सामना करना होगा।

देश की संस्कृति, स्वतंत्रता और अखंडता यदि नष्ट नहीं करनी तो अब हमें स्थिति को समझ उसका सामना करने की तैयारी करनी होगी।

यह सब कुछ हम जोश में नहीं सोच समझकर शांति से स्थिति का सही मूल्यांकन करते हुए लिख रहे हैं। हम प्यार करने को तैयार हैं बशर्ते कि कोई हम से भी प्यार करे।

पर यदि कोई हमारी मां के सिर पर प्रहार की सोचता है तो हम इतने कायर नहीं कि पिटते रहें और प्यार के गीत गाते रहें।

हिन्दुओं को अब ऋषि दयानन्द के दिखाए मार्ग—'सब से प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए' पर आचरण करना ही होगा। रक्षा का अन्य कोई मार्ग है ही नहीं। आचार्य, —महात्मा वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुतुब मीनार से निकली हिंदू मूर्तिया !

—अनिल चोपड़ा

इन दिनों दिल्ली में कुतुब मीनार की मरम्मत का काम चल रहा है। इस मरम्मत के चलते कुतुब मीनार में जमीन से तीस फुट ऊपर उसकी दीवार में से हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों के मिलने से समूचा समाज सकते में आ गया है। पुरातत्ववेत्ताओं ने बताया है कि ये मूर्तियां 12वीं सदी के चंदेल राजाओं के समय की हैं।

कुतुब मीनार का निर्माण इसके कहीं बाद जाकर कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया था। आज इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में मुगल शासन के दौरान अकबर की धर्मनिरपेक्षता और दीने इलाही का प्रचार तो खूब किया जाता है, लेकिन तमाम मुगल बादशाहों के हिन्दुओं और हिन्दू धर्म पर किए गए अत्याचारों की लोमहर्षक दास्तान अब सुनाई नहीं पड़ती। वजह यही दी जाती है कि 'साम्प्रदायिक सद्भाव' को चोट न पहुंचे।

लेकिन अब कुतुब मीनार की बाह्य दीवार से दो हिंदू मूर्तियों का निकल पड़ना यह साबित करता है कि किस प्रकार मुस्लिम स्मारकों, मस्जिदों, किलों को बनाने के लिए न केवल हिन्दू मन्दिरों को तोड़कर उनका पत्थर प्रयोग किया गया, बल्कि पवित्र देवी-देवताओं की मूर्तियों तक को साबुत-का-साबुत उन कारीगरों द्वारा किस धार्मिक कट्टरपन के वशीभूत होकर दीवारों में चिन डाला गया। कुतुब मीनार से हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों का निकलना कोई नई बात नहीं। जब-जब इसे मरम्मत के लिए छोड़ा गया, तब-तब ही इसकी दीवारों या नींव से कोई-न-कोई मूर्ति प्रकट हुई है। इससे एक बात तो स्पष्ट होती है कि कुतुब मीनार जिसमें मूर्तियों तक को चिना गया है, इसका पत्थर भी निश्चित रूप से मन्दिरों का ही पत्थर होना चाहिए। जब मन्दिरों को तोड़ कर उनकी मूर्तियों तक को कुतुब मीनार बनाने के लिए प्रयोग किया गया है, तो स्पष्ट है कि मन्दिरों का पत्थर भी इसमें अवश्य लगाया गया होगा।

हरिद्वार, मथुरा, काशी, सोमनाथ, अयोध्या, न जाने कहां-कहां मुगल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शासकों ने हिंदू मन्दिरों को ध्वस्त किया, और वहां मस्जिदें खड़ी कीं। श्रीकृष्ण जन्म-स्थान के बगल ही में मस्जिद बनाई गई, काशी के प्रसिद्ध भगवान् शंकर के विश्वनाथ मन्दिर को तोड़कर वहां मस्जिदें बनाई गई, अयोध्या में राम जन्म-स्थान को तोड़कर वहां बाबरी मस्जिद बनाई गई। सोमनाथ के मन्दिर को महमूद गजनवी द्वारा तोड़ कर लूटने की कहानी कौन नहीं जानता ?

कुतुब मीनार की मरम्मत का काम अभी जारी है। भारत सरकार को चाहिए कि वह लगे हाथ सारी मीनार का निरीक्षण करवा कर तमाम हिंदू मूर्तियों को वहां से निकलवा दे और उन्हें पुरातत्व विभाग को सौंप दे, अन्यथा जब-जब भी इसकी मरम्मत करवाई जाएगी, इसमें कोई-न-कोई मूर्ति निकलेगी, और वह विवाद का विषय बनेगी।

इस घटना से हिन्दुओं के दिल दुःखी हुए हैं। मुसलमान भाइयों को चाहिए कि वे कम से कम अब राम जन्म-भूमि के ताला खुलने को विवाद का रूप न दें और इस ऐतिहासिक सच्चाई को स्वीकार करें कि ये हिन्दुओं के ही मूलभूत धर्म-स्थान हैं। तब मुगल शासकों द्वारा इनका अतिक्रमण किया गया था। कुतुब मीनार से निकली हिन्दू मूर्तियां इसका स्पष्ट प्रमाण हैं।

(पंजाब केसरी से साभार)

निर्भय मन

कांटों से डर जाने वाले,
छालों से घबराने वाले।
बीच राह में ही रुक जाते,
कभी रास्ता बना न पाते ।।

पर जिनमें साहस है, बल है,
निर्भय मन संकल्प अटल है।
उनको कोई रोक न सकता,
पीछे हरगिज मोड़ न सकता ।।

पर्वत झुक जाते राहों में,
बंध जाता सागर बांहों में।
सहमे बादल बरस न पाते,
विघ्न स्वयं पीछे हट जाते ।।

हार मान लेते तूफान,
मुश्किल बन जाती आसान।
बढ़ते पग बढ़ता विश्वास,
मंजिल आती जाती पास ।।

—'फ़रार' बुलंदशहरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस्लामिक मूवमेन्ट

151-सी जाकिर नगर, नई दिल्ली-25

—आचार्य चन्द्रभूषण तिवारी एम. ए. पी एच. डी.

वर्तमान समय में भारत मुसाफिरखाना बन चुका है। जब चाहे कोई आये और जाये, जो चाहे यहाँ के बहुसंख्यक हिंदुओं को गाली दे और चला जाये। वोट के भूखे शासकीय नेता इस पर ध्यान नहीं देते। कुछ अंश व उनके विचार हम आपको दे रहे हैं। (इस्लामिक मूवमेंट वर्ष 2, अंक 8, अप्रैल 86 के अनुसार)

आवरण पृष्ठ 3 के कालम 2 अनुच्छेद 2 पर

"बाबरी मस्जिद के बारे में यह ऐतिहासिक हकीकत है कि वह मुसलमानों की मिल्कियत और उनकी मस्जिद है जिसमें वे साढ़े चार सौ साल से अधिक समय से नमाज अदा करते आ रहे हैं।"

आलोक—उक्त अंश के पढ़ने से स्पष्ट होता है कि उक्त बाबरी मस्जिद राम जन्म भूमि ही है। इस पर चार सौ वर्ष से अधिक समय से बलात् कब्जा मुसलमानों का था जिसका राज्य उसकी दुहाई के कारण अर्थात् सोलहवीं सदी में कब्जा करना इससे स्पष्ट होता है सन् 712 ई. में मु. बिनकासिम भारत पर आक्रमण कर सक्खर के स्थान पर राजा दाहिर से लड़ा और सिंध में देवल, मकरान, मुल्तान, ब्राह्मणाबाद, उच्छ आदि पर कब्जा किया। तभी से देश 1947 तक विवाद के घेरे में रहा और इस प्रकार 1235 वर्षों तक भारत के मूल निवासी हिन्दू को विदेशी शासकों ने रौंदा तथा इनकी संस्कृति और सभ्यता विनष्ट करने का पूरा प्रयास किया।

पत्रिकानुसार आज से साढ़े चार सौ वर्ष से अधिक का अर्थ है सोलहवीं सदी। सिकन्दर लोदी 1489 में गद्दी पर बैठा, 1504 में सिकन्दर लोदी ने आगरा की स्थापना की, 1517 में इब्राहीम लोदी गद्दी पर बैठा, 1526 में बाबर बैठा व मुगलवंश की स्थापना की। 1530 में हुमायूं। शेरशाह 1540 से 4- तक। अकबर 1556 में गद्दी पर बैठा। सलीम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
1605 से 1627 तक अर्थात् उक्त पत्रिका के कथन को भी मान लिया जाय तो स्पष्ट है कि मुस्लिम राज्य के समय ही रामजन्म भूमि पर अवैध कब्जा किया गया।

पुनः पृष्ठ 33 कालम 1 के अनुच्छेद 4 पर—

"अगर कोई मस्जिद दिल दुखाने और चिढ़ाने के लिए बनी हो तो उसकी इस्लाम में इजाजत नहीं। इस्लाम की इन स्पष्ट शिक्षाओं के बाद यह गढ़ा हुआ आरोप कितना हास्यास्पद है कि मुसलमान बादशाहों ने मंदिरों को तोड़कर मस्जिद बनाई है। अगर किसी ने ऐसा किया होता तो उस वक्त के उलेमा उन पर पकड़ करते, उस मस्जिद में नमाज को दुरुस्त न कहते।"

आलोक—उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि बाबरी मस्जिद विवादित है। इसलिए बाबरी मस्जिद कहना दिल दुखाना व चिढ़ाना है। अगर अवैध कब्जा होता हो उलेमा रोकते पर उन्होंने रोका नहीं। इसका सबूत है कि आज भी सीता पाक लिखा है। किसी भी मस्जिद में काले पत्थर व चन्दन की लकड़ी का उपयोग कहीं भी नहीं है न। न सूरज चक्र ही बना हुआ है। सीता पाक देखने से हिंदू भवन का ही आभास होता है न कि मुस्लिम भवन का।

आग भड़काने की कोशिश कर रही पत्रिका का एक अंश पढ़िए। पृष्ठ 34, कालम 2, अनुच्छेद 2 की अन्तिम पंक्तियां—

"अदालत ने यह तय नहीं किया कि मंदिर है या मस्जिद। अतः मुसलमानों को कानूनन यह हक हासिल है कि वे वहां जाकर नमाज पढ़ें, जिस तरह हिंदुओं को दर्शन का हक कानूनन है।"

इनकी भी सुनिए कालम से सवाल-जवाब का अंश आवरण पृष्ठ दो व तीन पर है जिसमें जवाब देने वाला व्यक्ति भागता व घबराता नजर आ रहा है और बार-बार भारतीय दण्ड संहिता की धारा 125 व 127 बदलने तथा संविधान की धारा 44 बदलने की बुलंद आवाज है परन्तु यह आवाज नहीं है कि धारा 302, 304, 379, 380 व 395 आदि में मुसलमानों की सजाए मौत और हाथ-पैर काटने की सजा कुरान के अनुसार दी जानी चाहिए। स्पष्ट है कि मुस्लिम समाज अवसरवादी है और अवसर देखकर नेताओं को चक्कर में डालता और स्वार्थ सिद्ध करता है। ✱

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म–भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र

--बलदेव उपाध्याय

भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र धर्म है। इसशब्द का अर्थ बहुत ही व्यापक है। मानव को पशुओं से पृथक् करने वाला धर्म ही है। मनुष्यों की विशिष्टता दिखलाने वाली वस्तु धर्म ही है। अंग्रेजी भाषा का रिलिजन शब्द इसका वाचक नहीं। रिलिजन शब्द तो केवल बाह्य आचारों के लिए प्रयुक्त होता है। दूसरी ओर धर्म शब्द अनेक महत्वपूर्ण बातों का द्योतक है। भारतीयों का तो धर्म ही प्राण है। धर्म हमारी बुनियादी आवश्यकता है। हम धर्म के ही सहारे अपना जीवन यापन करते हैं। धर्म, अर्थ और काम इस पुरुषार्थत्रय में धर्म ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भारतीय जीवन का मूल तत्व धर्म ही है।

धर्म शब्द देखने में जितना छोटा और सरल है, उसकी परिभाषा उतनी ही कठिन और गम्भीर है। अनेक आचार्यों ने इसकी परिभाषा अनेक प्रकार से की है। धर्म शब्द धृ धातु से निकला है, जिसका अर्थ है धारण करना। जनता को एक सूत्र में धारण करने में ही धर्म की धर्मता है।

धर्म वह पदार्थ है, जिससे भौतिक अभ्युदय और पारलौकिक मोक्ष प्राप्त होता है। हमारे देश में इहलोक और परलोक का बहुत गहरा सम्बन्ध है। जो वस्तु परलोक की उपेक्षा कर इहलोक का ही कल्याण करती है, वह हमारे आदर का पात्र नहीं बन सकती। हमें चाहिए इहलोक और परलोक का सामंजस्य–भौतिक और आध्यात्मिक मंगल की समरसता। हमारा धर्म ही इसका साधन है।

हमारा धर्म संसार के सब धर्मों से श्रेष्ठ है। हमारा धर्म सनातन है। इसीलिए इसका नाम सनातन धर्म है। अपौरुषेय वेद द्वारा नियन्त्रित होने के कारण यह वैदिक धर्म कहलाता है।

वैदिक धर्म के सिद्धान्त

वर्ण—वैदिक धर्म का विशाल प्रासाद वर्णश्रम धर्म की दृढ़ नींव पर आधारित है। सच तो यह है कि वर्णाश्रम धर्म न रहे तो हिन्दू धर्म की सत्ता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही नष्ट हो जाए। आप जानते ही हैं कि वर्ण चार हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

आजकल यूरोपियन देशों में जो उग्र संघर्ष दिखाई देता है, उसका प्रधान कारण यही है कि इन यूरोपियन देशों में वर्णव्यवस्था का सही ढंग से पालन नहीं हो रहा। हमारी वर्णव्यवस्था पूर्णतः मनोवैज्ञानिक और उपादेय है, जिसके पालन से आज भी मानव समाज का कल्याण हो सकता है। आश्रम–हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन को चार भागों में विभक्त किया है–ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम। आश्रम व्यवस्था से हमारा जीवन सुखी और महनीय बनता है।

कर्मवाद

इस संसार में जो विषमता दिखाई देती है, उसकी दार्शनिक समीक्षा करके हमारे ऋषि-मुनियों ने इसका एक मात्र कारण कर्म के सिद्धांत को स्वीकार किया है। आत्मा का बार-बार देह से संयोग और वियोग होता है। जीव के अनेक जन्म हो चुके हैं और आगे भी होंगे। प्राणी ने पूर्व जन्म में जिस प्रकार के कर्म किए हैं, उन्हीं के फलस्वरूप उसके इस जन्म की प्रकृति और भोग नियमित हुए हैं। भगवान ने कर्मानुसार फल की व्यवस्था कर रखी है। कर्म का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है।

जन्मान्तरवाद

हमारे शास्त्रों का विश्वास है कि वर्तमान जीवन ही हमारा प्रथम और अन्तिम जीवन नहीं। गीता में भगवान कृष्ण ने इस सिद्धांत को समझाते हुए स्पष्ट कहा है कि जो मनुष्य पैदा हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मर चुका है, उसका पुनर्जन्म भी निश्चित है। यह सिद्धांत कर्मवाद के सिद्धांत का पोषक और सहायक है। ऐसे लोग आज भी देखे जाते हैं, जिन्हें अपने पूर्व जन्म के वृत्तान्त पूरी तरह याद हैं। इन्हें जाति-स्मर कहा जाता है।

मुक्ति की कल्पना

वैदिक धर्म में मुक्ति ही परम पुरुषार्थ है। दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति ही मोक्ष है। मुक्ति का यह सिद्धांत हमारे वैदिक धर्म को अन्य धर्मों से स्पष्ट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रूप में अलग कर रहा है। इस संसार के प्रपंच से छुटकारा पाने के लिए मोक्ष ही परम आवश्यक वस्तु है।

श्रुति की महिमा

इस आर्य या वैदिक संस्कृति का मूल आधार श्रुति है। श्रुति क्या है? ऋषियों की प्रतिभा सम्पन्न चक्षु द्वारा स्वतः अनुभूत ज्ञानराशि का नाम श्रुति है। ऋषि मन्त्रों के द्रष्टा हैं, कर्त्ता नहीं। परमतत्व का सबसे बड़ा प्रमाण स्वानुभूति ही है। वेद की सत्यता और प्रामाणिकता में विश्वास ही हमारे लिए आस्तिकता का सूचक है। जो वेद की निन्दा करता है, वही नास्तिक है। धर्म का परम प्रमाण श्रुति है। दर्शनों में भी हमारी श्रद्धा है। श्रुति वाक्यों से जिन तत्वों का श्रवण किया जाता है, दर्शनों द्वारा उन्हीं का मनन होता है। ★

राष्ट्रवाद का जागरण ही एकमात्र हल

मुस्लिम समाज के राष्ट्रीयकरण के सारे प्रयत्न तब तक व्यर्थ रहेंगे जब तब भारत का वोट लोलुप नेतृत्व और राजनैतिक दल सामूहिक मुस्लिम वोटों के लालच में मुसलमानों का पृथकतावादी मांगों का समर्थन करते रहेंगे। इसका एकमात्र उपाय राष्ट्रवाद की प्रबल लहर उत्पन्न करना ही हो सकता है। इस देश के राष्ट्रीय हिन्दू समाज के लिए भारत भूमि ही सर्वस्व है। भारत के भविष्य के साथ ही हिन्दू समाज का भविष्य जुड़ी है। यदि हिन्दू जीवन मूल्य, सभ्यता और संस्कृति तथा मानबिन्दुओं की रक्षा करनी है, तो इस बढ़ते संकट का सामना करने का एकमात्र यही उपाय है कि राष्ट्रीय हिन्दू जनमत को जागृत किया जाये ताकि हिन्दू समाज समस्त मत-भेदों को भुला अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए एकजुट होकर खड़ा हो और ऐसे सभी शक्ति केन्द्रों पर प्रहार करने को तत्पर रहे जो इस पृथक्तावादी तत्वों को प्रोत्साहन देकर राष्ट्रीयता और हिन्दुत्व की जड़ें खोखली कर रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिंदू सदा अखंड है

सागर में फिर ज्वार उठा है, लहरें महाप्रचण्ड हैं,
कोई हमें कमजोर न समझे, हिन्दू सदा अखण्ड है।
हमें हमारे महर्षियों ने, ऐसा पाठ पढ़ाया है,
सहन करो कुछ सीमा तक, ऐसा आदर्श बताया है।
युगनन्दन श्रीकृष्णचन्द्र ने सही बहुत-सी गाली,
चला सुदर्शन अरि की गर्दन, तुरत अलग कर डाली।
पल में सब सीधा कर देंगे, कितना भी उद्दण्ड है,
कोई हमें कमजोर न समझे, हिन्दू सदा अखण्ड है।
सागर में फिर··········

उठ चल वीर बढ़ा चल आगे हर ज्वाला अंगारों में,
सीना ताने शेर बढ़ा चल, आंधी और तूफानों में।
नवजीवन सरिता उमड़ेगी, वीर तुम्हारे गातों में,
ऐसा तुमको मन्त्र मिला है, ज्योति जगे फिर प्राणों में।
प्राण दे गया वीर हकीकत, वह भी कैसी होली थी,
बीत रहा था बचपन तब, यौवन ने आंखें खोली थीं।
अपने शौर्य से माताजी की, भरी मांग में रोली थी।
अभी तोतली-सी बोली में, नहीं जवानी बोली थी।
युग-युग तक सन्देश मिलेगा, जीवन भरी कहानी थी।
साहस की सरिता उमड़ा दो, आग लगा दो पानी में,
उठो जवानो जीवन वालो, करने काम जवानी में,
साहस की सरिता उमड़ा दो, आग लगा दो पानी में।

—ताराचन्द प्रेमी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ।।
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता रांम।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहिं काम ।।
चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ।।
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल।
नानक पर गुन गाय ले छाँड़ सकल जंजाल ।।
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार ।।
झूठ बखान कहा करे जग सुहने जियुं जान।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ।।
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगायो धन की ।।
संग सखा सब तज गये कोउ न निबाहियो साथ।
कहु नानक एहुं विपत में टेक एक रघुनाथ ।।

—श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको हरमेस उचरि है, ते सब नरक कुंड महि परि है ।।

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—158, बालकेश्वर मार्ग, तीन बत्ती, बम्बई-400006

1. जावेरी बाजार 2. ग्रांट रोड 3. कोलाबा 4. दादरा टी. टी. 5. बरली नाका 6. सर्कल 7. ठाकुर द्वार 8. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट 9. घाटकोपर (पश्चिम) 10. लिंकिंग रोड, बांदरा 11. रेलवे स्टेशन के सामने, सांताक्रुज (पश्चिम)।

★ कारखाना–'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड, बम्बई-40007

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय एकता और अखंडता की रक्षा कैसे हो ?

—रघुवीरशरण आर्य

हमारी संस्कृति का मुख्य तत्व 'सर्वं आनन्दमयम्' हैं। परमात्मा ने सभी मनुष्यों के एक-से अंग, सबमें एक-सा खून बनाया है, सबका एक-सा शरीर बनाया है। सभी जीवों की एक-सी अजर-अमर आत्मा है। सभी जीव अपने-अपने कर्मफलों के आधार पर पुनर्जन्म प्राप्त करते हैं।

न तो यह संसार क्षणभंगुर है और न जीवन ही क्षणभंगुर है। वेद कहता है अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् (यजु. अ. ३६। मं. २४)

हम सौ वर्ष तक अदीन होकर रहें और परमेश्वर की कृपा से सौ वर्ष के उपरान्त भी हम लोग देखें, जियें, सुनें-सुनायें और स्वतंत्र रहें।

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि
ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥ ऋ. (१०/५३/६)

संसार का ताना-बाना तनता-बुनता हुआ भी प्रकाश के पीछे चल, बुद्धि से बनाये हुए परिष्कृत प्रकाशयुक्त मार्गों की रक्षा कर, निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करने वालों के उलझन रहित कर्म को विस्तृत कर, मनुष्य बन और दिव्य सन्तान उत्पन्न कर।

इसके विपरीत मौलवी कहता है कि मुसलमान बन। पादरी कहता है कि ईसाई बन। बौद्ध कहता है, सब कुछ क्षणभंगुर है अतः बौद्ध बन। इस प्रकार मनुष्यकृत सब मतमतान्तर अपने-अपने मतों से ही मानव के कल्याण की दुहाई देते हैं। बहुदेवतावाद के नाम पर आये दिन हिंसा का नग्न नृत्य होता है। मुसलमानों में शिया-सुन्नी दंगे होते हैं। ईसाइयों में आपस में टकराव होता है। धन-सम्पत्ति का दुरुपयोग हो रहा है। जो आनन्द वेद के अनुसार मानव बनने में है, वह अन्य मत-पंथों में कहां ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे (यजु. ३६/१८)

हम प्राणिमात्र को मित्र जैसी स्नेहमयी आंखों से देखें।

हम अयं निजः परो वेति का अनुसरण करते हुए आज पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा के दास बन गए हैं और यह भूल गए हैं कि ईश्वर हमारे सभी कर्मों को देख रहा है। इस सांसारिक सम्पत्ति और वाहवाही का कोई मूल्य उसकी दृष्टि में इसलिए नहीं है कि संसार में सब कुछ उसी का पसारा है। हम तो दो समय के भोजन के अधिकारी हैं और कर्मफल भोगने वाले आत्मा हैं। ईश्वर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का जन-जन में सृष्टि के ग्रहों, उपग्रहों, वनस्पति के माध्यम से प्रचार-प्रसार कर रहा है। बोलचाल में सभी कहते हैं कि सदा सत्य की विजय होती है या राम (परमात्मा) नाम सत्य है, किंतु विवेकशून्य होकर, क्षणिक लाभ और प्रसन्नता के वशीभूत घृणित कर्म करके आत्मा पर धब्बा लगा लेते हैं और मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति से वंचित रह जाते हैं। इसीलिए हमें चौरासी लाख योनियों के चक्र में पुनः घूमना पड़ता है।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।

जो धर्म का नाश करता है, धर्म उसका नाश करता है और धर्म की रक्षा करने पर धर्म भी रक्षक का कल्याण करता है।

जीवन दर्शन में असहिष्णुता पनपती जा रही है। हम मानव धर्म को भूलकर पथ भ्रष्ट हो रहे हैं। एक सम्प्रदाय वाला दूसरे सम्प्रदाय की न केवल निन्दा करता है, अपितु अपने उत्कर्ष के लिए दलबन्दी करता है और दूसरों के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न करके दंगे कराता है।

राष्ट्रीयता का पोषक सम्प्रदायवाद की संकीर्णता से मुक्त होता है। वह राष्ट्र में रहने वाली प्रत्येक जाति, धर्म, प्रान्त या भाषा-भाषी को एक परिवार की दृष्टि से देखता है। हमारे जीवन में सन्मति और सद् बुद्धि का विशेष महत्व है। जब मनुष्य में दुर्बुद्धि का उदय होता है, तब वह विध्वंसात्मक दृष्टिकोण अपना लेता है।

राष्ट्र के हित में जीना, कार्य करना, सर्वस्व समर्पित करना हर नागरिक का धर्म है।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन्मभूमि की समता कोई वस्तु नहीं कर सकती।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी और 'मातृदेवो भव' हमारे पुरातन आदर्श रहे हैं। राष्ट्रीयता का सम्बन्ध उदार मानवीयता से है।

हमारा राष्ट्र इस समय चरम संकट के दौर से गुजर रहा है। आतंकवाद कई वर्षों से हम पर हावी है। असम समस्या आज भी विदेशी और स्वदेशी के प्रश्न पर ज्यों की त्यों है, गोरखालैंड की मांग जोर पकड़ रही है, हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा मानने के प्रश्न पर आये दिन तकरार होती है।

आखिर इन सब समस्याओं के मूल में क्या कारण है? सरकार इन पर आम जनता से राय क्यों नहीं मांगती? कुछ प्रश्न हैं, जिनका उत्तर मिलना चाहिए। स्वार्थ से प्रेरित अंग्रेजों की नीति 'फूट डालो—राज्य करो' का अनुसरण, घिनौनी राजनीति, धर्मगुरु और व्यापारी क्यों कर रहे हैं? क्या उनका इस देश के प्रति कोई दायित्व नहीं? क्या यहां के निवासियों का जन्मभूमि के प्रति कोई दायित्व नहीं?

पाकिस्तान क्या भारत का ही अंग नहीं था, जो वह आतंकवादियों को प्रशिक्षित कर रहा है और आये दिन कश्मीर आदि समस्यायें खड़ी करता रहता है? क्या वह १९६५ के दिनों को भूल गया?

राजनैतिक दल सस्ती वाहवाही के लिए क्यों भड़काने वाले कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं? क्या उनके पास कोई रचनात्मक कार्यक्रम नहीं, जिससे भारत की गरीबी दूर हो सके। या उन्हें कुर्सी ही चाहिए? क्या वे जनता शासन काल को भूल गये, जिसमें वे कुर्सियां न संभाल पाये थे।

धर्मोपदेशक भी धर्म की आड़ में मनुष्यों के हृदय में संकीर्णता भरकर दंगे कराते रहते हैं। ऐसे लोगों से हमें सावधान रहना चाहिए और उनका बहिष्कार करना चाहिए।

कुछ असामाजिक तत्व अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए तनाव बढ़ाते रहते हैं, क्योंकि ऐसा कराने से उनकी रोजी-रोटी चलती रहती है। ऐसे देशद्रोहियों को इस देश में रहने का कोई अधिकार नहीं। ऐसे लोगों को कठोर से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कठोर दंड की (मृत्यु दंड तक की) व्यवस्था होनी चाहिए। रामायण काल में रावण के अत्याचारों से त्रस्त जनता की रक्षा के लिए ही राम ने राक्षसों का वध किया था और दुर्योधन आदि कौरवों के अन्याय की वृद्धि को रोकने के लिए कृष्ण ने महाभारत का युद्ध कराया था। देश की एकता को खण्डित करने में भाषा विवाद का भी योगदान रहा है। जब तक एक राष्ट्रभाषा नहीं होगी, राष्ट्रीय एकता पर प्रश्नचिह्न लगा ही रहेगा। आज भी हमारे मस्तिष्क अंग्रेजी भाषा, पहनावे, रीति-रिवाजों और जीवन-दर्शन के गुलाम हैं ?

इस महत्वपूर्ण पक्ष को लेकर ही बंगाल के केशवचन्द्र सेन, बंकिमचन्द्र चटर्जी, गुजरात के महर्षि दयानन्द सरस्वती व श्री मोहनदास करमचंद गांधी, महाराष्ट्र के लोकमान्य तिलक आदि अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों के निवासियों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद के उपयुक्त ठहराया था।

जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि चुनाव के बाद उतना जन-संपर्क और सभायें नहीं करते, जितनी चुनाव से पूर्व करते हैं। सुविधाओं के नाम पर निर्धन जनता पर बोझा बना रहना कहां तक उचित है ?

बडे-बडे उद्योग लगाकर श्रमिकों को बेरोजगार करना, गैसों के रिसाव से अकाल मृत्यु या पर्यावरण को प्रदूषित करना, पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति का संचार माध्यमों से प्रसार क्या खाली दिमाग को शैतान का घर नहीं बना रहे। क्या आम आदमी को जीवन रक्षक सुविधायें प्राप्त हैं ? क्या नारी को उचित सम्मान मिल रहा है ?

क्या प्रशासक भ्रष्टाचार जैसे दानव को दिन-दूना रात-चौगुना प्रोत्साहन नहीं दे रहे ? क्या तुष्टीकरण की नीति इन सब बातों को बढ़ावा नहीं दे रही ?

क्या आज के राजनेता राष्ट्र पर सर्वस्व निछावर करके निष्काम सेवा करने को तैयार हैं ? क्या परिस्थितियों को देखते हुए भारतीय संस्कृति के आधार पर संविधान की पुनर्रचना नहीं हो सकती ? क्या कुरीतियों और दहेज, आतंकवाद, वर्गभेद, कर्ज लेने आदि फणों से युक्त सर्प को कुचला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं जा सकता ? क्या रक्षक भक्षक बनने के स्थान पर सुराज्य की स्थापना करने में समर्थ नहीं ?

दुनिया में कोई भी कार्य असम्भव नहीं। इसके लिए हमें मृत्यु के भय को हृदय से निकालना होगा, लोकैषणा की वृत्ति को समाप्त करना होगा, कथनी-करनी को एक करके 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श को चरितार्थ करना होगा। वोट और धर्म के नाम पर किये जाने वाले घिनौने कृत्यों को समाप्त करना होगा। राजनेताओं को दीन-हीन की कुटिया में जाकर दरिद्रनारायण की सेवा करनी होगी। वानप्रस्थी शिक्षक नियुक्त करने होंगे। जनसंख्या में वृद्धि रोकने के लिए २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का नियम चलाना होगा। विदेशी कर्ज समाप्त करने के लिए सादा जीवन अपनाते हुए मूल्यवान् उत्पादनों का निर्यात करना होगा। युवाशक्ति को उत्पादन के कार्य में लगाना होगा। सबके लिए रोटी, कपड़ा, मकान, चिकित्सा और शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी। विदेशी भाषा, पहनावे, रहन-सहन को छोड़ कर भारतीय होने पर गर्व करना होगा। भाग्यवाद की समाप्ति कर जन-जीवन को कर्मयोग से जोड़ना होगा। नशेबाजों को नशे से मुक्त कराना होगा। तभी भारत के दुर्दिन समाप्त होंगे और हम 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय' के पथ पर बढ़ सकेंगे। □

भारत हिन्दुओं का स्थान

महोदय,

जब देश का बंटवारा हुआ तो यह दो सम्प्रदायों के बीच हुआ था। उस समय विधिवेत्ता डा० आम्बेडकर ने कहा था कि पाकिस्तान से सारे हिन्दू भारत में आ जाएं और भारत से सारे मुसलमान पाकिस्तान चले जायें। श्री चागला स्वयं मुसलमान होते हुए भी हिन्दू धर्म की कद्र करते थे। वे मुख्य न्यायाधीश तथा केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में रह चुके थे। वे खुले तौर पर कहा करते थे कि मुसलमानों को कौमी धारा में शामिल होकर देश सेवा करनी चाहिए। परन्तु उनकी किसी ने न सुनी। कोई देश ऐसा नहीं है, जिसमें 80 प्रतिशत संख्या वाले लोग देश को अपने नाम से सम्बोधित न करते हों। भारत ही एक ऐसा देश है, जो हिन्दुओं का स्थान होते हुए भी संवैधानिक रूप से हिन्दुस्थान घोषित नहीं किया गया।

—जयदेव पत्रकार, जींद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू मतान्धता को धर्म नहीं मानता

—डा. सर्वेपल्ली राधाकृष्णन्

हिन्दू मतांधता को धर्म नहीं मानता। यह उन लोगों को अधार्मिक या नास्तिक नहीं समझ लेता जो पूर्णतः उसके विचार के समर्थक नहीं। जब हम किसी बात पर हठधर्मिता प्रकट करने लगते हैं, तो उसका कारण श्रद्धा-भक्ति नहीं होती, वरन् दृष्टिकोण की संकीर्णता, कड़ाई और अनुदारता होती है। विश्वास से पूर्ण होते हुए भी हिन्दू मतावलंबी कठोर निर्णय से दूर ही रहता है।

संसार में विभिन्न प्रकार के जो धर्म फैले हैं, वे अब समीप आ गए हैं। पारस्परिक संघर्ष और प्रतियोगिता को मिटाने के लिए आवश्यक है कि उनमें वैचारिक सहिष्णुता की भावना का विकास हो। इससे इनका पूर्वाग्रह मिटेगा, आपस की गलतफहमी दूर होगी और वे एक ही सत्य की विविध अभिव्यक्तियों के रूप में एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हो जायेंगे। हिंदू धर्म के विकास में सहिष्णुता की यह भावना सतत पाई जाती रही है। यह धर्म गत पांच सहस्र वर्षों से अखंड रूप से विकसित हो रहा है। हिंदू संस्कृति की भूतकालीन शक्ति और निरन्तरता तथा उसकी वर्तमान दुर्बलता और अव्यवस्था—दोनों ही समस्यायें समान रूप से विचरणीय हैं। किंतु, वास्तव में, उसकी दुर्बलता उसकी शक्ति के विपरीत नहीं है। हिंदू धर्म किसी प्रजातिगत समस्या पर आधारित नहीं। इसे उत्तराधिकार में ऐसी विचारणा और ऐसी महत्वाकांक्षायें प्राप्त हैं, जिनमें भारत की प्रत्येक प्रजाति ने अपना योगदान किया है।

अनन्त ब्रह्म के प्रतीक

दूसरे मतों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति की सैद्धांतिक व्याख्या ऋग्वेद में प्रस्तुत की गई है। "सत्य (ईश्वर) एक है, इसे पंडित लोग अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि विविध नामों से पुकारते हैं।" आगे कहा गया है कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"पुरोहित और कविगण बहुत-सी प्रच्छन्न वास्तविकताओं (सत्यों) को, जो एक ही सत्य के विभिन्न रूप हैं, अपने शब्दों में प्रकट करते हैं।" एक ही सत्य है जिसे लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से कहते हैं (वदन्ति) और कल्पना करते हैं (कल्पयन्ति)। उपनिषदों का भी दृष्टिकोण है। ब्रह्म के एकत्व पर तो जोर दिया गया है, पर उसका अलग-अलग प्रकार से वर्णन करने की अनुमति दी गई है। यह कहा जाता है कि निरपेक्ष सत्य का प्रकाश जब विकृत मानव-प्रकृति से होकर गुजरता है, तब वह भी विखंडित हो जाता है। ब्रह्म के असीम अस्तित्व में वे सारी संजीव शक्तियां निहित हैं जिनको लोगों ने देवताओं के रूप में पूजा है। ऐसा नहीं कि वे देवता एक-दूसरे से भिन्न अगल-बगल खड़े हों, वरन् हर देवता एक पहलू है, जो संपूर्ण को प्रतिबिम्बित करता है। जितने भी देवता हैं, वे सब उसी एक असीम, अनन्त ब्रह्म के प्रतीक हैं।

अन्धों का वर्णन

इस उदार दृष्टिकोण को बुद्ध ने भी स्वीकार किया है। एक बार बुद्ध ने एक दृष्टांत-कथा सुनाई। काशी का एक राजा था। एक दिन उसने अपना मन बहलाने के लिए बहुत-से जन्मान्ध भिखारियों को बुलाया और उनसे कहा कि जो कोई एक हाथी का सही-सही विवरण दे सकेगा, उसे पुरस्कृत किया जायेगा। पहला भिखारी जब हाथी को जांचने के लिए चला, तो संयोग से उसका हाथ उसके पैर पर पड़ा, अतः उसने राजा को बताया कि हाथी वृक्ष के तने के समान होता है, दूसरे भिखारी के हाथ पूंछ लगी, उसने कहा कि हाथी तो एक रस्सी की तरह होता है, तीसरे ने हाथी के कान को जा पकड़ा और बोला कि हाथी तो ताड़ के पत्ते के समान होता है। इसी प्रकार उन अन्धों ने अपने-अपने ढंग से हाथी का वर्णन किया। सभी अपनी-अपनी बात पर अड़ गए, उनमें झगड़ा होने लगा, और यह देखकर राजा का अच्छा दिल-बहलाव हुआ। जो साधारण गुरु होते हैं, वे सत्य के इस या उस पक्ष को ही जान सके होते हैं, और उसी को देखकर आपस में झगड़ते हैं— केवल बुद्ध ही उस पूर्ण सत्य को जान सकते हैं। धर्मशास्त्रीय विषयों पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाद-विवाद करते समय हम आपस में लड़ने-झगड़ने वाले उन अन्धे भिखारियों के समान हो जाते हैं। सत्य का पूर्ण दर्शन करना कठिन है, बुद्ध तो विरले ही लोग होते हैं। अशोक ने अपने आदेश में बौद्ध विचारों को ही वाणी दी है : "जो मनुष्य अपने धार्मिक संप्रदाय के प्रति अधिक मोह के कारण, अपने संप्रदाय के गौरव को बढ़ाने की नीयत से दूसरों के संप्रदायों की निन्दा करता है और अपने संप्रदाय का सम्मान करता है, वह मनुष्य वास्तव में, इस आचरण से अपने ही संप्रदाय को भारी क्षति पहुंचाता है।"

भावना से भगवान

"रामायण" और "महाभारत" महाकाव्यों में हिन्दू धर्म के प्रसार का वर्णन आया है। यद्यपि उनमें पौराणिक आख्यानों की धुंध में इतिहास के तथ्य अस्पष्ट हो गए हैं, तथापि उन महाकाव्यों में एक ऐसे महान युग का चित्रण है जो संघर्ष, प्रवास और सामंजस्य का युग था। ऐसे ही उथल-पुथल-पूर्ण युग में से एक ऐसी सभ्यता का विकास हुआ जिसके विचार तो पुराने थे, पर उन्हें नई समस्याओं के अनुरूप ढाला गया था। भारत की सांस्कृतिक विजय का युग जब तक समाप्त हुआ, सभ्यता में जीवन-मूल्यों का भी परिवर्तन हो चुका था। समस्त वातावरण में श्रद्धा और भक्ति की भावना ओत-प्रोत हो उठी। ब्रह्म की पूजा नाना नामों एवं रूपों में होने लगी। भगवद् गीता के अनुसार हम भगवान की उपासना चाहे जिस विधि से करें, भगवान तो हमें हमारी भावना के अनुसार प्राप्त होता है, क्योंकि जिन रास्तों पर हम उसके लिए भटकते फिरते हैं, वे सारे रास्ते भी तो उसके ही हैं।"

जरदुश्त मत (पारसी धर्म) के अनुयायियों पर जब मुसलमानों ने अत्याचार करना आरंभ किया और उन्हें उनके देश से निकाल बाहर किया, तब उन्होंने भारत में आकर शरण ली। स्थिति यह है कि सारे संसार में केवल भारत में इस मत के अनुयायी मिलते हैं। कहा जाता है कि सबसे पहले वे संजम में 716 ई. में आए और वहां उन्होंने अग्निदेव का प्रथम मन्दिर वहां के हिन्दू राजा की सहायता से बनवाया। जबकि पारसी लोग इस देश में शरणार्थियों के रूप में आये, मुसलमान और ईसाई विजेताओं के रूप में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं ने इस्लाम के साथ भी सहिष्णुता ही दिखाई। यह उसी मजहब के एक अनुयायी के शब्दों में पढ़िये–

("कालीकट के) लोग काफिर हैं, फलतः मैं (फारस के राजा की ओर से पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य में भेजा गया राजदूत अब्दुल रज्जाक) अपने को शत्रु-देश में अनुभव करता हूं, क्योंकि मुसलमान हर उस आदमी को अपना शत्रु समझता है जो कुरान को स्वीकार नहीं करता। फिर भी मैं स्वीकार करता हूं कि लोगों में काफी सहिष्णुता है, लोग मुझसे अच्छी तरह पेश आते हैं, मुझ पर उनकी कृपा है, हमारी दो मस्जिदें हैं और हम खुलेआम नमाज पढ़ सकते हैं।"

वही सच्चा हिन्दू है

यद्यपि इस्लाम और ईसाइयत दोनों धर्मों के लड़ाकूपन के कारण कभी-कभी हिन्दू धर्म में प्रतिक्रियास्वरूप उसी तरह की प्रवृत्ति दिखाई देती है, तो भी उसमें सामान्यतया दूसरे धर्मों को सहानुभूति से समझने और उनकी सच्चाई को स्वीकार करने की भावना मिलती है। रामकृष्ण परमहंस ने विभिन्न धर्मों के साथ प्रयोग किया, अपने ऊपर सबको जांच कर देखा और यह जानना चाहा कि उनमें स्थायी मूल्य की कौन-सी बातें हैं। उन्होंने कुरान की शिक्षाओं के अनुसार ध्यान-मनन किया और उसके धार्मिक अनुष्ठानों का अभ्यास भी किया। उन्होंने ईसाई धर्म का भी अध्ययन किया और ईसाई वैरागी की तरह रहकर भी देखा। रामकृष्ण परमहंस के अनुयायी संन्यासी उस प्रत्येक आराधना में सम्मिलित हो जाते हैं जो शुद्ध और भली होती है। वे कृष्ण, क्राइस्ट और बुद्ध के जन्म-दिवस मनाते हैं। कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शांतिनिकेतन के मुख्य द्वार पर यह लेख अंकित है—"इस स्थान में न केवल किसी भी प्रतिमा की पूजा की जाएगी वरन् किसी भी धर्म से घृणा भी नहीं की जाएगी। गांधी जी कहते हैं कि "यदि मुझसे कोई हिन्दू-मन की परिभाषा देने के लिए कहे, तो मैं बस यही कहूंगा—अहिंसात्मक विधियों से सत्य की शोध करना। कोई आदमी ईश्वर में विश्वास करे या न करे, फिर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी वह अपने को हिन्दू कह सकता है। सत्य की कठोर साधना का नाम हिंदू धर्म है।" हिन्दू धर्म "सत्य का धर्म है, सत्य ही ईश्वर है। ईश्वर के विषय में तो आप एक बार भले ही कह लें कि वह नहीं है, पर सत्य से आप कैसे इनकार कर सकते हैं ?" उन्होंने "हरिजन" में लिखा था कि "मैं जैसे गीता में विश्वास करता हूं, वैसे ही बाइबिल में भी। मैं अपने धर्म को तो सच्चा मानता ही हूं, परन्तु साथ ही यह भी मानता हूं कि संसार के सारे महान् धर्म भी सच्चे हैं। जब इनमें से किसी धर्म का मखौल उड़ाया जाता है, जैसे आजकल उन धर्मों के अनुयायी द्वारा ही होता है, तो मुझे इससे चोट पहुंचती है।" सच्चे हिंदू के लिए कदाचित् ही कोई ऐसा स्थान होगा जहां वह चुपचाप ईश्वर की पूजा न कर सके, शायद ही ऐसी कोई प्रार्थना होगी जिससे वह श्रद्धापूर्वक सम्मिलित न हो सके।

इस सहनशील दृष्टिकोण के कारण स्वयं हिंदू धर्म सभी प्रकारों और सभी स्तरों की धार्मिक उच्चाकांक्षाओं और प्रयत्नों की एक पच्चीकारी बन गया है। हिन्दू धर्म ने मनुष्य की प्रत्येक आवश्यकता के अनुरूप अपने को ढाल लिया है। मनुष्य ईश्वर की जितने रूपों में कल्पना कर सकता है, उन रूपों का अपने भीतर समावेश करने की उसने चेष्टा की है और इतना होने पर भी विभिन्न ऐतिहासिक रूपों को उसने ब्रह्म के ही प्रकार, उसी के निस्सरण तथा पक्ष मानकर अपनी एकता बनाए रखी है।

जो मनुष्य आस्थावान् होगा, चाहे वह हिन्दू हो या बौद्ध, मुस्लिम हो या ईसाई, उसके जीवन में निश्चितता होगी, विश्वास का एक संबल (धर्म) उसे प्राप्त होगा। फिर भी इन दो युग्मों में अन्तर है। संस्कृत हिन्दू और बौद्ध पूजा-आराधना के अपने से भिन्न रूपों के प्रति भी सहानुभूति और समादर की भावना रखते हैं। वे आलोचना और तिरस्कार का रुख नहीं अपनाते। इस मैत्रीपूर्ण सहानुभूति का अर्थ यह नहीं है कि हिन्दुओं में अनुभूति और विचार की गहराई कम है। सहानुभूति और सहिष्णुता की भावना अनुभूति और विचार के साथ असंगत नहीं है। हिन्दू मतान्धता को धर्म नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानता। यह उन लोगों को अधार्मिक या नास्तिक नहीं समझ लेता जो पूर्णतः उसके विचार के समर्थक नहीं है। जब हम किसी बात पर हठधर्मिता प्रकट करने लगते हैं, तो उसका कारण श्रद्धा-भक्ति नहीं होती, वरन् दृष्टिकोण की संकीर्णता, कट्टरता और अनुदारता होती है। विश्वास से पूर्ण होते हुए भी हिन्दू मतावलंबी कठोर निर्णय से दूर ही रहता है।

हिन्दू लोग अपने विचारों को दूसरों पर थोपने से हिचकते हैं। इसका कारण यह नहीं कि वे केवल मानवीय अपूर्णता को रियासत देते हैं या मानवीय दुर्बलता के प्रति उनमें संवेदना तथा मानवीय भूलों के प्रति उनमें सहानुभूति है। यदि लोग अपने छोटे-छोटे संकीर्ण धार्मिक दायरों में ही अपने को सुरक्षित और सुखी महसूस करते हैं, तो हमारा यह काम नहीं कि हम उन दायरों में से उन्हें बाहर घसीट लायें। हालांकि हमारे लिए यह आनन्द का विषय है कि हम खुद उन दायरों से बाहर हैं, हिन्दुओं का यह दृष्टिकोण नहीं।

हिन्दू धर्माबलंबी नास्तिक तक को अपने धर्म में सम्मिलित कर लेता है, क्योंकि उसका विश्वास है कि यदि नास्तिक अपने सत्य-बोध के प्रति निष्ठावान है और सच्चे अर्थ में उसमें अन्तर्मुखता आ जाती है, तो वह अपनी आस्था की त्रुटि को देर-सवेर समझ ही लेगा। अस्तिवाद और नास्तिवाद एक-दूसरे के कितने ही विपरीत क्यों न जान पड़ें, पर वे केवल ऊपरी बौद्धिक धरातल पर समान रूप से युक्तिसंगत जान पड़ते हैं।

हिन्दुओं और मुसलमानों में जो संघर्ष हैं, जो हाल के दिनों में अधिकता से होने लगे हैं, वे हमें लज्जा और दुःख से भर देते हैं। धार्मिक प्रश्नों के साथ राजनैतिक और आर्थिक बातें भी आ जुड़ी हैं। भारत के संविधान ने जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों को उनकी संख्या के अनुपात से राजनैतिक शक्ति या प्रतिनिधित्व दिया गया है, इस तनाव को और बढ़ाने में मदद की है। आत्माओं की पुकार और पदों की छीना-झपटी की होड़ आज गडमगड्ड हो रही है। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह भव्य भारतवर्ष है

जो पुण्य भूमि प्रकर्ष है, वह भव्य भारतवर्ष है।
कन्याकुमारी है चरण, कश्मीर जिसका स्वर्ग है,
है बिन्ध्य जिसकी मेखला, हिमवान् जिसका गर्व है।
गंगा गले का हार है, पगतल पै पारावार है,
सूरज उतारे आरती, आलोक का जो पर्व है।

जिसकी अजन्ता आन है, गंगोत्री अभिमान है,
रामेश्वरम् दक्षिण दिशा में देश की पहचान है।
केदार, बद्रीनाथ, पारसनाथ का यह स्थान है,
द्वारावती है दाहिने, बायें पुरी की शान है।

मथुरा अयोध्या जिस धरा पर जन्म का उत्कर्ष है। जो पुण्यभूमि…
जिसका तपोवन ज्ञान के उद्घोष का ही स्थान है,
है विश्व जिसके वेद का करता अजस्र बखान है।
नित शरण ही देता रहा जिसका अतिथि भगवान् है,
जो है दया का स्रोत अभिनव शान्ति का उत्थान है।

जो है अहिंसा का सदा से दे रहा उपदेश है,
चलता जहां पर बुद्ध-गांधी का सदा निर्देश है।
इन्सानियत के फर्ज पर जिस देश का परिवेश है,
सत्यं शिवं और सुन्दरम् जिस भूमि का संदेश है।

जो न्याय पर लेकर चला सद्धर्म का आदर्श है। जो पुण्यभूमि…
नन्दन जहां वन्दन करे चन्दन सरीखी धूल है,
जो लोक का आलोक है, जो शोक के प्रतिकूल है।
नित नेह के अनुकूल है उसके लिए जो फूल है,
लेकिन अनय-अन्याय के प्रतिकार में जो त्रिशूल है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है कृष्ण जिसकी आत्मा, अवधेश जिसका प्राण है,
गीता सदा से ही रही, जिसके अनय का त्राण है।
जो धर्म के अभि-उदय के अभियान का अभिज्ञान है,
उस राम के शुभ नाम से जो देश गरिमावान् है।

जो विजय की दशमी मना कर प्रकट करता हर्ष है। जो पुण्यभूमि···
जो राज्य वैभव त्याग कर करता अरण्य निवास है,
जो काल रावण का बना, जो धर्म का विश्वास है।
जो दे रहा जनतन्त्रहित निज प्रिया को बनवास है,
जिसके कन्हैया प्रेम में पागल वो सूरजदास है।

रसखान, मीरा, ताज तक का जो अनन्य हुलास है,
सत्कर्म करना मात्र जिसके ज्ञान का निःश्वास है।
जो ग्लानि का उपहास ह, जो धर्म का परकाश है,
जो त्याग का इतिहास है, निष्काम कर्म बिलास है।

जिसकी भृकुटि की वक्रता अरि के लिए दुर्धर्ष है। जो पुण्यभूमि···
जिसमें सती का तेज है, जिसमें कि जौहर ज्वाल है,
है लक्ष्मीबाई जहां, जो क्रांति है भूचाल है।
लाखों शहीदों के लहू से हो रहा जो लाल है,
जो काल का भी काल है, आजाद है विकराल है।

जिसमें हकीकत राय, गुरुवर तेग का बलिदान है,
अशफाक बिस्मिल जिस धरा पर हो रहे कुर्बान हैं।
जिसमें भगत-सा वीर है, आजाद-सा बलवान् है,
जो इस धरा का मान है, वह देश हिन्दुस्तान है।

जिसमें शिवा की गर्जना, पतवार का संघर्ष है। जो पुण्यभूमि···

—नरसिंह नारायण पाण्डे (चंचल बलरामपुरी)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुस्तानी के धोखे में हिन्दुस्तान नहीं बंट जाये

नये वर्ष की नूतन वेला में संकल्प नया दोहरायें,
अपना हिंदुस्तान एक है फिर से इसे अखंड बनायें।

हिन्दुस्तानी के धोखे में हिंदुस्तान नहीं बंट जाये,
पाकिस्तान कट गया जैसे, खालिस्तान नहीं कट जाये।

छिपे हुए इन गद्दारों से सावधान हो जाओ,
अपना देश न अपना समझे उसको मार भगाओ।

मत-पन्थों के कट्टरपंथी सांपों के विष-दन्त तोड़ दो,
हिंदी के विरोध में आयें उनको उलटे मुंह मरोड़ दो।

हिंदू-मुस्लिम सिक्ख-ईसाई भाई-भाई हम कहलायें,
आपस में क्यों खून बहा कर हम आतंक यहां फैलायें।

भाषा और धर्म का महा भयंकर भूत तुरन्त भगायें,
मानवता के नैतिकता के सुन्दर फूल अजस्र खिलायें।

संप्रदायवाद की घातक जड़ें कभी न जमने पायें,
नये वर्ष की नूतन वेला में संकल्प नया दोहरायें।

अपना हिन्दुस्तान एक है इसे अखंड बनायें,
जन-जन की फिर नई आश में जीवन नया जगायें।

हिन्दुस्तानी के धोखे में हिन्दुस्तान नहीं बंट जाये,
पाकिस्तान कट गया जैसे खालिस्तान नहीं कट जाये।

—डा. रतनलाल 'रतनेश'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डी०ए०-वी० नैतिक शिक्षा संस्थान का शुभारम्भ

नई दिल्ली। आर्यसमाज के यशस्वी संन्यासी अमर स्वामी जी ने आर्य-समाज, मन्दिर मार्ग में डी. ए.-वी. नैतिक शिक्षा संस्थान का शुभारम्भ करते हुए कहा कि केवल निष्ठावान अध्यापकों एवं उपदेशकों से ही आर्य सिद्धान्तों का प्रचार सम्भव है। उपदेश और उपदेशक के बिना कभी अच्छा प्रचार नहीं चल सकता।

समारोह के अध्यक्ष पद से बोलते हुए प्रो. वेदव्यास जी ने कहा कि डी. ए.-वी. कालेज प्रवन्धकर्त्री समिति की हार्दिक कामना है कि स्कूलों और कालेजों के माध्यम से आर्यसमाज के सन्देश का खूब प्रचार हो। कमेटी ने इस दिशा में पर्याप्त कार्य किया है।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. वलभद्र कुमार हूजा ने कहा कि इस संस्थान के माध्यम से वेद का अमर सन्देश सर्वत्र फैलेगा।

डी. ए.-वी. कालेज कमेटी के संगठन सचिव दरवारीलाल जी ने कहा कि हमारी संस्थायें आर्यसमाज के प्रचार की साधन हैं।

श्री क्षितीश वेदालंकार (पत्रकार) ने कहा कि प्रत्येक युग की अपनी चुनौती होती है। जो इस चुनौती का सामना नहीं करते वे इतिहास के पन्नों में विलीन हो जाते हैं। इस चुनौती का सामना डी. ए. वी. कालेज कमेटी ने किया है।

आर्य विद्या सभा के मंत्री प्रि. तिलकराज गुप्त ने आशा प्रकट की कि इस संस्थान के माध्यम से वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रचार को बल मिलेगा। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिटा सकते हो क्या ?

मैं सोता सिंह जगाऊंगा, तुम उसे सुला सकते हो क्या ?
मैं घर-घर आग लगाऊंगा, तुम उसे बुझा सकते हो क्या ?
मैं हिन्दू राष्ट्र बनाऊंगा, तुम उसे मिटा सकते हो क्या ?

मैंने देखा औरंगजेब, अकबर को भी हमने देखा
नादिर की नादिरशाही को, शत वर वार करते देखा
तैमूरलंग चंगेजों को, प्रतिवार वार करते देखा

आंखों देखा पंजाब कांड, तुम उसे भुला सकते हो क्या ?
मैं हिन्दू राष्ट्र बनाऊंगा, तुम उसे मिटा सकते हो क्या ?

पद्मिनी हुई क्यों भस्म, साथ रानी दुर्गा अंगारों में
जंगल-जंगल राणा घूमे, क्यों शिवा थे कारागारों में
गुरु गोविन्द के दोनों बच्चे क्यों चुने गये दीवारों में

उन पृथ्वीराज के वधिकों को, तुम मित्र बना सकते हो क्या ?
मैं हिन्दू राष्ट्र बनाऊंगा, तुम उस मिटा सकते हो क्या ?

यज्ञोपवीत अठहत्तर मन, किसने तोले हैं ध्यान हमें
दस कोटि यवन भारत-भू पर किस कारण हैं है ध्यान हमें
यों उठा न रक्खा हैं कुछ भो पर हुआ बताओ क्या बोलो।
मैं हिंदू राष्ट्र बनाऊंगा तुम उसे मिटा सकते हो क्या ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शहीद भाई मतिराम

हिन्दू धर्म और हिन्दुत्व की अमरता अनायास ही नहीं है। श्रेष्ठ हिन्दू जीवन दर्शन और परम्पराओं की रक्षा के लिए हिन्दू वीरों ने असंख्य बलिदान दिये हैं। उनके बलिदानों से ही हिन्दुत्व का तेज हजारों वर्ष से उद्दीप्त है। श्री मदनगोपाल सिंघहल की कलम से ऐसे ही कुछ वीरों की बलिदान कथाएं यहाँ प्रस्तुत की जा रही हैं – सम्पादक।

औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं पर होनेवाले अत्याचार अपनी अन्तिम सीमा पर पहुंच चुके थे। वह हिन्दुओं के इस देश को हिन्दू-शून्य बनाने का निश्चय करके ही गद्दी पर बैठा था।

मुल्ला और मौलवी एक हाथ में कुरान और दूसरे में तलवार लेकर मस्जिदों से निकल पड़े थे।

रास्ते चलते हिन्दुओं के सिर की चोटियाँ काट ली जाती थीं और जो मना करता था उसका सिर उड़ा दिया जाता था, उनके यज्ञोपवीत तोड़ दिए जाते थे और जो ऐसा करने से रोकता था उसके कंधे को ही कुल्हाड़े का निशाना बना दिया जाता था। कहते हैं कि प्रतिदिन सवा मन जनेउओं की होली फूंक कर ही औरंगजेब भोजन करता था।

हिन्दू का स्वाभिमान नष्ट होता जा रहा था। अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करने की उसकी शक्ति ही लुप्त हो रही थी।

औरंगजेब के शासन में जीवित रहने का अधिकार केवल मुसलमान को ही प्राप्त था।

और लाहौर में बैठा मतिराम यह सब कुछ देख रहा था।

उसने देखा मृत्यु के डर से काँपते हुए हिन्दुओं को चोटी कटाते हुए और कलमा पढ़ते हुए। उसकी आत्मा तड़प उठी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह चीख उठा—'प्रभु ! प्रभु !! मुझे बल दो कि मैं इस अन्याय का प्रतिकार कर सकूं।'

'किन्तु इसके लिये बलिदान देना होगा मतिराम !' उसके हृदय ने कहा।

'दूंगा, मैं वह बलिदान भी दूंगा।' मतिराम कह उठा—'किन्तु हिन्दू-समाज में धर्म की रक्षा में मर जाने की भावना भर दो सर्वशक्तिमान्।' उसने अपने हृदय में विराजमान अपने आराध्यदेव के आगे अपना मस्तक झुका दिया।

मतिराम अपनी आन्तरिक प्रेरणा से अपना बलिदान देने के लिये उतावला हो उठा। वह लाहौर से आगरे आ गया। औरंगजेब भी उन दिनों आगरे में ही था।

वहां आकर उसने कुरान के आगे सिर झुकाते हुए निर्बल और असंगठित हिन्दुओं को ललकारा—'कायर कहीं के, मौत से डर कर अपना धर्म छोड़ते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आती ?'

मुसलमान हंस पड़े—'तो तू है वह जो मौत से नहीं डरता।' उन्होंने व्यंग्य भरे शब्दों में कहा।

'हां, मतिराम कह उठे—''मुझे मुसलमान बना सको तो मैं समझूं तुम्हारी वीरता।''

मतिराम बन्दी बना लिया गया। काफिरों को इस्लाम की शरण में आने से रोकने का उद्योग करने का अभियोग लगाया गया उसके ऊपर। निर्णय के लिये वह आगरे से देहली भेज दिया गया।

लोहे की रस्सियों से जकड़ा हुआ मतिराम देहली के हाकिम अलफखां के दरबार में उपस्थित किया गया।

काजियों ने शरह के पन्ने उलटे और उसके लिये दण्ड निश्चित कर दिया।

उसके अनुसार हाकिम ने मतिराम से कहा—'तुम्हें इस्लाम कबूल करना होगा मतिराम !'

'और यदि न करूं तो ?' मतिराम ने पूछा।

'तो तुम्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।' हाकिम ने उत्तर दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'मुझे धर्म छोड़ने की अपेक्षा शरीर छोड़ना स्वीकार है।' मतिराम ने कहा।

'फिर सोच लो एक बार!'

'सोच लिया, बार-बार सोचने का समय नहीं है मेरे पास।' मतिराम ने कहा और हंस पड़ा—'हिन्दू को मार सकोगे अलफखाँ ? वह तो कभी मरता ही नहीं, केवल वस्त्रों के समान अपना शरीर बदलता है।'

'आरे से चीर कर टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे तेरे।' हाकिम ने क्रोध से काँपते हुए कहा।

'मेरे नहीं अलफखाँ ! इस मिट्टी के पुतले के, जो तेरे सामने खड़ा है।' मतिराम खिल-खिलाकर हंस पड़ा।

मतिराम को आरे से चीरकर मार डालने की आज्ञा देकर अलफखाँ की न्यायशाला उठ गई।

चांदनी चौक के पास ही एक खुले मैदान में लोहे के सीखचों का एक घेरा बनवाया गया था। घेरे के चारों ओर सैनिक पहरा दे रहे थे। अलफखाँ समझता था कि सम्भवतः मतिराम का वध देखकर हिन्दुओं में कुछ असन्तोष भड़के, अतः उसने एक दिन पहले देहली के सभी प्रमुख हिन्दुओं को बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया था। जनता में आतंक था। घेरे के चारों ओर उपस्थित जनता में हिन्दू बहुत कम थे।

लोहे के पिंजरे में बन्द मतिराम घेरे में लाया गया।

दो जल्लाद उनके दोनों हाथों में रस्से बाँधकर उन्हें दोनों ओर से खींचकर खड़े हो गये, दो ने उनकी ठोढ़ी और पीठ थामी और दो ने उनके सिर पर आरा रखा।

आरा चलाया गया किन्तु मानो पत्थर पर, वह मतिराम की खाल भी न काट सका। मतिराम हंस पड़ा—'क्यों अलफखां ! क्या बात है ? चीर दो न मुझे आरे से।' उसने कहा।

अलफखाँ समझा, सम्भवतः इसके बालों में आरा उलझता है। अतः उसने मतिराम का सिर मूंड़ने की आज्ञा दी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

मतिराम के सिर के बाल मूंड़ दिये गये और फिर आरा उसके सिर के ऊपर रखा गया।

किन्तु अब मतिराम वहां था कहाँ ? उसकी आत्मा तो उस शरीर को छोड़कर देवताओं के पवित्र लोक में पहुंच चुकी थी।

अलफखां ने सुना, कोई कह रहा है—'हिन्दू को मार सकोगे अलफखां ! वह तो कभी मरता ही नहीं, केवल वस्त्रों के समान अपना शरीर बदलता है।' और फिर एक अट्टहास उसके कानों में गूंज उठा।

जल्लादों ने अलफखाँ की ओर देखा। वह चीख उठा—'चलाओ आरा, चीर दो काफिर के जिस्म को, मेरे हुक्म की तामील होनी चाहिये।'

और अलफखाँ के जल्लादों ने मतिराम के उस निर्जीव शरीर को दो टुकड़ों में काट डाला।

और हिन्दू धर्म की बलिवेदी पर अपने शरीर को होम देनेवाले इस मतिराम से प्रेरणा पाकर आज का हिन्दू कहीं फिर आँखें न खोल बैठे, इसलिए हमारी कशमीर सरकार ने कुछ वर्ष पहले मतिराम के चित्र का प्रकाशन भी कानून के विरुद्ध घोषित कर दिया है, और हम चुप हैं क्योंकि हमारा राज्य सेकुलर है न !

सत्य वक्ता वह गुणी वीर सदाचारी है ।
प्राण से बढ़के जिसे अपनी प्रजा प्यारी है ।।
जिसके शासन में कोई मूर्ख न रोगी निर्धन ।
ऐसा राजा हो सदा राज्य का अधिकारी है ।।
धर्म राजा का करे अपनी प्रजा की रक्षा ।
कर्म मानव का हो संतान की उत्तम शिक्षा ।।
देश और जाति का उत्थान अगर करना है ।
वेद ज्ञानी हों लगे वेद की घर-घर कक्षा ।।

गुरु तेगबहादुर

औरङ्गजेब की आज्ञा से कशमीर के गवर्नर ने अपने प्रान्त के समस्त हिंदुओं को आज्ञा दी—'सबके सब छह मास के अन्दर मुसलमान बन जाएँ।'

हिन्दुओं ने इस आज्ञा को सुना तो स्तम्भित रह गए। उन्होंने अनाथों की भाँति चारों ओर देखा। उनके नेत्र गुरु तेगबहादुर पर आकर अटक गए। कशमीर के हिन्दू नेता दौड़ पड़े गुरु की शरण में पंजाब की ओर।

अनन्त पूर्ण में गुरु के दरबार में जाकर रो पड़े कश्मीर के हिन्दू—'इस कलिकाल में कौन है हमारे सनातन धर्म का रक्षक सिवाय आपके गुरु साहब! हमारी रक्षा 'कीजिए।'

गुरु ने रोते हुए हिन्दुओं का ढ़ाढ़स बंधाया, किन्तु उनके मुख मण्डल पर विचार की गहरी रेखा खिंच गई।

'क्यों ? क्या बात है पिताजी !' दरबार में आते हुए बालक गोविन्दसिंह ने पूछा।

'कुछ न पूछो बेटा !' गुरु तेग बहादुर कहने लगे—'ये कशमीर से आये हैं। कहते हैं कि वहाँ के गवर्नर ने इन्हें छह मास के अन्दर-अन्दर मुसलमान हो जाने की आज्ञा दी है। उसके बाद जो हिन्दू मुसलमान नहीं बनेगा वह तलवार के घाट उतार दिया जाएगा। आज हिन्दू-धर्म सचमुच ही संकट में फंस गया है, बेटा !"

'तो क्या किसी प्रकार भी इस संकट से त्राण नहीं हो सकता पिताजी !'

'हो क्यों नहीं सकता ? हो सकता है।' गुरुजी ने गम्भीरता से उत्तर दिया—'किंतु धर्म आज एक महान् बलिदान चाहता है।'

'तो उसे दीजिये न वह बलिदान, पिताजी ! आज देश में आपसे अधिक महान् और कौन है ? धर्म का रक्षण यदि बलिदान से ही हो सकता है तो

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर आप अपना ही बलिदान क्यों नहीं देते ?' गोविन्दसिंह ने कहा ।

दरबार में सन्नाटा छा गया । गुरुजी की मुद्रा और भी गम्भीर हो उठी । उन्होंने कहा—'तुम ठीक कहते हो गोविन्दसिंह ! आज धर्म को मुझे ही अपना बलिदान देना पड़ेगा, मेरे बलिदान का समय आ गया है ।'

फिर उन्होंने दूसरी ओर मुड़कर कश्मीर से आये हुए हिन्दुओं से कहा—'जाओ ! यहाँ से सीधे दिल्ली की ओर जाओ और जाकर बादशाह से कहो कि निर्बल और दीन प्रजा को सताने से क्या लाभ ? कब तक एक-एक हिन्दू को मुसलमान बनाओगे । इसमें तो बहुत समय लगेगा । क्यों नहीं हमारे धर्मगुरु तेगबहादुर को मुसलमान बना लेते, उनके मुसलमान बनते ही सारे हिन्दू एक साथ ही मुसलमान बन जायेंगे ।'

हिन्दू दिल्ली पहुंचे और बादशाह से वही सब कुछ कहा जो गुरुजी ने उनसे कहने के लिए कह दिया था । बादशाह हंस पड़ा । एक दूत दिल्ली से अनन्तपुर की ओर दौड़ा, गुरुजी को दिल्ली पधारने का निमन्त्रण देने के लिए ।

गुरुजी ने अपनी मृत्यु का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और वह चल पड़े अपने पाँच शिष्यों के साथ दिल्ली की ओर ।

रास्ते के ग्रामों में धर्म का संदेश देते हुए गुरुजी दिल्ली पहुंचे । वह औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुए । गौरवर्ण वृद्ध गुरु के तेजोमय मुख-मण्डल से दरबारियों की आंखें चौंधिया गईं । औरंगजेब ने गुरु साहब को बिठाया और साथ ही अपना मन्तव्य भी सुना दिया ।

'तुम्हें इस्लाम कबूल करना पड़ेगा, गुरु साहब !' औरंगजेब ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा ।

'और यदि मैं उसे कबूल न करूं तो ?' गुरुजी ने निस्संकोच भाव से पूछा ।

'तो तुम्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा ।'

औरंगजेब ने सोचा—'इन शब्दों को सुनकर बूढ़े गुरु घबरा उठेंगे । किंतु उसने देखा कि उनके ओंठों पर मुस्कराहट खेल रही है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह क्रोध से कांपने लगा—'जल्दी जवाब दो, क्या मंजूर है?' औरंगजेब चीख पड़ा—'इस्लाम या मौत !'

'मौत' गुरु जी ने कहा। वह तो उसे लेने आये ही थे दिल्ली। गुरु जी को बन्दीगृह भेज दिया गया।

उनके पाँचों शिष्यों का निर्दयतापूर्वक वध कर डाला गया और उनके वृद्ध शरीर को भी भांति-भांति की यातनायें दी गईं।

दो महीने पश्चात् बादशाह ने गुरु जी का भी वध करने की आज्ञा दे दी।

गुरु जी 'जपजी' का पाठ करते हुए आसन लगाकर बैठ गए। जल्लाद की तलवार चमकी और उनका सिर पृथ्वी पर लुढ़क पड़ा।

उनके गले में बंधे हुए तावीज को खोला गया तो उसमें लिखा था —'सिर दिया पर सार न दिया।'

'गुरु के बलिदान ने भारत में वह ज्वाला भड़काई कि उसमें पड़कर मुगल साम्राज्य भस्म हो गया, यदि यह कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी।

आज भी दिल्ली के चांदनी चौक में स्थित शीशगंज के गुरुद्वारें में गुरु जी की समाधि उस बलिदान वेला की स्मृति कराती है।

कान लगाकर सुनो तो तुम्हें उसमें से आज भी यही ध्वनि आती हुई सुनाई देगी—'धर्म आज बलिदान चाहता है।'

आज के धर्महीन प्रेस और प्लैट फार्म से प्रभावित आज का हिंदू समाज क्या अपने कानों का मैल निकालने पर भी गुरु की यह दिव्य वाणी सुनने में समर्थ हो सकता है ?

हे करुणाकर, भगवन् तेरी—मुझ पर ऐसी रहे कृपा।
ऋग्वेदादिक ज्ञान धरूँ मैं, उनका बनूं सच्चा वक्ता।।

'यजुर्वेद' का मनन करूं मैं, 'सामवेद' अध्ययन करूँ।
चिन्तन और आचरण करूँ, वेद-ज्ञान का स्फुरण करूँ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म की आन पर दीवारों में चुने जाने वाले सिंह बच्चे

जोरावर सिंह-फतहसिंह

मुसलमान सेनाओं ने आनन्दगढ़ को चारों ओर से घेर लिया था और किले में जो कुछ भी खाने-पीने की सामग्री थी वह सब समाप्त हो चुकी थी। जीवन रक्षा का और कोई उपाय न देखकर गुरु गोविंद सिंह अपनी वृद्धा माता, पत्नी, चारों पुत्रों और 50 वीर शिष्यों को साथ लेकर आधी रात के समय किले से बाहर निकले। मुसलमानों को इसका समाचार मिल गया और उन्होंने मार्ग में ही उन पर आक्रमण कर दिया।

युद्ध हुआ। मुसलमानों ने वीरों की उस टोली को छिन्न-भिन्न कर दिया। वृद्धा माता और दो छोटे बच्चे जोरावर सिंह और फतहसिंह एक ओर हो गये और गुरु जी, उनकी पत्नी तथा दो बच्चे दूसरी ओर।

जोरावर सिंह की अवस्था उस समय 9 वर्ष की थी और फतहसिंह की 7 वर्ष की।

गुरु जी की माता गूजरी देवी ने दोनों नन्हे बच्चों के साथ सरहिंद के खेड़ी ग्राम में जिस व्यक्ति के घर में आश्रय लिया उसने उनके साथ विश्वास-घात किया। माता जी के पास जवाहरात की पेटी देखकर उसे लोभ ने आ दबाया। उसने पेटी को चुरा लिया और चोरी के अपराध से बचने के विचार से कोतवाली में जाकर सूचना दे दी—'गुरु का परिवार मेरे घर में छिपा हुआ है। आप आयें और गिरफ्तार कर लें।'

मुसलमान कोतवाल की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने गुरु जी की वृद्धा माता और दोनों बच्चों को बन्दी बनाकर सरहिंद के सूबेदार के सामने उपस्थित कर दिया।

सूबेदार तो गुरु जी से वैर साधने का अवसर देख ही रहा था। उसने काजियों और मुल्लाओं से बच्चों के विषय में सम्मति माँगी और उन सबने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक मत होकर निर्णय दे दिया—'उन बच्चों से इस्लाम स्वीकार कराया जाये और यदि वे ऐसा न करें तो उनका वध कर दिया जाये।'

जोरावरसिंह और फतहसिंह रोती बिलखती बूढ़ी दादी की गोद से छीनकर सूबेदार के सामने लाये गये। छाती ताने और सिर ऊँचा किये दोनों बच्चे दरबार में आकर खड़े हो गये।

'बच्चो तुमको मुसलमान होना पड़ेगा।' सूबेदार ने कहा।

'क्यों ?' दोनों ने एक साथ पूछा।

'क्योंकि हमारे मजहब में लिखा है कि काफिरों को मुसलमान बनाओ।' सूबेदार ने उत्तर दिया।

'लेकिन हमारे मजहब में लिखा है कि अपने धर्म को कभी न छोड़ो।' जोरावरसिंह ने कहा।

'मुसलमान न बनने पर तुम्हें मौत का मुंह देखना पड़ेगा, बच्चो !' सूबेदार ने क्रोध में कहा।

'वह हमें स्वीकार है, सूबेदार साहब ! लेकिन हम मुसलमान नहीं बन सकते।' उसे उत्तर मिला।

सूबेदार ने बच्चों को बहुतेरा बहकाया-फुसलाया, किन्तु वे टस से मस न हुए।

सूबेदार के क्रोध की सीमा न रही और उसने दोनों बच्चों को जीवित ही दीवार में चुने जाने की आज्ञा दे दी।

जोरावरसिंह और फतहसिंह दीवार में चुने जा रहे थे। कारीगर एक-एक करके ईंट रख रहे थे। मुल्ला-मौलवी और सूबेदार सभी बच्चों के बहकाने का प्रयत्न कर रहे थे।

'अब भी मान जाओ बच्चो ! मुसलमान हो जाओगे तो तुम्हें छोड़ दिया जायेगा।'

किन्तु बच्चों ने जैसे कुछ सुना ही नहीं। उनके चेहरों पर गम्भीरता थी। उनकी आँखें अधखुली थीं और वे अपने इष्ट का ध्यान कर रहे थे।

दीवार जोरावरसिंह की छाती तक आ चुकी थी और फतहसिंह के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कन्धों तक। दरबारी आँखें फाड़-फाड़कर यह सब देख रहे थे।

अब छोटे सिंह को नेत्रों से ओझल करने के लिये केवल एक ईंट रखनी ही शेष रह गई थी, बड़े सिंह के लिये दो-तीन ईंटों की आवश्यकता और थी।

बड़े ने सिर घुमाकर छोटे की ओर देखा और छोटे ने बड़े की ओर। बड़े के नेत्रों से आँसू की एक बूंद छलक पड़ी। सूबेदार ने यह देखा तो उस की आँखें चमक उठीं, मुल्लाओं के होंठों पर हंसी की एक रेखा दौड़ गई। लेकि फतहसिंह की त्योरी चढ़ गई—'यह क्या भैया! तुम रो रहे हो?'

'नहीं, नहीं', जोरावरसिंह ने कहा—'मैं रो नहीं रहा हूँ फतहसिंह! लेकिन मुझे तुमसे ईर्ष्या हो रही है। तुम मुझसे दो वर्ष बाद इस संसार में आये और मुझसे दो क्षण पहले धर्म की वेदी पर बलिदान होने का गौरव प्राप्त कर रहे हो। यह गौरव तो मुझे पहले मिलना चाहिये था।'

दरबारी बच्चों की ये बातें सुनकर दंग रह गए। 'सत श्री अकाल' कहकर बच्चों ने आँखें मूंद लीं। मुल्लाओं का संकेत पाकर कारीगरों ने ईंट रखने में शीघ्रता की और देखते-देखते दीवार ने दोनों सिंह बच्चों को अपने में छिपा लिया।

संसार का इतिहास इन बच्चों जैसे बलिदान का दूसरा उदाहरण उपस्थित नहीं कर सकता।

और जिस हिन्दू जाति की कोख ने इन जैसे बच्चों को उत्पन्न किया है, उसे संसार की कोई शक्ति नष्ट नहीं कर सकती। वह सदा अजर-अमर है।

दुनिया के लोगो!

सुख-शांति और आनन्द लड़ने में नहीं, प्यार में मिलेगा। झूठ से नहीं, सच से मिलेगा। धरती को स्वर्ग बनाना है तो प्रभु के पुत्र बनो। प्रभु की राह पर चलो। प्रभु की वाणी पढ़ो और मनुष्यों के बताये झूठे रास्तों को छोड़कर ईश्वर के दिखाये रास्ते पर चलो।

आप का, आप के परिवार का, समाज, राष्ट्र और विश्व का कल्याण इसी में है कि सभी प्रभु के मार्ग पर चलें। —वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुत्व के लिए शरीर के टुकड़े-टुकड़े करवाने वाला वीर

छत्रपति शम्भा जी

बीजापुर और गोलकुण्डा की विजय में वहाँ का साम्राज्य तो औरंगजेब को मिला ही साथ ही, उसे एक सरदार भी मिला शेख निजाम—जिसे औरंगजेब ने मुकरब खान की उपाधि प्रदान की और साथ ही उसे एक कार्य भी दिया। वह कार्य था छत्रपति शिवाजी के लड़के शम्भा जी को जीवित ही बन्दी बना लाने का, क्योंकि शम्भा जी उसकी आँख का काँटा थे। वह उन्हें अपने नेत्रों के सामने मरते देखना चाहता था।

औरगजेब के जासूसों ने सूचना दी—शम्भा जी इस समय अपने दस-पांच विश्वस्त सैनिकों के साथ वारद्वारी से रायगढ़ की ओर जा रहे हैं। मुकर्रब की बांछें खिल उठीं। वह दौड़ पड़ा रायगढ़ की ओर। शम्भा जी अपने मित्र कवि कलश के साथ इस समय संगमेश्वर पहुंच चुके थे।

वह एक बाड़ी में बैठे थे कि उन्होंने देखा कवि कलश भागे चले आ रहे हैं और उनके हाथ से रक्त की धारा बह रही है। कलश ने शम्भा जी से एक शब्द भी नहीं कहा, किन्तु उनका हाथ पकड़कर उन्हें खींचते हुए बाड़ी के तलघर में ले गए। शम्भा जी कुछ भी न समझ सके, किन्तु तलघर के द्वार में घुसते-घुसते उन्होने देखा कि उसकी सीढ़ियों पर खड़े कुछ मुसलमान सैनिक उन्हीं की ओर देख रहे हैं।

बात यह हुई कि शम्भा जी को बाड़ी में छोड़कर कवि कलश बाहर निकले ही थे कि उन्होंने देखा मुकर्रब खान के नेतृत्व में कुछ मुसलमान सैनिक उधर ही बढ़े चले आ रहे हैं। वह एक दम मुड़ पड़े। मुसलमान सैनिकों ने उन्हें देख लिया और उन पर बाण से प्रहार किया। बाण उनके हाथ में लगा। किन्तु वह शम्भा जी की जीवन रक्षा के उद्देश्य से अपने घाव की चिन्ता न करते हुए दौड़ पड़े और उन्हें खींचकर तलघर में ले गये, किन्तु मुकर्रब खान के पुत्र ने उन्हें देख लिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमान सैनिक तलघर में उतर गये और पचासों तलवारों और बन्दूकों की शक्ति के बल पर उन्होंने उन दोनों शस्त्रहीन मरहठा वीरों को बन्दी बना लिया।

छत्रपति शम्भा जी और कवि कलश लोहे की जंजीरों में बाँधकर मुकर्रब खान के सामने लाए गए। वह उन्हें देखकर खुशी से नाचने लगा। दोनों बन्दियों को अनाज के बोरों के समान हाथी पर लादकर मुस्लिम सेना बादशाह औरंगजेब की छावनी की ओर चल पड़ी।

औरंगजेब के आनन्द की सीमा न रही। उसने चार मील की दूरी पर ही उन शाही कैदियों को रुकवाया। वहाँ शम्भा जी और कवि कलश को रंग-बिरंगे कपड़े और विदूषकों जैसी घुंघरूदार लम्बी टोपी पहनाई गई। फिर उन्हें ऊंट पर बिठाकर गाजे-बाजे के साथ औरंगजेब के सामने लाया गया। उसने उन बंधे हुए सिंहों का बड़े ही अपशब्दों में स्वागत किया।

शम्भा जी के नेत्रों से अग्नि निकल रही थी, किन्तु वह चुप रह गये, क्योंकि विवश थे। शम्भा जी और कवि कलश को बन्दी-गृह में भेज दिया गया।

बादशाह ने दीन के दीवानों को एकत्रित किया, यह विचार करने के लिये कि शम्भा जी का वध किस प्रकार किया जाए। अनेक उपाय सुझाये गए। अन्त में निश्चय हुआ कि एक बार उनसे इस्लाम कबूल करने के लिये अवश्य कहा जाए। रुहल्ला खां यह सन्देश शम्भा जी तक पहुंचाने के लिये निश्चित किया गया।

नर-केसरी लोहे के सींखचों में बन्द था। कल तक जो मरहठों का सम्राट् था, आज उसकी इस दशा को देखकर करुणा को भी दया आ रही थी। फटे हुए चीथड़ों में लिपटा हुआ उनका दिव्य शरीर मिट्टी में पड़े हुए स्वर्ण के समान हो गया था। शम्भा जी के नेत्र बन्द थे। वह अपने कर्तव्य का निश्चय कर रहे थे। उन्हें रह-रहकर प्रतीत हो रहा था कि स्वर्ग में खड़े छत्रपति शिवाजी उन्हें टकटकी बांधे देख रहे हैं।

'पिता जी ! पिताजी !!' वह चिल्ला पडे—'मैं आपका पुत्र हूँ। आप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निश्चिंत रहिए। मैं मर जाऊँगा, लेकिन.........।'

'लेकिन क्यों शम्भा राजा ?' रुहल्ला खां ने एक ओर से प्रकट होते हुए कहा—'तुम मरने से बच सकते हो, लेकिन कुछ शर्तों पर।'

'मैं उन शर्तों को सुनना ही नहीं चाहता। शिवाजी का पुत्र मरने से डरता ही कब है ?' शम्भा जी ने उत्तर दिया।

'लेकिन जिस प्रकार की मौत यहाँ होगी उसे देखकर तो खुद मौत भी थर्रा उठेगी शम्भा जी !' रुहल्ला खां ने कहा।

'कोई चिन्ता नहीं, उस प्रकार की मौत भी हम हिन्दुओं को नहीं डरा सकती। सम्भव है तुझ जैसे कायर उससे डर जाते हों।' शम्भा जी ने उत्तर दिया।

·लेकिन ...' रुहल्ला खां बोला—'वह शर्त है बहुत मामूली, केवल तुम्हें इस्लाम कबूल करना पड़ेगा।'

'बस, बस रुहल्ला खां ! आगे एक शब्द भी और जबान से न निकालना।' शम्भा जी के नेत्र अग्नि उगल रहे थे 'म्लेच्छ .....।' कहते-कहते शम्भा जी आगे बढ़े, किन्तु एक क्षण में ही उन्हें होश हुआ, वह तो बन्दी हैं और निःशस्त्र। उनके और रुहल्ला खां के बीच में लोहे के सींखचों की दीवार खड़ी थी।

रुहल्ला खां अट्टहास कर उठा। उसने फिर शम्भा जी से कुछ कहना चाहा, किन्तु उन्होंने उसकी ओर से मुख मोड़ लिया।

रुहल्ला खां लौट गया।

उसी दिन रात को तपी हुई लोहे की सलाखें घुसेड़कर शम्भा जी की दोनों आँखें फोड़ दी गईं। उन्हें खाना और पानी भी देना बन्द कर दिया गया।।

इस समय तक औरंगजेब का डेरा भीमा नदी के तट पर पहुंच चुका था।

सन् 1669 ई० की ग्यारह मार्च।—— औरंगजेब ने मुसलमानों से बातचीत करने के पश्चात् शम्भा जी को मार डालने की आज्ञा दी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शम्भा जी का एक हाथ काट डाला गया। फिर थोड़ी देर बाद दूसरा। उसके पश्चात् एक पैर काटा गया और फिर दूसरा। शम्भा जी का कर-पाद-विहीन धड़ दिन भर खून की तलय्या में तैरता रहा। फिर सायंकाल तलवार के एक वार से उनका सिर भी धड़ से पृथक् कर दिया गया और उनका शरीर कुत्तों के आगे डाल दिया गया। फिर उनके सिर को भाले की नोक पर लगाकर सेना के साथ घुमाया गया और बाद में कूड़े में फेंक दिया गया।

मरहठों ने अपनी छातियों पर पत्थर रखकर अपने सम्राट् के सिर का इन्द्रायणी और भीमा के संगम पर दाह संस्कार किया।

आज भी उस स्थान पर शम्भा जी की टूटी-फूटी समाधि है, जो पुकार-पुकार कर हिन्दुत्व की महानता का उद्घोष करती है। ★

दस वर्ष के लिए एक साथ जन-ज्ञान का ग्राहक बनने पर
महाभारत और वैदिक गीता
(पंडित आर्यमुनि कृत हिन्दी भाष्य)
उपहार में प्राप्त करें
(वैसे इन दोनों पुस्तकों का मूल्य 100 रु० है।)
जन-ज्ञान का 10 वर्ष के लिए शुल्क 350 रु० भेजें।
501 रु० देकर आजीवन ग्राहक बनने पर
101 रु० मूल्य की पुस्तक वैदिक सम्पत्ति मुफ्त।

यह रियायत महात्मा वेदभिक्षु: जी के जन्म दिवस (14 मार्च) के अवसर पर दी जा रही है। जैसा आप सब जानते हैं, महात्मा जी के जीवन का केवल एक लक्ष्य था।

वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द सरस्वती का विचार धारा का प्रचार-प्रसार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुत्व की रक्षा के लिए देह का मांस नुचवाने वाले

वीर बन्दा बैरागी

जीवन भर मुसलमानों से लोहा लेते-लेते गुरु गोविन्दसिंह का पौरुष थक चुका था, वह अपने को एकाकी अनुभव कर रहे थे। 'कौन है जो मेरे पीछे हिन्दुओं की रक्षा करेगा,' इसी चिन्ता से गुरु जी दिन प्रतिदिन क्षीण होते जा रहे थे।

गुरु जी दक्षिण की यात्रा में थे कि उज्जैन में उन्होंने बैरागी माधवदास के विषय में सुना। उन्हें ज्ञात हुआ कि यह तेजस्वी क्षत्रिय हाथ से धनुष फेंक कर और कन्धे का तूणीर उतार कर पंचवटी की एक पर्ण कुटी में बैठा अहिंसा की साधना कर रहा है। गुरु जी की आँखें चमक उठीं और वह पंचवटी में बैरागी की कुटिया पर जा पहुंचे।

उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से बैरागी के हृदय में स्थित सुप्त ज्वालामुखी के दर्शन किये और फिर आगे बढ़ कर अपनी वाणी से उनके जीवन का स्रोत बदल दिया।

'अब आंखें वन्द करके बैठने का समय नहीं है बैरागी।' गुरु ने कहा—'आंखें खोलों और देश मे मचती हुई प्रलय को देखो। आज यवनों की क्रोधाग्नि में हिन्दुओं का सर्वस्व स्वाहा हुआ जा रहा है। आज हिन्दू हिन्दू रहकर जीवित नहीं रह सकता, उसे बरबस मुसलमान बनाया जा रहा है और इनकार करने पर उसे आरों से चीरा जा रहा है, मस्जिदों की नींवों में दबाया जा रहा है और दीवारों में चुनवाया जा रहा है। और तुम यहां पड़े हो बैरागी! यह यौवन छिपाये, इस चौड़ी छाती को दबाये, इन लम्बी भुजाओं को सिकोड़े इन बड़ी-बड़ी आँखों को बन्द किये! क्या तुम्हें यह सब दीख नहीं पड़ रहा है माधवदास!'

कहते-कहते गुरु ने देखा माधवदास के हृदय में धड़कन होने लगी है और वह अपनी भुजाओं को देख रहे हैं।

गुरु फिर कहने लगे—'बैरागी! तेरी इन भुजाओं से अत्याचारी की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गर्दन न मरोड़ी गई तो इनके होने से लाभ ही क्या ? तेरी इस चौड़ी छाती ने पापी का दमन करते हुए शत्रुओं के तीर न झेले तो इसकी विशेषता ही क्या ?

'आओ, उठो माधवदास ! तुम्हें हिन्दू धर्म पुकार रहा है, हिन्दू जाति तुम्हें बुला रही है, मानवता तुम्हें टेर रही है । इनकी पुकार सुनो । तुम तो ज्वालामुखी हो, सुप्त ज्वालामुखी, एक बार फट पड़ो, केवल एक बार··· ।'

'फिर क्या होगा गुरुदेव !' माधवदास बैठे न रह सके, वह खड़े हो गये थे ।

'फिर ? माधवदास, फिर होगा इस देश में हमारी कल्पना का राम-राज्य । देश के इस छोर से उस छोर तक फिर एक बार मन्दिरों में घण्टे और घड़ियाल बज उठेंगे, वेदों की ध्वनि होगी और गाय अवध्य हो जायेगी और इस सबका पुण्य तुम्हें ही मिलेगा बैरागी !'

'तो मुझे आज्ञा दीजिये गुरु देव ! मैं आज से आपका बन्दा हूँ, बैरागी ने कहा ।

'बंदा हो तो मातृ भूमि की वंदना करो बैरागी ! शरीर के गेरुआ वस्त्र उतार कर लोहे का कवच पहन लो, हाथ की माला कुछ दिनों के लिए खूंटी पर टांग कर इनमें शत्रुओं का रक्त चाटने वाली भुजाली उठालो और चलो मेरे साथ ।'

बैरागी का क्षत्रिय रक्त खौल उठा, उसकी आँखों से अग्नि की चिनगारियाँ निकलने लगीं, उसकी बाँहें फड़कने लगीं ।

गुरु ने म्यान से अपनी तलवार निकाली और बैरागी के हाथ में दे दी ।

'मुझे किस ओर जाना होगा गुरुदेव !' बैरागी ने पूछा ।

'सरहिन्द की ओर', गुरु ने उत्तर दिया । 'सबसे पहले समाना, जहाँ के अली हुसैन ने मेरे बच्चों को सांप का बच्चा कहकर पुकारा था, फिर कुंजपुरा जहाँ के काजियों ने उनको दीवार में चुने जाने का फतवा दिया था और फिर सरहिन्द जहाँ की दीवार में वे आज भी चुने खड़े हैं बैरागी ! और तेरी बाट देख रहे हैं ।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैरागी को लक्ष्य मिल गया, वह चिंघाड़ उठा, पंचवटी के वन का कोना-कोना सहम गया।

वैरागी पंजाब की ओर दौड़ा। समाना, अम्बाला, सीकाबाद, सवारख, हामला, कैथल, कुंजपुर सब उसके चरणों में लोट गये। बन्दा सरहिन्द पहुँच गया। उसका अट्टहास सारे पंजाब को कंपा रहा था।

सरहिन्द का सूबेदार बन्दी बनाकर बन्दा के सामने लाया गया और उसका वध कर दिया गया।

गुरु के दोनों नन्हे बच्चों की अस्थियाँ दीवार से निकाली गईं और उनके ऊपर समाधियों का निर्माण किया गया।

इसके पश्चात् बन्दा ने मालेरकोटला, रामकोट, जगरांव अपने अधिकार में कर लिये। जालंधर के नवाब ने बन्दा के पैर पकड़ लिये और उसे छोड़ दिया गया। व्यास और रावी के बीच का सारा देश बिना युद्ध ही उसके हाथ में आ गया। यमुना और सतलज के बीज के भाग पर भी उसका आधिपत्य हो गया।

दो वर्ष में ही बन्दा ने पंजाब की काया पलट दी।

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि के हाथ है, इन पर मनुष्य का अधिकार नहीं। औरंगजेब के बाद बहादुरशाह और बहादुरशाह के बाद फर्रुखसियर देहली की गद्दी पर आया। फर्रुखसियर ने छल-कपट द्वारा बन्दा को पराजित करने की सोची। उसने अपने एक हिन्दू मन्त्री को गुरु गोविन्दसिंह की धर्मपत्नी माता सुन्दरी के पास भेंट लेकर भेजा। उसने माता को न जाने क्या समझाया कि उन्होंने बन्दा को युद्ध बन्द करने के लिए पत्र भेज दिया।

बन्दा ने पत्र पढ़ा और उसे फाड़ कर फेंक दिया। उन्होंने कहला भेजा—'मैं गुरु के पुत्रों की भीषण हत्या का भीषण बदला लूंगा, मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों को समूल नष्ट किये बिना गुरु की दी हुई मेरी यह तलवार अब म्यान में नहीं जायेगी।'

माता को यह सुन कर क्रोध आ गया। उन्होंने घोषणा कर दी कि बन्दा सिक्ख नहीं है, उसकी विजय से खालसा को कोई लाभ नहीं, अतः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहता हूँ कि तूने बीबी फातिमा के लिए ऐसा कहा या नहीं।'

'मैंने कहा है' हकीकत ने उत्तर दिया, 'हिन्दू झूठ नहीं बोला करता।'

मौलवी साहब ने इस्लाम की तौहीन का यह मामला स्यालकोट के हाकिम अमीरबेग की अदालत में भेज दिया। वहाँ भी हकीकतराय ने सब कुछ स्वीकार कर लिया।

हाकिम ने मुल्लाओं की सम्मति ली। उन्होंने बताया कि इस्लाम की तौहीन करने वाले के लिए शरह में मौत की सजा लिखी है।

हकीकतराय का बूढ़ा बाप रो पड़ा, उसकी माँ बिलखने लगी, उसकी नन्ही-सी पत्नी बेहोश होकर गिर पड़ी। हकीकतराय की अवस्था उस समय तेरह वर्ष की थी।

हाकिम के निर्णय के विरुद्ध लाहौर में अपील भी की गई किन्तु वहाँ भी वही फैसला बहाल रहा।

हकीकत जेल के सींखचों के पीछे बैठा था। वह निश्चिन्त था, गम्भीर था और प्रसन्न भी। मौत का फैसला सुनकर उसके हृदय में घबराहट नहीं थी। काजी, मुल्ला और हकीकत के बूढ़े माँ-बाप सीखचों से बाहर आकर खड़े हो गये।

काजी ने कहा—'हकीकत अगर तू मुसलमान बन जाये तो मरने से बच सकता है।'

हकीकतराय का चेहरा तमतमा उठा। वह कुछ बोलना ही चाहता था कि उसके बूढ़े पिता भागमल हिचकियाँ लेते हुए कह उठे—'हाँ, हाँ, बेटा, मुसलमान बन जा, अगर तू जीवित रहेगा तो हमारी आंखें तुझे देखकर ठंडी रहेंगी।'

'आप भी यही कहने लगे पिताजी! तो क्या मैं मुसलमान बन जाने पर फिर कभी नहीं मरूँगा? और अगर एक न एक दिन मरना ही है तो फिर दो दिन के जीवन के लिए धर्म छोड़ने से क्या लाभ?' हकीकतराय ने अपने पिता को धैर्य बंधाते हुए कहा।

'बड़ा लाभ होगा तुम्हें हकीकत,' काजी ने कहा—'शाही दरबार में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इज्जत, अथाह दौलत.........।'

'बस, बस इतना ही' हकीकत हंस पड़ा। 'इतने भर के लिए ही मैं अपना धर्म छोड़ दूँ काजी साहब! धर्म कभी बदला नहीं जाता, वह तो अटल होता है। जीवन भर के लिए वह हमारे साथ रहता है और मरने पर भी हमारे साथ ही जाता है।'

माता-पिता और सम्बन्धियों ने बहुतेरा समझाया किन्तु हकीकतराय टस से मस न हुआ।

इस्लाम का अपमान करने के अपराध में हकीकतराय का सिर काट देने का आयोजन खुले मैदान में किया गया था। मैदान हिन्दू और मुसलमान स्त्री-पुरुषों से खचाखच भरा हुआ था।

जिस समय उस मैदान में हकीकतराय लाया गया वह तलवारों की छाया में था, हथकड़ी-बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, मुसलमानी फौजों से घिरा हुआ था।

काजी ने एक बार फिर उससे मुसलमान हो जाने के लिए कहा और उसने फिर उसी दृढ़ता से उत्तर दिया—'मैं धर्म नही छोड़ सकता, दुनिया छोड़ सकता हूं।'

मुल्ला ने काजी को संकेत किया और काजी ने जल्लाद को।

जल्लाद ने तलवार उठाई और हकीकतराय ने सिर झुका दिया। जल्लाद ने उस फूल जैसे बच्चे को अपनी तलवार के नीचे देखा तो उसका पत्थर जैसा हृदय पिघल गया। तलवार उसके हाथ से छूट कर गिर पड़ी।

काजी और मुल्लाओं की त्योरियां चढ़ गईं, सारी भीड़ में हलचल-सी मच गई। किन्तु एक क्षण पश्चात् ही सब ने देखा कि हकीकत राय स्वयं तलवार उठा कर जल्लाद के हाथों में दे रहा है।

जल्लाद ने तलवार थामी और हकीकत की झुकी हुई गर्दन पर दे मारी।

एक छोटी-सी किन्तु तीखी रक्त की धार पृथ्वी पर बह निकली।

यह घटना वसन्त के दिन ही घटी थी। पाकिस्तान बनने से पूर्व इस दिन प्रति वर्ष हकीकत की समाधि पर लाखों हिन्दू उस धर्मवीर को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए वहां एकत्रित हुआ करते थे, किन्तु आज... ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म की वेदी पर प्राण न्योछावर करने वाले पिता-पुत्र

शाहबेगसिंह और शाहबाजसिंह

'हिन्दू धम ईश्वरीय है या इस्लाम' इसी विषय पर नवयुवक शाहबाज सिंह अपने फारसी के अध्यापक मौलवी साहब से भिड़ पड़ा।

'यदि दीन इस्लाम ईश्वरीय है तो सब की सुन्नत जन्म के ही साथ क्यों नहीं होती मौलवी साहब !' उसने प्रश्न किया और मौलवी साहब इसका कोई उत्तर न दे सके।

'अगर खुदा सर्वव्यापक है तो उसके लिए पश्चिम में ही क्यों सिर झुकाया जाता है ? उसने दूसरा प्रश्न किया और मौलवी साहब अब भी चुप थे।

'यदि कुरान खुदा की तरफ से है तो वह एक देशीय भाषा में ही क्यों लिखा गया ?' उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। मौलवी साहब को अपनी जान बचानी कठिन हो गई।

'इस्लाम की तौहीन करता है, काफिर !' मौलवी साहब ने क्रोध में भरे हुए अपना लम्बा सोटा उठा कर खड़े होते हुए कहा—'तुझे इसका मजा न चखाया तो मुझे भी कौन कहेगा' ?

नवयुवक सरल भाव से हस पड़ा। आने वाली भयानक आपत्ति की उसने कल्पना भी न की।

अठारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध चल रहा था। मुगल सम्राट् देश का शासन कर रहे थे। भाई शाहबेग सिंह लाहौर के कोतवाल थे उन दिनों। वह अरबी और फारसी के बड़े विद्वान् थे, और साथ ही अपनी योग्यता और कार्यकुशलता के कारण हिन्दू होते हुए भी सूबा के परम विश्वासपात्र थे।

वह मुसलमानों के नौकर थे फिर भी लाहौर के हिन्दू और सिक्ख उनका बड़ा सम्मान करते थे। उन्हें भी अपने धर्म से प्रेम था। और यही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारण था कि मुसलमान मुल्ला और मौलवी मन ही मन उनसे जलने भी लगे थे। इन्हीं शाहबेग सिंह का एकमात्र पुत्र था शाहबाज सिंह। शरीर का सुन्दर और बुद्धि का मेधावी और साथ ही साथ हिन्दू धर्म का प्रेमी। उसकी अवस्था उन दिनों 15-16 वर्ष से अधिक न थी। एक मौलवी उसे फारसी पढ़ाया करते थे।

वह मौलवी प्रतिदिन ही उससे इस्लाम की प्रशंसा करते और साथ ही हिन्दू धर्म को इस्लाम से नीचा बताते। आखिर वह उसे कब तक सुनता? एक दिन वह मौलवी साहब से भिड़ ही तो पड़ा। किन्तु ऐसा करते समय वह यह न समझ सका कि इस्लामी शासन में ऐसा करने का क्या परिणाम हो सकता है। अभी नासमझ ही था न!

मौलवी शहर के काजियों के पास पहुंचा और झूठी-सच्ची बातें बना कर उनकी धर्मांधता को जागृत करने में सफल हो गया। सूबा के कान भरे गये और शाहबाज सिंह पर इस्लाम की निन्दा का आरोप घोषित कर दिया गया।

पुत्र के साथ ही पिता भी बन्दी बनाकर सूबा के सामने उपस्थित किया गया।

सूबा ने न्याय के लिए उन्हें काजियों के हवाले कर दिया। काजी तो पहिले ही से उनके लिए निर्णय किये बैठे थे। घोषणा की गई—'पिता पुत्र दोनों इस्लाम को स्वीकार करें अन्यथा मौत के घाट उतार दिये जायें।'

जिसने सुना, सन्नाटे में रह गया। शाहबेग सिंह जैसे सर्वप्रिय हाकिम को यह दंड और वह भी उनके पुत्र के अपराध के नाम पर। सब के नेत्रों से अश्रु प्रवाह होने लगा किन्तु ···

शाहबेग सिंह हँस रहे थे। 'कितने सौभाग्यशाली हैं हम, इसकी हमें कल्पना भी न थी बेटा!' उन्होंने शाहबाज सिंह से कहा—'मुसलमानों की नौकरी में रहते हुए हमें अपने धर्म की वेदी पर बलिदान होने का अवसर मिल सकेगा इसे हम सोच भी कैसे सकते थे। किन्तु प्रभु की महिमा अपार है, वह जिसे गौरव देना चाहे उसे कौन रोक सकता है?'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शाहबाज सिंह का भी सुन्दर और गोरा मुखमण्डल धर्म के तेज से देदीप्यमान हो उठा।

'डर तो नहीं जाओगे बेटा?' पिता ने पूछा।

'नहीं, नहीं, पिता जी!' पुत्र ने उत्तर दिया—'आपका पुत्र होकर मैं मौत से डर सकता हूं? कभी नहीं। देखना तो सही मैं किस प्रकार हँसते हुए मौत को गले लगाता हूँ।'

पिता की आंखें चमक उठीं। 'मुझे तुम से ऐसी ही आशा थी बेटा!' उन्होंने कहा और पुत्र को अपनी छाती से चिपटा लिया।

पिता और पुत्र को जेल की कोठड़ियों में पृथक् पृथक् रखा गया।

मुसलमान शासक कभी पिता के पास जाते और कभी पुत्र के पास उन्हें मुसलमान बन जाने के लिए प्रोत्साहन देने के लिए। किन्तु दोनोंसे एक ही उत्तर मिलता—'मुसलमान हो जाने से मर जाना कहीं उत्तम है।'

मौलवी साहब भी अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए शाहबाज सिंह के पास पहुंचे।

'बच्चे! तेरा बाप तो सठिया गया है, न जाने उसकी अक्ल को क्या हो गया है? मानता ही नहीं। लेकिन तू तो समझदार है। अपना यह सोने जैसा जिस्म क्यों बरबाद करता है, यह मेरी समझ में नहीं आता' उन्होंने कहा।

'वह जिस्म कितने दिन का साथी है मौलवी साहब! शाहबाज सिंह ने बहुत सरलता के साथ उत्तर दिया। 'आखिर एक दिन तो जाना ही है इसे, फिर इससे प्रेम ही क्यों किया जाये। जाने दीजिये इसे, धर्म के लिए जाने का अवसर फिर शायद जीवन में इसे न मिल सके।'

मौलवी साहब अपना-सा मुंह लेकर लौट गये।

शाहबेग सिंह और शाहबाज सिंह का वध किस प्रकार किया जाये इसका निर्णय करने के लिए फिर काजियों की न्यायशाला बैठी। बहुत देर विचार चलते रहने के पश्चात् निर्णय सुना दिया गया, जिसके अनुसार पिता और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुत्र चर्ख पर चढ़ाये गये।

मुसलमान जल्लाद चर्ख को घुमाने लगे। चट-चट करके दोनों के शरीर की हड्डियाँ टूटने लगीं। स्थान-स्थान से शरीर की खालें फट गईं और रक्त की धाराएँ प्रवाहित होने लगीं।

'अब भी मान जाओ शाहबेग सिंह! इस्लाम कबूल कर लो, तुम्हारी जान बख्शी जा सकती है' सूबा ने चीख कर कहा। किन्तु धर्म के दीवानों ने जैसे सुना ही नहीं।

चर्ख चल रहा था, ऊपर से कोड़ों की मार भी पड़ रही थी किन्तु मरने वालों के मुख पर अभी भी हँसी खेल रही थी, मानो उन पर कोई पुष्पों की वर्षा कर रहा हो।

और इसी प्रकार हँसते-हँसते दोनों ने सदैव के लिए अपने नेत्र बन्द कर लिये।

न जाने कितने व्यक्तियों ने उस युग में धर्म की रक्षा के लिए इसी प्रकार अपने बलिदान दिये। क्या कभी वह समय भी आयेगा, जब उन सबके नाम जानने का भी प्रयत्न किया जायगा? ★

सम्पादक के नाम पत्र

41 मुकदमों का समाचार पढ़कर दुःख हुआ

आदरणीय महोदय,

सादर नमस्ते।

आपके द्वारा भेजा गया जनज्ञान प्राप्त हो रहा है। बहुत-बहुत धन्यवाद, यह ऐसी पत्रिका है जिसे अधुरा छोड़ते नहीं बनता।

भारत सरकार द्वारा आप पर 41 मुकद्मे चल रहे हैं, यह पढ़ कर बहुत दुख हुआ। आखिर यह सरकार ऐसा क्यों कर रही है? इसीलिए ताकि अल्प संख्यक प्रसन्न रहें और कुर्सी हिले-डुले नहीं। हिन्दू नेताओं को क्या हो गया है। वे सब डरपोक हैं। ऐसी स्थिति में आप ही हिन्दुओं की खातिर जेल जा रही हैं। भगवान् आपको दीर्घायु करे ताकि आप अपने उद्देश्य में सफल हों।

प्रधान

आर्यसमाज मडावदा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यों को बहिरागत बताने के पीछे एक षड्यन्त्र

—डॉ० ठाकुरप्रसाद वर्मा, प्राचीन इतिहास विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

आज से ठीक दो सौ वर्ष पूर्व (1786 में) अंग्रेजों के फोर्ट विलियम (कलकत्ता) के मुख्य न्यायाधीश विलियम जोन्स ने यह सम्भावना व्यक्त की कि यूनानी, लातीनी, गोथिक, केल्टिक, फारसी एवं संस्कृत आदि भाषाओं को बोलने वाले किसी एक ही स्थान पर साथ-साथ रहते थे। यों तो जब से पुर्तगालियों ने गोवा में प्रथम यूरोपीय उपनिवेश स्थापित किया तभी से उनको यह जानकर विस्मय होता था कि भारतीय भाषाओं में अनेक ऐसे शब्द हैं जिनसे मिलते-जुलते शब्द यूरोपीय भाषाओं में भी मिलते हैं।

इस जिज्ञासा ने यूरोपियन विद्वानों को भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। इस जिज्ञासा का परिणाम यह निकला कि संस्कृत सहित जेन्द, फारसी, पश्तो, बलूची, बुर्द, आरमेनियमन, यूनानी, लातीनी, गोथिक, कैल्टिक, लिथुआनियन, अल्बेनियन, तुखारी, हिन्दी, फ्रेंच, जर्मन, ट्यूटानिक, स्लावोनिक, अंग्रेजी आदि जितनी भी अन्य प्राचीन भाषायें हैं—सबका अध्ययन किया गया और इस प्रकार तुलनात्मक भाषा विज्ञान की नींव पड़ी तथा एक भाषा-परिवार की कल्पना की गई और इन्डो-जर्मानिक, इन्डो-ईरानी, इन्डो-यूरोपियन अथवा 'आर्य भाषा परिवार' आदि नाम सामने आए। कहा गया कि इनको बोलने वाली आर्य जाति कहीं भारत के बाहर निवास करती थी जो भारत में संक्रमण करके आई। इस प्रकार भारतीय इतिहास ही नहीं प्राचीन विश्व के इतिहास में दो मिथक प्रस्थापित किये गये जिन पर विगत शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इतना ऊहापोह और इतनी गर्मागर्म बहसें हुईं कि बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ होते-होते यह एक पूर्णरूपेण स्थापित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तथ्य बन गया कि आर्य एक जाति थी, वह कहीं बाहर रहती थी और पश्चिम के स्थल मार्ग से भारत में आई। कृषि और पशु पालन करने वाली, विकास की प्रारम्भिक अवस्था में रहने वाली यह आर्य जाति जब भारत में आई तो यहाँ के मूल निवासियों को पराजित करके यहाँ बस गई तथा धीरे-धीरे जंगलों को साफ करती हुई पूर्व की ओर गंगा-यमुना की घाटियों की ओर बढ़ने लगी। सौभाग्य से इसी समय बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण के अन्तिम वर्षों में मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की खुदाइयों से अत्यन्त प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष प्रकाश में आए जो प्राचीन मिस्र, सुमेर एवं वेबीलोन की सभ्यताओं की समकालीन नागर सभ्यता सिद्ध हुई। इन उत्खननों से प्राप्त प्रतिकूल तथ्यों को दबाने और अनुकूल तथ्यों को प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत करते हुए यह कहा जाने लगा कि यह द्रविड़ सभ्यता थी जो अति विकसित थी और आर्यों ने इसको नष्ट कर दिया। प्रमाण खोजे जाने लगे। इन्द्र द्वारा शत्रुओं के पुरों को नष्ट करने वाली बात को स्वीकार कर लिया गया किन्तु सैंकड़ों स्तम्भों वाले भवनों, आठ सेक्टरों में विभक्त, नौ प्रवेश द्वारों से युक्त नगर, पैदल और रथों के चलने के लिए विभक्त मार्ग की वैदिक उक्तियों को नजर-अन्दाज कर दिया गया। तथाकथित आर्य जाति के पूर्वाभिमुख प्रसार की बात को सिद्ध करने के लिये वेद की ऋचाओं तथा ब्राह्मणों के उल्लेखों का सहारा लिया गया। अथर्ववेद के "गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्य: काशी भ्यो मङ्गभ्यः। प्रैष्यन्जनमिव शेवधी तक्मानं परिद्मसि" (5/22/14) को इस बात के प्रमाणस्वरूप स्वीकार किया जाने लगा कि काशी और मगध आर्यों के क्षेत्र से बाहर थे लेकिन गन्धार और मूजवान प्रदेशों के लिए चुप्पी साध ली गई। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण के विदथ-माधव की कथा को सन्दर्भ से अलग करके तथाकथित आर्यों के पूर्व की ओर प्रसार के सन्दर्भ में प्रमाण प्रस्तुत किए जाने लगे।

इस प्रकार एक कल्पना ऐतिहासिक सत्य के रूप में प्रतिष्ठापित हो गई। विदेशी और भारतीय विद्वानों ने इसे स्वीकार कर लिया और समस्त इतिहास ग्रंथों में इसका उल्लेख किया जाने लगा। इसने हमारे अन्तर्मन के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवचेतन स्तर तक अधिकार कर लिया जिसके कारण हमारे सभी शास्त्र, इतिहास, भाषा-शास्त्र, भाषा-विज्ञान, ध्वनि-विज्ञान, नृतत्त्व-शास्त्र आदि इसी विचार से ओत-प्रोत हैं। हम इससे बाहर जाकर सोच भी नहीं सकते। यही नहीं, विदेशों पर भी इसका प्रभाव पड़ा। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हिटलर ने जर्मनी के उत्थान का जो स्वप्न देखा उसके मूल में जर्मन रक्त की शुद्धता और विशुद्ध आर्य ज़ाति होने का दावा ही था। समय-समय पर कुछ विद्वानों ने इस सोच के विरुद्ध स्वर ऊँचा किया, किन्तु मिथ्या के प्रचण्ड प्रवाह को सीमित नहीं किया जा सका। अब समय आ गया है कि हम इस विषय पर विस्तार से विचार करें और 'आर्य समस्या' के इस मिथक को, जो हमारे लिए एक समस्या बन गई है, नष्ट कर दें।

क्या आर्य कोई जाति थी ?

आर्यों को एक जाति के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह कहा गया है कि अनुमानतः 2500 से 1500 ई. पू. तक आर्य जाति कई दलों में उत्तर-पश्चिमी सीमान्त के पथ से भारत में प्रविष्ट हुई और उसने इस देश के आदिम निवासी द्रविड़ और कोल-भील आदि जातियों को पराजित करके क्रमशः उपनिवेश स्थापित किया। ये आर्य हिन्दू, पारसी, काकेशीय, ग्रीक और अन्यान्य यूरोपीय जातियों के पूर्वज थे। भारत के बाहर किसी स्थान में इनकी प्राचीन निवास भूमि थी। किन्तु यह 'आर्य' शब्द जिस भाषा और साहित्य से लिया गया है और जिस संस्कृति में इसका प्रचुरता से प्रयोग मिलता है उसमें कहीं भी यह शब्द जाति के अर्थ में प्रयुक्त नहीं किया गया है। ईरानी एवं भारतीय दोनों ही साहित्यों में इसका प्रयोग जाति के अर्थ में नहीं मिलता। विडम्बना यह कि समस्त भारतीय साहित्य में एक भी ऐसा संकेत नहीं मिलता जिससे ऐसा लगे कि प्राचीन भारतीय किसी अन्य क्षेत्र से यहाँ आए। सबसे पहले 'आर्य' शब्द को ही लिया जाए।

वैदिक साहित्य में 'अर्य' एवं 'आर्य' दोनों ही शब्द प्रयुक्त हुए हैं तथा दोनों ही परस्पर सम्बन्धित हैं। अमरकोष ने 'स्वामी' और 'वैश्य' ये दो अर्थ 'अर्य' शब्द के बताये हैं। (अर्यः स्वामि वैश्ययोः)। यहाँ पर सम्भवतः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैश्य शब्द वर्तमान प्रचलित रूढ़ अर्थ में प्रयुक्त है जिसका मूल वैदिक 'विश्' शब्द है जिसके अन्तर्गत सभी जनसाधारण आ जाते हैं न कि केवल व्यापारी वर्ग। वैदिक साहित्य में भी 'अर्य' शब्द का उल्लेख इसी सन्दर्भ में आया है। यजुर्वेद में (26/2) विभिन्न जनों का उल्लेख किया गया है जिनमें ब्रह्म, राजन्य, शूद्र, अर्य, चारण के नाम लिए गए हैं। 'यथेमा वाच कल्याणी माव दानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।' इसी प्रकार अथर्ववेद में (19/32/8) में भी ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्यायच' कहकर समाज के चारों विभागों को इंगित किया गया है। यहाँ उल्लेखनीय है कि 'अर्य' शब्द परवर्ती वैश्य के स्थान पर आया है। यदि इनको सन्दर्भ-च्युत करके देखा जायेगा तभी आर्य और शूद्र को दो विभिन्न जातियों के रूप में माना जा सकता है। यदि आर्य एक जाति मानी जाये तो शूद्र, ब्राह्मण और राजन्य (क्षत्रिय) को भी जातियाँ मानना पड़ेगा जो आर्यों से अलग थीं। कई स्थानों पर 'शूद्र' और 'आर्य' शब्द साथ-साथ आए हैं और कुछ लोगों ने इनको दो पृथक्-पृथक् जातियों के सूचक शब्दों के रूप में लिया है। शूद्र कौन-सी जाति थी यह कोई नहीं बता सकता। वे कौन-से लोग हैं जो अपने को शूद्र नामक जाति से अभिहित करते हैं? वास्तव में शूद्र एक सामूहिक सम्बोधन है जो सामाजिक स्तर की ओर संकेत करता है। इसका जाति से कोई सम्बन्ध नहीं है। ऋग्वेद में उल्लिखित 'आर्याविश्' (10/11/4) अथवा 'दासीविश्' (4/28/4 एवं 6/25/2) शब्द भी जाति-बोधक शब्दों की ओर संकेत नहीं करते क्योंकि 'दासी' या 'दास' कोई जाति थी अथवा अभी भी है यह कहीं से सिद्ध नहीं हो पाता।

व्यक्ति अपने पूर्वजों को बदल नहीं सकता, अपने माता-पिता का चुनाव नहीं कर सकता, अपनी जाति बदलकर दूसरी जाति भी नहीं अपना सकता। किन्तु वह अपना आचार-व्यवहार अवश्य बदल सकता है। एक संस्कृति अथवा आचार का पालन करने से उससे च्युत हो सकता है। इसके कारण सामाजिक बहिष्कार जैसे दण्ड का अधिकारी हो सकता है। इसी प्रकार आर्यत्व प्रयत्नपूर्वक प्राप्त करने की वस्तु थी। जाति की भाँति स्वतः उपलब्ध होने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाली वस्तु नहीं थी। 'कृतेन हि भवेदार्यो न धनेन न विद्यया'—धन या विद्या के प्रभाव से व्यक्ति आर्य नहीं होता वरन् अपने चरित्र एवं आचरण से आर्यत्व को प्राप्त होता है।

कर्तव्यमाचरन् काममकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य इति स्मृतः॥

अर्थात करने योग्य कर्मों का आचरण करके और न करने योग्य कर्मों का आचरण न करके प्रकृत आचार में स्थित रहने वाला आर्य है। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" घोष भी यही संकेत करता है कि आर्य एक संस्कृति थी जिसका प्रचार-प्रसार किया जा सकता है। आर्य कहे जाने वाले व्यक्ति भी अपने आचार से च्युत होकर शूद्रत्व को प्राप्त कर सकते थे। मनु ने व्यवस्था दी है—

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणाऽदर्शनेन च॥
मुख बाहू रुपज्जानां या लोके जातयो बहिः।
म्लेच्छवाचश्चार्यवाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः॥

"(यज्ञादि) कर्मों के न करने से क्षत्रिय जातियाँ शूद्रत्व अथवा वृषलत्व को प्राप्त होती हैं। चाहे वह म्लेच्छ भाषा बोलने वाला हो अथवा आर्य भाषा, उसे दस्यु (दास अथवा शूद्र) ही कहा जायेगा।"

यदि प्राचीन भारतीयों की ज्ञात जातियों (या संस्कृतियों) का विचार करें तो हमें प्राचीनतम साहित्य में देव, दानव (दैत्य), असुर, मनुष्य, पिशाच, यक्ष, राक्षस, नाग, विद्याधर, गंधर्व, किन्नर आदि नाम मिलते हैं। (दे० रामायण, गीता प्रेस, सुन्दर काण्डम्. 51,41,41,43) युद्ध काण्डम् 60.6 आदि)। कहीं भी आर्य शब्द मानव समूह अथवा जाति के अर्थ में नहीं आया है। इनमें कुछ जातियाँ यथा नाग, किन्नर आदि आज भी खोजी जा सकती हैं। पुराणों में आर्य देवासुर युद्धों में उल्लिखित असुरों की पहचान अब पुरातत्त्वविदों द्वारा खोजे गये असीरिया के असुर साम्राज्य से की जा सकती है। इराक के 'ध्वंसावशेषों में से असुर बनीपाल का मिट्टी के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ठीकरों पर उत्कीर्ण पुस्तकालय पुरातत्त्वज्ञों ने खोज निकाला है जिसमें सिन्धु देश के बने कपास के कपड़े का उल्लेख मिलता है। किसी ने भारतीय दृष्टिकोण से प्राचीन भारतीय साहित्य के प्रकाश में इन तथ्यों का अध्ययन करने का प्रयास नहीं किया है। सैन्धव सभ्यता के समान मुद्राओं का इन स्थानों से प्राप्त होना भी दोनों सभ्यताओं के पारस्परिक सम्बन्धों की पुष्टि करता है। किन्तु अभी तक हमारी मानसिकता इस प्रकार का प्रयास करने वाले को परम्परावादी और प्रतिगामी मानने की रही है। यह अनुसन्धान का विषय हो सकता है कि क्या असुरों की यह संस्कृति हमारे प्राचीन साहित्य में वर्णित असुरों की संस्कृति से कोई साम्य रखती हैं? क्या दिति और अदिति के पुत्रों की कथा का कोई ऐतिहासिक महत्त्व है? क्या यह मात्र एक संयोग की बात है कि हमारे भारतीय मानस में 'असुर' का जो भयंकर चित्र है वैसा ही चित्र ईरान और उसके पश्चिम के क्षेत्रों में 'देव' का भी है? हमें इन बातों पर विचारपूर्वक शोध करना चाहिए। तभी हम गोपथ ब्राह्मण (1.1.10) के 'असुर वेद', छान्दोग्योपनिषद् (8.8.5) के 'असुराणां ह्येषोपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण (1.1.4.14) के 'असुर ब्राह्मण' अथवा हरिवंश (84.6) के 'दानव ऋषि' के अर्थ वास्तविक परिप्रेक्ष्य में समझ सकेंगे। हमें आर्यवेद आर्य उपनिषद्, आर्य ब्राह्मण अथवा आर्य ऋषि के उल्लेख कहीं नहीं मिलते।

वाल्मीकीय रामायण में जहाँ कहीं भी राक्षसों के मुख से राम अथवा इस क्षेत्र के लोगों का उल्लेख आया है उनमें उन्हें सदैव मनुज, मानव आदि ही कहा गया है जब कि वे स्वयं को गर्व से राक्षस कहते हैं। रावण के वध के उपरान्त मन्दोदरी विलाप करती हुई कहती है।

पिता दानवराजो मे भर्ता मे राक्षसेश्वरः।
पुत्रो मे शक्रनजिता इत्यहं गर्विता भृशम्। युद्धकाण्डम् 111.39-40

विभीषण रावण के 'अनार्यजुष्ट वचन' को सुनकर उससे अपना मत व्यक्त करता है (सुन्दर काण्डम् 52.12)। युद्ध काण्ड के 16वें सर्ग में रावण विभीषण को फटकारते हुए पांच श्लोकों में 'तथानार्येषु सोहृदम्' कहता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। रावण की मृत्यु के पश्चात् राक्षस स्त्रियां रणभूमि में अपने पतियों को खोजती हुई "आर्यपुत्र" "हा नाथ" आदि शब्दों का उच्चारण करती हैं। सुन्दर काण्ड में सीता जी सुग्रीव को "आर्य" कहती हैं। यदि राक्षस और वानर आर्य कहे जा सकते हैं तो इसे किस प्रकार जातिसूचक माना जा सकता है? अपने ब्राह्मणत्व और संस्कृति पर गर्व करने वाले लेखक वानर और राक्षस के लिए आर्य किस प्रकार लिख सकते थे? अतः किसी भी विधा से आर्य शब्द जातिबोधक शब्द नहीं हो सकता।

यूरोपीय विद्वानों द्वारा किसी अन्य अधिक व्याप्ति वाले शब्द के अभाव में 'आर्य' शब्द को उन सभी लोगों के पूर्वजों के लिए प्रचलित कर दिया गया जो भारोपीय (इन्डोरोपीय) भाषाओं को बोलते थे। विगत दो शताब्दियों से हमने भी इसे इस भांति अपना लिया तथा प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर उच्चतम डिग्रियों तक के लिए हमें यह पाठ इतनी बार पढ़ाया गया कि अब हम इसे एक पूर्णतया स्थापित सत्य मानते हैं।

मूल स्थान की खोज

जब 'आर्य' जातिवाचक शब्द नहीं है तो उनके मूल स्थान की खोज करना व्यर्थ का बौद्धिक व्यायाम मात्र है। किन्तु आर्य शब्द का उपयोग वैदिक भारतीयों के लिए रूढ़ हो गया है और यह एक पूर्णतया स्थापित तथ्य के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है कि वैदिक भारतीयों के पूर्वज कहीं बाहर से भारत में आये। अतः इस विषय पर विचार कर लेना आवश्यक है। वैदिक भारतीयों के बाहर से आने के विचार के पीछे भाषाशास्त्रीय तथ्य थे जिन पर हम आगे विचार प्रकट करेंगे। किन्तु इनके पीछे साम्राज्यवादी इरादे थे, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। अंग्रेजी दासता के युग में किसी भी अन्य युग की अपेक्षा हमारे ऊपर सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक प्रहार अधिक किये गये। आर्य समस्या उन्हीं में से एक सबसे प्रबल प्रहार है। इससे जहां एक ओर भारतीयों का मनोबल क्षीण किया गया कि उनका मूल देश नहीं है और इस पर गर्व एवं अभिमान करने की बात नहीं है, वहीं दूसरी ओर उत्तर भारत के लोग आर्य और दक्षिण भारतीय द्रविड़ हैं, यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहकर फूट का बीज डाला गया। यह भी प्रभाव डाला गया कि इस भारतवर्ष रूपी धर्मशाला में जिस प्रकार शक, पहलव, तुर्क, अफगान, मंगोल आये उसी प्रकार अंग्रेज भी आये हैं और उनका भी इस देश पर उतना ही अधिकार बनता है जितना अन्य किसी का। इसके लिए उनके तर्कों के अनुकूल प्रमाणों को पुरस्कार किया गया और प्रतिकूल प्रमाणों को दबा दिया गया। यहाँ पर उदाहरण के लिए मेगस्थनीज के एक उदाहरण को प्रस्तुत करना उचित होगा जो अब से 2,300 वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यवन राजदूत होकर आया था और भारत के विषय में उसके उद्धरणों को बड़े प्रामाणिक तथ्यों के रूप में बार-बार प्रस्तुत किया गया है। मैकक्रिण्डल द्वारा सम्पादित "एशियन्ट इण्डिया मैगस्थनीज" के पृष्ठ 34 पर उद्धृत है, "......भारत एक विशाल देश होने के कारण, उसमें विभिन्न एवं बहुसंख्यक जातियां बसती हैं जिनमें से एक भी मूलतः विदेशी नहीं है। प्रत्यक्षतः सभी देशी हैं, और यह भी कि भारत में न कोई उपनिवेश बाहर से आकर स्थापित हुआ और न कभी (भारत से) बाहर जाकर उपनिवेश स्थापित किया गया।"

इससे स्पष्ट है कि अबसे 2,300 वर्ष पूर्व भारतीयों और विदेशियों में भी किसी को यह पता नहीं था कि हम आर्य हैं और कहीं बाहर से आये हैं। कुछ विदेशी लेखकों ने भी इस तथ्य की ओर इशारा किया है। विगत शताब्दी में 'भारत का इतिहास' लिखते समय एलफ़िस्टन ने स्वीकार किया है कि मनुस्मृति तथा वेदों में अथवा किसी भी (भारतीय) ग्रन्थ में भारत के बाहर रहने या भारत के अतिरिक्त किसी देश का संकेत नहीं मिलता। कीथ ने भी 'कैम्ब्रिज हिस्टरी ऑफ इण्डिया' पृष्ठ 78 पर लिखा है कि "वैदिक भारतीय भारत में किस प्रकार आये इस विषय पर ऋग्वेद से निश्चय ही कोई सहायता नहीं मिलती।" अतः उसने सावधान किया है कि इन सामग्रियों से निष्कर्ष निकालने में बहुत सावधानी बरतनी पड़ेगी। किन्तु वह तो भारतीयों को आर्य सिद्ध करने एवं उन्हें बाहर से आया हुआ सिद्ध करने के लिए तुला बैठा था और इस कारण उसने उनके आने का मार्ग निर्धारित किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसके साथ ही आर्यों की एक विशिष्ट छवि प्रस्तुत की गई है। आर्य गौरवर्ण और लम्बे थे। वे घोड़ों पर यात्रा एवं संक्रमण करते थे, वे कृषि-कर्मी एवं ग्राम्य जीवन बिताने वाले लोग थे, आदि चित्र प्रस्तुत किये गये जो या तो अज्ञान पर अधारित थे अथवा मूर्खता से प्रेरित थे। हमारा भारतीय साहित्य बताता है कि अनेक ऋषि-महर्षि कृष्णवर्ण थे। मनु के वंश में जन्म लेने वाले श्रीराम भी कृष्णवर्ण थे। उनके भ्राता लक्ष्मण गौरवर्ण थे। यह बात आज भी हम भारतीय परिवारों में पाते हैं कि एक ही वंश से उत्पन्न कुछ भाई गौरवर्ण हैं और कुछ कृष्णवर्ण हो सकते हैं। महाभारत काल में भगवान् श्री कृष्ण कृष्ण वर्ण के थे।

कुछ महर्षियों के भी कृष्ण वर्ण का होने का उल्लेख आता है। आर्यों को अनिवार्य रूप से घोड़ों से जोड़कर छलपूर्वक यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया कि सैन्धव सभ्यता से आर्यों का सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि वहाँ घोड़ों के अवशेष नहीं मिलते। इसे एक गम्भीर तर्क के रूप में प्रस्तुत किया गया। भारतीयों को घोड़ों का ज्ञान नहीं था अथवा वे उनका उपयोग नहीं करते थे ऐसी बात नहीं है। किन्तु इस बात को एक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करना धूर्त बुद्धि का परिचायक है। इसी प्रकार कृषिकर्म एवं ग्राम्य जीवन को आर्य जाति से समीकृत करने वाली बात भी है। इसमें यह तर्क निहित है कि वैदिक लोग अन्य उद्योग-धन्धे एवं व्यापार विकसित नहीं कर सके थे अतः वे विकास के प्रारम्भिक स्तर पर थे और नागर सभ्यता से सर्वथा अपरिचित थे। डा. सत्यकाम वर्मा ने 'वैदिक स्टडीज' (पृष्ठ 140) में अनेक प्रमाण देकर यह बताया है कि वैदिक समाज उद्योगप्रधान नगरवासी समाज था जो कृषि के क्षेत्र में भी काफी प्रगतिशील था। अथर्ववेद में अष्ट-चक्रा एवं नवद्वार वाले नगर के उल्लेख को एक कल्पनामात्र स्वीकार किया जा रहा है। किन्तु इस प्रकार के काल्पनिक ही सही, एक नगर का उल्लेख क्या यह प्रकट नहीं करता कि वैदिक भारतीय नगर से परिचित थे? रथों एवं पैदल चलने वाले लोगों के लिए पृथक् सड़कों की योजना (अथर्ववेद 12।1।87) सुनिर्मित द्यूत-गृहों का अस्तित्व जिनके अपने नियमो-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पनियम थे (ऋग्वेद 10/34 5-6 अदथर्ववे 12/?/46), सुनिर्मित एवं वेगवान रथों (ऋग्वेद 1/38/12, 1/39/6, 11/64/2-3, 2-18।4-7) आदि के उल्लेख ग्राम्य सभ्यता की ओर तो इंगत नहीं करते ? इसलिए भारत में नगर नहीं थे और भारतीय नागर सभ्यता से अपरिचित थे अथवा वे नागर सभ्यता वाली जातियों के शत्रु थे और उन्होंने नागर सभ्यताओं का विनाश किया आदि बातें निहित मन्तव्यों से प्रेरित एवं अज्ञान पर आधारित थीं। हमने स्वयं भी इस दिशा में मौलिक शोध न करके विदेशियों द्वारा किये गये शोधों को स्वीकार कर लिया एवं उनके अनुवादों तक ही अपने ज्ञान को सीमित रखा।

पुरातत्त्व शास्त्र ने भी इस दिशा में अपना योगदान किया है। पुरातात्त्विक प्रमाणों को अधिक ठोस एवं अकाट्य रूप से प्रस्तुत किया जाता है तथा प्राचीन भारतीय साहित्यिक प्रमाणों को काल्पनिक एवं अप्रामाणिक मानकर एकदम उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता हैं। जान मार्शल एवं व्हीलर की परम्परा में दीक्षित भारतीय पुरातत्त्वज्ञ अभी तक अपने को उनके द्वारा स्थापित मानदण्डों से पृथक् नहीं कर पाए हैं। विडम्बना यह है कि उनकी परम्परा का पालन करते हुए उत्खनक स्वयं ही अपने द्वारा उत्खनित सामग्री का विश्लेषण एवं निष्कर्ष भी प्रस्तुत करता है जबकि वह अनिवार्य रूप से साहित्य एवं एतिहास का ज्ञाता नहीं होता। इसी कारण सम्प्रति स्थिति यह दिखाई पड़ती हैं कि भारतीय इतिहास के लिए साहित्य एवं पुरातत्त्व एक समान धरातल पर कभी खड़े नहीं हो सकेंगे। भारतीय पुरातत्त्व में प्रारम्भ में किये गये भ्रान्तिपूर्ण विश्लेषण का ही यह परिणाम है। वर्तमान विश्लेषणों के आधार पर समस्त पुरातात्त्विक साक्ष्य इस ओर इंगित करते दिखाई पड़ते हैं कि भारत में मानव सभ्यता के प्रसार की दिशा पश्चिम से पूर्व की ओर है। पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान सहित) से पूर्व की दिशा में क्रमशः सभ्यता का विकास हुआ। किन्तु अब अखण्ड भारत के बाहर पुरातात्त्विक अवशेषों पर इस दृष्टि से विचार करते हैं तो पश्चिम से आने वाली इस तथाकथित सभ्यता के प्रवाह के चिन्ह कहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं मिलते । सैन्धव या हड़प्पीय सभ्यता के जो कई सौ बस्तियों के अवशेष खोजे जा चुके हैं उनमें दो तिहाई से अधिक स्वतन्त्रता पूर्व के सम्पूर्ण भारत में और शेष थोड़े-से इसके पश्चिम में मिलते हैं। सैन्धव सभ्यता के अवशेष से प्राप्त सामग्रियों की वैदिक सभ्यता से साम्य के प्रमाणों के विस्तार में न जाकर यहां यहीं कहना पर्याप्त होगा कि यह निश्चय ही भारतीय सभ्यता थी और वैदिक सभ्यता के अनुरूप थी तथा इसे सैन्धव न कहकर सारस्वत सभ्यता कहा जाना चाहिए ।

यहां मैं पुरातत्त्वज्ञों का ध्यान एक और तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहूंगा । साहित्यिक साक्ष्यों की उपेक्षा करने वाले ये विद्वान् अपने उत्खननों में स्तरों का वर्गीकरण करते समय गुप्त, कुषाण, शुंग और मौर्य स्तरों तक के नामकरण तो इन राजवंशों के नाम के आधार पर करते हैं, जो केवल साहित्यिक स्रोतों पर ही मुख्य रूप से आधारित हैं, किन्तु इसके पूर्व के स्तरों के लिए मृदभाण्डों के वर्गीकरण के आधार पर निर्मित संस्कृतियों का नाम देते हैं । इस प्रकार धूसरचित्रित मृदभाण्ड संस्कृति आदि नाम देकर उनका कालक्रम निर्धारित करते हैं । यह अन्धेरे में तीर चलाने के समान है, क्योंकि ज्यों ही कोई नवीन तथ्य उत्खन्न से प्रकाश में आता है, निष्कर्षों को पुनरीक्षित करना पड़ता है ।

पुरातत्त्वज्ञों के काल निर्धारण में कुछ न कुछ त्रुटि अथवा भ्रम है यह स्वीकार करना ही पड़ेगा । उदाहरण के लिए बुद्ध के काल को ही लें । गौतम बुद्ध का काल प्रायः सर्वसम्मति से ईसा पूर्व छठी शताब्दी माना जाता है । उनके जीवन काल से सम्बन्धित स्थलों—बोधगया, काशी, श्रावस्ती, तथा वैशाली की पुरातात्त्विक खुदाइयां हो चुकी हैं । इनमें 5-6 शताब्दी ईसा पूर्व तक जाते-जाते सामग्रियों का अभाव होने लगता है । इन स्थलों की प्राचीनता पुरातात्त्विक उत्खननों के आधार पर 8वीं शताब्दी ई. पू. में अधिक नहीं जाती । पुरातात्त्विक कालगणना के अनुसार 8वीं शताब्दी ई. पू. में इन स्थलों पर मानव संचरण प्रारम्भ हुआ । काशी (राजघाट) में उपकाल 1अ में जो 800 ई. पू. के मध्य का कालखण्ड माना गया है, रैड

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्लिप्ड वैयर कल्चर कहा गया है, जो उत्खनकों के अनुसार अनार्यों का संस्कृति रही होगी। इस कालखण्ड में एक भी पैन्टेड ग्रे वेयर का टुकड़ा नहीं मिला जो विद्वानों के अनुसार परवर्ती आर्यों के संस्क्रमण से सम्बद्ध की गई है। इसका मिलना 1 ब काल खण्ड से प्रारम्भ होता है जो 600 ई. पूर्व-400 ई. पू. का समय बताया गया। अर्थात् इसी खण्ड में आर्यों का आगमन इस काशी क्षेत्र में होता है। यहां दशा ऊपर गिनाये गये उन सभी स्थलों की है जो बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित रहे हैं। क्या उनका यह अर्थ लगाया जाय कि बुद्ध की कथा और उनका धर्मचक्र-प्रवर्तन काल्पनिक कथायें हैं ? क्या यह समझा जाये कि बुद्ध अनार्य थे और उन्होंने अपना उपदेश अनार्यों के बीच दिया ? क्या ये क्षेत्र बुद्ध के जीवन काल में या उनके कुछ ही समय पूर्व संस्कृति के सम्पर्क में आये थे ?

इस क्षेत्र के सम्बन्ध में बौद्ध साहित्य से जो चित्र उभरता है वह इससे सर्वथा भिन्न है। षोडष महाजनपदों में सम्पूर्ण उत्तर भारत का क्षेत्र आ जाता है। बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के लिए महाभिनिष्क्रमण करते हैं तो पूर्व की ओर जाते हैं। यदि पुरातत्वज्ञों एवं आधुनिक इतिहासकारों (जिनमें यूरोपीय एवं भारतीय इतिहासकार दोनों ही शामिल हैं) के अनुसार इस तथाकथित आर्य सभ्यता का गुरुत्व केन्द्र पश्चिमी क्षेत्र में था तो बुद्ध को उस दिशा में जाना चाहिये था। उन्होंने जिन गुरुओं से सम्पर्क किया और फिर उनसे मिलकर आगे बढ़े वे अपने समय के परम्परागत भारतीय ज्ञान एवं विद्या के महान् जानकार थे। बोधगया में बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात् अपने धर्मचक्र प्रवर्तन के लिए उन्होंने काशी को चुना। उनके पूर्व के पाँच शिष्य भी, जो पहले उन्हें छोड़ कर चले आये थे काशी में ही गये थे। इस प्रकार कम से कम छठी शताब्दी ईसा पूर्व में काशी की ख्याति अवश्य रही होगी और इसके लिए उसकी स्थापना कई शताब्दी पूर्व होनी चाहिए जिसके लिए पुरातात्त्विक कालक्रम में कोई स्थान नहीं है। बौद्ध साहित्य बताता है कि उस समय उत्तर भारत के बड़े-बडे नगर तक्षशिला, मथुरा, साकेत, श्रावस्ती, काशी, राजगृह आदि व्यापार मार्गों से जुड़े हुए थे और सार्थवाह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यापार सामग्रियों के साथ नियमित यात्रायें करते थे। यह व्यापार प्रक्रिया भी काफी संश्लिष्ट थी जिसके विकास के लिए अनेक शताब्दियां अपेक्षित हैं। भारतीय इतिहासज्ञ एवं पुरातत्त्वविद भी छठीं शताब्दी ईसा पूर्व के काशी, कोशल, मगध के राजवंशों की पौराणिक सूची को कमोवेश मानते ही हैं। ये सभी बातें इस बात की ओर ही इंगित करती हैं कि इस क्षेत्र का इतिहास एवं संस्कृति 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व जितनी नहीं उससे भी अनेक शताब्दियां पुरानी हैं। एक और तथ्य की ओर ध्यान देना जरूरी है। ऐतिहासिक युग मे तो यवन, कुषाण, तुर्क, पठान, मुगल आदि आक्रमणकारी लाहौर से राजमहल की पहाड़ियों (बिहार) तक पहुंचने में 6 मास से एक वर्ष तक का समय लगाते थे और इस अवधि में सम्पूर्ण उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेते थे किन्तु आर्यों को सिन्धु घाटी से गंगा की घाटी एवं काशी मगध आदि पहुंचने में छह शताब्दियों से अधिक लग जाने की बात की जाती हैं। क्या छठी शताब्दी ई. पू. के पहले की शताब्दियों में उत्तरी भारत इतने अभेद्य वनो एवं प्राकृतिक बाधाओं से युक्त था कि इस कल्पित आर्य संस्कृति के प्रसार के कार्य में अनेक शताब्दियी लग गईं? पुरातत्त्वविदों को इस दृष्टिकोण से भी विचार करना होगा तथा इन बिन्दुओं का उत्तर ढूंढना होगा। तभी भारतीय इतिहास में पुरातत्त्व को उचित महत्त्व मिल जायेगा।

आर्यों के मूल स्थान निर्धारण की दृष्टि से विगत शताब्दी के उत्तरार्ध में इतनी अधिक परिचर्चायें हुई भारतीय इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से यदि उस कालखण्ड को 'आर्य स्थापना काल' कहें तो अधिक उपयुक्त होगा। इस परिचर्चा का परिणाम यह निकला कि भारत के अतिरिक्त समस्त एशिया और यूरोप में आर्यों का मूल निवास स्थल खोजा गया और सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये। सूची बहुत लम्बी है और सुधी विद्वान्गण उसके विषय में जानते हैं। अतः उसे यहां दुहराने का प्रयास नहीं किया जायेगा। यहां हम केवल भारत की दृष्टि से विचार करेंगे और यह जानने का प्रयत्न करेंगे कि हमारा प्राचीन साहित्य इस विषय में क्या करता है और कुछ नवीन पुरातात्त्विक अनुसंधान क्या संकेत कर रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस बात को तो अनेक विद्वानों ने स्वीकार किया है कि वैदिक एवं परवर्ती भारतीय साहित्य में कहीं भी ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता जिससे यह कहा जा सके कि प्राचीन भारतीय किसी अन्य स्थान से भारत में आये। मानव सभ्यता के आदिम काल से ही वे इसी भारत भूमि पर रहते आए हैं, यही संकेत प्राचीन भारतीय साहित्य देता है पौराणिक साहित्य में गुफानिवास से लेकर फल संग्राहक, कृषि के विभिन्न स्तरों से होते हुए नागर सभ्यता के उच्चतम उत्कर्ष को प्राप्त करने तक के उल्लेख प्राप्त होते हैं। अत्यन्त सुदीर्घ काल के प्रयोगों और अनुभवों के आधार पर ही भारतीय मानस 'काल की चक्रीय व्यवस्था' की परिकल्पना कर सका जिसमें व्यक्तियों एवं समाजों के जीवन में उत्थान एवं पतन, उत्कर्ष एवं अपकर्ष के इतिहास के बारम्बार दुहराये जाने की बात कही गई। मिस्र, बैबीलोन, मैसोपोटामिया, मय आदि की प्राचीन सभ्यताओं के प्रकाश में आ जाने से इस परिकल्पना की सत्यता सिद्ध हो रही है और मानव विकास की 'एकरेखीय परिकल्पना' पर विश्वास करने वाले इतिहासज्ञों ने भी अब इस ओर विचार करना प्रारम्भ कर दिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव विकास की सम्पूर्ण कथा हमारे प्राचीन साहित्य में सुरक्षित है जिसे इस दृष्टि से देखना होगा। इस भारत भूमि के सहस्राब्दियों के भौगोलिक परिवर्तनों के भी हम द्रष्टा एवं साक्षी रहे हैं—यह भी हमारा साहित्य हमें बताता है। विन्ध्य पर्वत किस प्रकार झुका और हिमालय किस प्रकार अस्तित्व में आया, गंगा किस प्रकार पर्वत में से निकल कर मैदानों में लाई गई, सरस्वती किस प्रकार विलुप्त हो गई तथा मरुस्थलों का निर्माण किस प्रकार हुआ, इन कार्यों में हमारे पूर्वजों का कितना योगदान रहा इसकी स्मृति हमें है। हमारे साहित्य में इसका वृत्त तो अंकित है किन्तु बाहर से आने का कोई उल्लेख नहीं है।

भारत भूमि मानवों की जन्मभूमि और उनके प्रारम्भिक क्रिया कलापों की आदि भूमि क्यों नहीं हो सकती यह हमारी समझ में नहीं आता। संसार की जितनी प्राचीन सभ्यताएं पुष्पित पल्लवित हुईं वे सब नदियों की घाटियों में हुई बताई जाती है। फिर गंगा-यमुना और सरस्वती-सिन्धु की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घाटियाँ इस दृष्टि से वन्ध्या क्यों मानी जाती हैं यह बात समझ में नहीं आती। क्यों यह क्षेत्र आठवीं शताब्दी ई. पू. जंगल प्रदेश बना रहा और उन काल्पनिक आर्यों की प्रतीक्षा करता रहा जिन्होंने इसे कथित रूप में अब से तीन हजार वर्ष पूर्व आकर रहने योग्य बनाया ? क्या विन्ध्य की पर्वत श्रेणियाँ इस योग्य नहीं थीं कि वे आदिम मानव को अपनी गुफाओं में स्थान देकर उनकी गतिविधियां जारी रखने के लिए उचित वातावरण एवं ज़ल-भोजन की सुविधा दे सकें ? क्या गंगा-यमुना-सरस्वती की सुविस्तृत एवं उपजाऊ घाटियां मानव सभ्यता के विकास के लिए उचित संरक्षण एवं सुविधायें नहीं जुटा सकती थीं ? यदि ऐसा है तो आर्यो की आदि भूमि, जन्म भूमि, पितृ भूमि क्यों नहीं बन सकती ? यह सम्पूर्ण आर्यावर्त ही आर्यों का मूल स्थान क्यों नहीं बन सकता ?

मनु ने इस क्षेत्र का वर्णन किया है(2/17/24)। वे पहले सरस्वती और दृषद्वती की उपत्यका ब्रह्मावर्त का वर्णन करते हैं। इसके बाद कुरुक्षेत्र, मत्स्य-पन्चाल एवं शूरसेन को ब्रह्मर्षि देश कहते हैं। फिर हिमालय और विन्ध्य की भूमि, जो विनशन एवं प्रयाग के बीच है, को मध्य देश कहते हैं। स्पष्ट है कि भौगोलिक दृष्टि से ब्रह्मवर्त और ब्रह्मर्षि देश मध्य देश के अन्तर्गत आ जाते हैं। इसके बाद वे आर्यावर्त की सीमा बताते हैं जो भौगोलिक दृष्टि से इससे भी अधिक व्याप्ति वाली है। पूर्व एवं पश्चिम से समुद्र से घिरी हुई एवं उत्तर एवं दक्षिण से (हिमालय एवं विंध्य) पर्वतों के बीच की भूमि को उन्होंने आर्यावर्त कहा है। इस परिभाषा में सम्पूर्ण उत्तर भारत आ गया और यह परिभाषा कुछ बाद की लगती है। पंतजलि महाभाष्य की परिभाषा (6 । 3 । 109) इससे प्राचीन लगती है जिसका समर्थन कई अन्य धर्म-सूत्र एव स्मृतियां करती हैं। महाभाष्य के अनुसार दर्शन से पूर्व कालकवन से पश्चिम, हिमालय से दक्षिण एवं पारियात्र से उत्तर की भूमि अर्यावर्त है। कुछ स्मृतियों में दर्शन की जगह विनशन (बौधायन (1।27) और पारियात्र की जगह विन्ध्य (वसिष्ठ 1।7) आता है। किन्तु इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि क्षेत्र लगभग वही है। गंगा-यमुना की घाटी को मध्य देश कहा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया है जो भौगोलिक दृष्टि से लगभग सम्पूर्ण आर्यावर्त की परिव्याप्ति कर लेता है। इस प्रकार यही भूमि प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति का मूल स्थान रहा है, इसमें सन्देह नहीं।

ऋग्वेद में (10।75/5-6) नदियों के नाम आते हैं जिनमें गंगा, यमुना, सरस्वती, शतुद्रि, परुष्णी, अश्विनी, वितस्ता, अर्जीकिया, सिन्धु, कुभा, गोमती, भुम्र आदि के नाम भौगोलिक क्रम में उल्लिखित हैं। ये नदियां उत्तर भारत से लेकर अफगानिस्तान तक के क्षेत्र की हैं। इसमें भौगोलिक जानकारी तों मिलती ही है किन्तु यह सूक्त एक और बात की ओर संकेत करता है; इससे इन नदियों का क्रम गिनाने वाले की अपनी स्थिति की जानकारी भी मिलती है। जिस किसी ने भी इन नदियों का क्रम गिनाया है वह स्वयं गंगा की उपत्यका में बैठा इन्हें गिना रहा है। इसमें सन्देह नहीं। यह पुनः मध्य देश की ओर संकेत करता है जो वेदों एवं वैदिक भारतीयों का मूल स्थान था।

पारसियों की अवेस्ता में आर्याना-वेइजो को आर्यों का मूल निवास स्थान बताया गया है यह भी कहा गया है कि अत्यधिक ठंड बढ़ जाने के कारण वहाँ से आर्यों का निष्क्रमण हुआ और उन्होंने सोलह देश बसाये जिनमें पंद्रहवां देश हप्तहिन्दु है। इस आर्याना-वैइजो हप्तहिन्दु की खोज भी पिछली शताब्दी का वाग्विलास बन गया था। किसी ने अजरबाइजान को आर्याना-वेइजो माना और किसी ने उत्तरी ध्रुव को। किन्तु आर्यावर्त को आर्याना-वैइजो (आर्यानां वर्तः) के रूप में ही देखा जहाँ इस समस्या का हल छिपा हुआ है। वैदिक भारतीयों ने इसी क्षेत्र में अनेक हिमयुग (ग्लैशियर युग) देखे हैं—प्रलय भी देखे हैं। अतः ऐसे कठिन समयों में कुछ लोगों का निष्क्रमण असम्भव नहीं है। ईरान में अहरहवैतीय और हरयू नदी के नामकरण भारतीयों के पश्चिमाभिनिष्क्रमण के अवशेष माने जा सकते हैं, क्योंकि दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में भी भारतीय नदियों एवं नगरों के नाम मिलते हैं। इराक के राजा 'यिमख्शएत' की पहचान यम वैवस्वत से की जा सकती है। जो मनु वैवस्त (विवस्वान् के पुत्र) के भाई थे। प्रलय के पश्चात् मनु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने भारत में संतति विस्तार किया और यम ने ईरान-इराक क्षेत्र में। इस संक्षिप्त लेख में इस विषय पर विस्तार में जाने का अवसर नहीं है किन्तु यह बता देना विषय के अनुकूल होगा कि जिस प्रकार वर्तमान युग में अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार काल में संसार के अनेक क्षेत्रों में नगरों-स्थानों आदि के नाम अंग्रेजी भाषा के आधार पर पड़े, उसी प्रकार भारतीय नामों की छाप संसार के अनेक देशों, नगरों पर्वतों, नदियों में मिलते है तथा भाषाओं पर भी इनकी छाप पड़ी है जो भारतीयों के विदेश निष्क्रमण के चिह्न रूप में अभी भी दिखाई पड़ते हैं। इसी तथ्य ने तुलनात्मक भाषा शास्त्र को जन्म दिया और इन्हीं से यूरोपीय भाषा परिवार की कल्पना की गई तथा विभिन्न भाषा-शास्त्रीय सिद्धान्त स्थिर किये गये। ऐसे सिद्धान्तों के प्रतिपादकों को हम डा. सत्यकाम वर्मा की (वैदिक स्टडीज पृ. 145) चेतावनी का स्मरण दिलाना चाहेंगे कि 'भाषा शास्त्रियों को अपने विचार इतिहास से ग्रहण करने चाहिये न कि इसके विपरीत।' अर्थात् यदि भाषा शास्त्र के आधार पर इतिहास के सूत्रों के निर्धारण का प्रयास किया जायेगा तो आर्य समस्या जैसी काल्पनिक समस्यायें खड़ी हो जायेगी जिनके निवारण में शताब्दियां लग सकती हैं।

यहां 'हप्तहिन्दू' के विषय में भी कुछ विचार कर लेना चाहिये। सप्त सिंधु के उल्लेख यजुर्वेद (38।6) एवं अथर्ववेद (4।6।2) में भी आते हैं और अविनाशचन्द्र दास का नाम सप्तसिंधु के साथ अमर हो गया है। किन्तु समस्त वैदिक एवं परवर्ती भारतीय साहित्य में आर्यों के मूल स्थान के विषय में स्पष्ट जानकारी होते हुए भी सप्तसिंधु के अस्पष्ट एवं संक्षिप्त उल्लेख को लेकर आर्यों का मूल स्थान खोजना अत्यन्त हास्यास्पद है। वैदिक साहित्य और अवेस्ता में कहीं भी सप्तसिंधु को आर्यों का मूलस्थान नहीं बताया गया। अवेस्ता में तो हप्तहिंदु को पन्द्रहवाँ देश कहा गया है तो उसे मूल स्थान मानने का आग्रह क्यों किया जा रहा है सप्तसिंधु वैदिक साहित्य में किसी देश का नाम है यह भी स्पष्ट नहीं है। यदि है तो उसकी पहचान भी नहीं की जा सकती। यह 7 नदियों का प्रदेश है जैसा कुछ लोगों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने प्रयास किया है अथवा सात समुद्रों का, यह शब्द स्पष्ट नहीं करता है। अत: निश्चित को छोड़कर अनिश्चित के विषय में विचार करने से बौद्धिक व्यायाम तो होता है किन्तु परिणाम कुछ नहीं निकलता।

अतः निष्कर्षतः यही कहना पड़ेगा कि आर्य समस्या कोई समस्या नहीं है आर्य नाम की कोई जाति नहीं है। यह कृत्रिम समस्या अज्ञान, निहित-स्वार्थ और आधे-अधूरे शोध कार्यों पर आधारित है। तुलनात्मक भाषा-विज्ञान का जो भवन खड़ा किया गया है उसके नींव की ईंट भ्रान्तिपूर्ण अव-धारणाओं के आधार पर खड़ी की गई है अतः इसमें आधारभूत चिन्तन की आवश्यकता है। हम भारतीयों ने भी जो कुछ शोध कार्य किया है वह इस झूठ की आंधी के आवर्त में फंस गया था। अब समय आ गया है कि हम इसे पहचानें और अपनी पूरी शक्ति के साथ सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय का मन्थन करके निकाले गये तथ्यों के साथ इस भ्रान्त धारणा को धराशायी कर दें। आर्य और द्रविड़ के काल्पनिक विभेदकारी अपप्रचार का मुंहतोड़ उत्तर देते हुए विष्णुपुराण (2।3।1) के इस घोष का उद्घोष करें :

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चापि दक्षिणम् ।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः ।। ★

भारत के वे करोड़ों मुसलमान और ईसाई बन्धु जो इस्लामी और ईसाइयत की शिक्षा के कारण प्रभु के चरणों से दूर हैं, एक बार परमात्मा के बेटे बन कर तो देखें। मजहब का कड़वा प्याला तो वे पीते रहे, अब अमृत को चख कर तो परखें। सचमुच उनका जीवन बदल जाएगा।

भारत की एकता का मार्ग है शुद्धि, मनुष्य को मनुष्य से प्यार सिखाने वाला मंत्र है शुद्धि। ईश्वर की ज्योति को ग्रहण करने का साधन है शुद्धि। शुद्धि से सांप्रदायिकता जड़-मूल से नष्ट हो जायेगी, दंगों का नाम-निशान तक मिट जायेगा। मजहब ने जो विनाश लीला दिखा रखी है उसके स्थान पर सभी मिल कर निर्माण में लगेंगे।

देशवासी शुद्धि का महत्त्व समझें। ईसाइयों-मुसलमानों को पवित्र करने वाला यह एक ऐसा अमोघ अस्त्र है जो उनके मन-मस्तिष्क को प्यार से भर देगा।

शुद्धि द्वारा वे सत्य, प्रेम, क्षमा, दान और संतोष जैसे पवित्र भाव हृदय में धारण करें और भारत की उस महान् परम्परा के सूत्र में आबद्ध हो जाएं जिसके कारण भारत संसार का सिरमौर रहा है। —महात्मा वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू सम्राट् वीर सावरकर

सागर की छाती पर सहसा, सावरकर बलवान् चला,
दनुजों का दल दलने को, महाबली हनुमान् चला।

जाने शक्ति कहाँ से आई उस स्वदेश अभिमानी में,
उछल-उछल बढ़ता जाता था, थे गोरे हैरानी में,
उधर सिन्धु की चंचल लहरें, बढ़ीं प्रमत्त जवानी में,
उधर वीर सावरकर लपका, आग लगाकर पानी में,

बन्दूकों की धांय-धांय में, विजयी वज्र समान चला,
सागर की छाती पर सहसा, सावरकर बलवान् चला।

कुछ विस्मय-कुछ भय-कुछ लज्जा, कुछ-कुछ क्रोध उमड़ आया,
दाँत पीस रह गये सभी, जब सावरकर न पकड़ पाया,
ब्रिटिश क्रूजरों मोटर बोटों का दल बादल घिर आया,
नील सिन्धु में अरुण कमल-सा वीर विनायक दिखलाया,

संगीनों का जाल तोड़कर हिन्दू का अभिमान चला,
सागर की छाती पर सहसा, सावरकर बलवान् चला।

—हिन्दू राष्ट्रकवि श्री "वल्लभ"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !

जिसके आंगन में खेल रहे हैं सूरदास के बाल श्याम,
जिसके प्रांगण में शोभित हैं तुलसी के सीता और राम,
जिसके मंदिर में गूंज रहा मीरा के गिरधर का सुनाम,
लीलामय का क्रीड़ास्थल है जिसका कोना-कोना ललाम,
वह 'पुण्यभूमि' जिसकी पूज्या, उस हिन्दू को मेरा प्रणाम,
उसके पदपद्मों को, पद की पावन रज को मेरा प्रणाम,
उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !

जिसके रग-रग में दीख रहा अब तक उसका स्वर्णिम अतीत,
जिसके श्वासों में गूंज रहा उसके वेदों का अमर गीत,
देखा करती जिसकी भृकुटि ही प्रकृति प्रिया निशदिन समीत,
गौरीशंकर जिसकी चोटी गंगा जिसका यज्ञोपवीत,
वह 'पितृभूमि' जिसकी अपनी, उस हिन्दू को मेरा प्रणाम,
उसके पदपद्मों को, पद की पावन रज को मेरा प्रणाम,
उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !

सरितायें जिसकी कण्ठहार, हरियाली जिसका दिव्य चीर,
मलयाचल की शीतल सुवायु है जिसके श्वासों का समीर,
जिसकी गोदी में खेले हैं राणा प्रताप, शिवराज वीर,
बन्दा वैरागी, छत्रसाल, बप्पा, कुम्भा, सांगा, हमीर,
वह 'मातृभूमि' जिसकी माँ है, उस हिन्दू को मेरा प्रणाम,
उसके पदपद्मों को, पद की पावन रज को मेरा प्रणाम,
उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !

—मदन गोपाल सिंहल,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू हूं !

महात्मा रामचन्द्र 'वीर'

मैं ज्वालामुखी धराधर हूं, मैं सरस सुधामय इन्दू हूं,
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं !
मैं गौतम, कपिल, कणाद, व्यास, मैं ही अगस्त्य विज्ञानी हूं,
मैं परशुराम प्रलयंकर हूं, मैं द्रोण धनुर्धर ध्यानी हूं,
मैं याज्ञवल्क्य, जमदग्नि, अत्रि, मैं पाणिनि ऋषि सुज्ञानी हूं,
चाणक्य महानीतिज्ञ चतुर, अत्यन्त आत्म अभिमानी हूं,
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं !
मैं हरिश्चन्द्र हूं दृढ़प्रतिज्ञ, मैं नृप शिवि प्राणी रक्षक हूं,
मैं राघवेन्द्र रघुकुल भूषण, मर्यादा का संरक्षक हूं,
मैं दुष्ट दैत्य दानव दल के, दमनार्थ बन गया तक्षक हूं,
मैं प्रणपालक राणा प्रताप, फल पत्र कन्द तृण भक्षक हूं,
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं !
मैं चन्द्रगुप्त बनकर प्रकटा, विक्रमादित्य बनकर आया,
शक हूण यवन गिन-गिन मारे, सम्पूर्ण विश्व तब थर्राया,
शिवराज छत्रपति बन मैंने, हिन्दू ध्वज नभ में फहराया,
बन्दा वैरागी बन मैंने, हिन्दुत्व सूर्य को चमकाया,
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं !
मैं बाजी राव पेशवा हूं, मैं रिपु विजयी रणजित्सिंह हूं,
अफगान सैन्य संहारक हूं, बलशाली नलवा हरिसिंह हूं,
अंग्रेज शत्रुओं का नाशक, मैं ही बन गया कुंवरसिंह हूं,
सावरकर और भगतसिंह हूं. लन्दन विजयी ऊधमसिंह हूं,
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं !
मैं रासबिहारी बोस बना, मैं तिलक राजगुरु बन प्रकटा,
मैं नेताजी बनकर सहसा, गोभक्षक गोरों पर झपटा,
मैं ही राममूर्ति बनकर, था अगणित देशों में दपटा,
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन का लक्ष्य

जो व्यक्ति जीवन का उद्देश्य भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति-मात्र मानते हैं वे योग और ब्रह्मचर्य के भाव को नहीं समझ सकते। ये दोनों शब्द भौतिकता को साधन मानकर जीवन के सत्य-असत्य तत्त्व के उत्कर्ष की व्याख्या करते हैं।

"मैं" क्या हूँ? यह देह, या इस देह में रहने वाला, इस देह को जीवित रखनेवाला ? देह को भौतिक भोजन चाहिये और मुझे भी तो भोजन चाहिये। वह भोजन कैसे मिले, इस ज्ञान का – दर्शन का, चिन्तन का नाम योग है।

जो भोजन मुझे अर्थात् आत्मा को मिला, उसका पाचन-पोषण-संवर्धन में आत्मा कैसे करे ? इस अनुशासन की व्याख्या का निरूपण है ब्रह्मचर्य।

आधुनिक युग भौतिकवादी है। इसका अर्थ है कि अज्ञानी है। आज ज्ञान के नाम पर अज्ञान का विकास हो रहा है, परिणामस्वरूप मनुष्य पशु बनता जा रहा है।

इस प्रवाह को रोकना आज असम्भव प्रतीत हो रहा है। पर इस असम्भव को सम्भव बनाकर ही युग-परिवर्तन की आधार शिला रखना हमारा संकल्प है।

ब्रह्मचर्य धारण कीजिए

- शक्ति, बुद्धि, तेजस्विता, साहस, स्वास्थ्य, धन और राज्य ब्रह्मचर्य से प्राप्त होता है। **—महर्षि दयानन्द सरस्वती**
- इन्द्रियों के विषयों में सुख न समझो। **– स्वामी रामतीर्थ**
- ब्रह्मचर्य ही साधुता है। दुर्बलता ही पाप है। **– स्वामी विवेकानन्द**
- नवयुवको ! बल और बुद्धि के बिना अधिकार नहीं मिल सकते। ब्रह्मचर्य ही एकमात्र साधन है। **– लोकमान्य तिलक**
- देश से क्या आशा है ? अब तो ब्रह्मचारियों का रूप ही बदल गया और कर्जन फैशन चल गया। **—महामना मालवीय**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

- हनुमान् और भीम के चित्र मेरी शक्ति को बढ़ाने में बिजली का प्रभाव रखते हैं। —प्रो० राममूर्ति
- सदाचार ही सुख है। —महात्मा सुकरात
- भगवान् के राज्य में प्रिय बनने के लिए विवाह न करके जीवन व्यतीत करना धर्म है। —हजरत ईसा
- जब हमें प्रत्येक स्थान पर थूकने का अधिकार नहीं तो हम ब्रह्मचर्य जैसी अजेय शक्ति का दुरुपयोग कैसे कर सकते हैं? —डा० पाल विबरू

ब्रह्मचर्य मीमांसा

यह मनुष्य देह अच्छे प्रकार आत्मबल आदि से सम्पन्न करने के लिये है।

छोटे से छोटा यह पक्ष है कि 24 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पुरुष और 16 वर्ष तक स्त्री ब्रह्मचर्याश्रम यथावत् पूर्ण करे। यह प्रातः सवन कहलाता है जिससे इस मनुष्य देह के मध्य वसुरूप प्राण प्राप्त होते हैं जो बलवान् होकर सब गुणों को शरीर, आत्मा और मन के बीच में वास कराते हैं।

जो कोई 25 वर्ष की आयु से पूर्व किसी ब्रह्मचारी को विवाह व विषय-भोग करने का उपदेश दे तो उस ब्रह्मचारी को चाहिये कि उसे उपदेश को यह उत्तर दे—

'देख, यदि मेरे प्राण, मन और इन्द्रिय 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य से बलवान् न हुए तो मध्यम सवन जो कि आगे 44 वर्ष तक का ब्रह्मचर्य कहा जाता है, उसको पूर्ण करने के लिये मुझमें सामर्थ्य न हो सकेगा। प्रथम कोटि का ब्रह्मचर्य मध्यम कोटि के ब्रह्मचर्य को सिद्ध कराता है। इसलिये मैं तुम्हारे सदृश मूर्ख नहीं, जो इस शरीर, प्राण, अन्तःकरण और आत्मा के संयोग रूप सब शुभ गुण कर्म और स्वभाव के साधन करनेवाले, इस संघात को शीघ्र नष्ट करके अपने मनुष्य देह धारण के फल से विमुख रहूँ और सब आश्रमों के मूल सब उत्तम कर्मों में उत्तम कर्म और सबके मुख्य कारण' ब्रह्मचर्य को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खंडित करके महादुःख सागर में डूबूं। जो प्रथम आयु में ब्रह्मचर्य करता है वह ब्रह्मचर्य के सेवन से विद्या को प्राप्त कर निश्चित रोगरहित होता है। इसलिये तुम मूर्ख लोगों के कहने से ब्रह्मचर्य का लोप मैं कभी न करूंगा।'

जो 44 वर्ष तक का ब्रह्मचर्य करता है वह ब्रह्मचारी रुद्ररूप प्राणों को प्राप्त होता है। उसके आगे किसी दुष्ट की दुष्टता नहीं चलती। वह ब्रह्मचारी सभी दुष्ट कर्म करनेवालों को रुलाता रहता है।

यदि मध्यम ब्रह्मचर्य के सेवन करनेवाले से कोई कहे कि तुम इस ब्रह्मचर्य को छोड़ विवाह करके आनन्द को प्राप्त करो तो उस ब्रह्मचारी को यह उत्तर देना चाहिये—

'जो सुख अधिक ब्रह्मचर्याश्रम के सेवन से होता है वह ब्रह्मचर्य को न करने से स्वप्न में भी नहीं प्राप्त होता, क्योंकि सांसारिक व्यवहार विषय और परमार्थ सम्बन्धी पूर्ण सुख ब्रह्मचारी ही प्राप्त करता है, अन्य कोई नहीं। इसलिये मैं इस सर्वोत्तम सुख प्राप्ति के साधन ब्रह्मचर्य का लोप न करके विद्वान्, बलवान्, आयुष्मान् और धर्मात्मा होकर सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त करूंगा। तुम्हारे जैसे निर्बुद्धियों के कहने से शीघ्र विवाह करके स्वयं और अपने कुल को नष्ट-भ्रष्ट कभी न करूंगा।'

जो व्यक्ति 48 वर्ष पर्यन्त उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करता है, वह पूर्ण विद्या, पूर्ण बल, पूर्ण प्रज्ञा, पूर्ण शुभ गुण, कर्म, स्वभावयुक्त सूर्यवत् प्रकाशमान होकर सभी विद्याओं को प्राप्त कर लेता है।

यदि कोई इस सर्वोत्तम धर्म से गिराना चाहे तो उसको वह ब्रह्मचारी यह उत्तर दे—'अरे! छोकरों के छोकरे! मुझसे दूर रहो। तुम्हारे दुर्गंधरूप भ्रष्ट वचनों से मैं दूर रहता हूँ। मैं इस उत्तम ब्रह्मचर्य का लोप कभी न करूंगा। इसको पूर्ण कर सारे रोगों से रहित सब विद्यादि शुभ गुण, कर्म, स्वभाव को प्राप्त करूँगा। मेरी इस शुभ प्रतिज्ञा को परमात्मा अपनी कृपा से पूर्ण करे जिससे मैं तुम निर्बुद्धियों को उपदेश और विद्या पढ़ाकर विशेष रूप से तुम्हारे बालकों को आनन्दयुक्त कर सकूं।'

गृहस्थ ब्रह्मचारी

जो व्यक्ति 16वें वर्ष से लेकर 25वें वर्ष पर्यन्त वृद्धि की अवस्था में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीर्यादि धातुओं का नाश करेगा वह कुल्हाड़े से कटे वृक्ष या डंडे से फूटे घड़े के समान अपने सर्वस्व का नाश कर पश्चात्ताप करेगा। पुनः उसके हाथ में सुधार कुछ भी न रहेगा। युवावस्था का आरम्भ 25वें वर्ष से और पूर्ति 40वें वर्ष में होती है।

जो व्यक्ति 25 वर्ष से 40 वर्ष तक की युवावस्था को यथावत् संरक्षित न रखेगा, वह अपनी भाग्यशालीनता को नष्ट करेगा। पूर्ण युवावस्था 40वें वर्ष में होती है। जो कोई ब्रह्मचारी होकर पुनः ऋतुगामी, परस्त्रीत्यागी एक स्त्रीव्रत, गर्भ रहे पश्चात् एक वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी न रहेगा, वह भी बना-बनाया धूल में मिल जायेगा।

यदि किंचित् हानि के बदले वीर्य की अधिक हानि करेगा तो वह भी प्रति-दिन भगन्दरादि रोगों से पीड़ित हो जायेगा। किन्तु जो इन अवस्थाओं को यथावत् सुरक्षित रखेगा, वह सदा आनन्दित रहकर सारे संसार को सुखी कर सकेगा।

आदित्य ब्रह्मचारी

वह ब्रह्मचारी वेद-विद्या का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर प्राण विद्या, लोक-विद्या को स्वीकारते हुए सर्वशक्तिमान् परमात्मा का ध्यान करता है वह धर्म में स्थित मोक्ष विद्या का यथावत् ज्ञान प्राप्त कर सूर्यवत् प्रकाशित होता है और दुष्कर्म करने वाले मूर्ख, पाखंडी और राक्षस स्वभाव वाले मनुष्यों को दूर भगाता है, जिस प्रकार सूर्य बादलों और अन्धकार को दूर करता है, वैसे ही ब्रह्मचारी सारे गुणों का प्रकाशक और अशुभ गुणों का नाशक होता है।

ब्रह्मचर्य तप द्वारा ही राजा ठीक से प्रजा की रक्षा करने में समर्थ होता है और विद्या ग्रहण कर ब्रह्मचर्य पालन की इच्छा करता है। अर्थात् वही राजा उत्तम होता है जो पूर्ण ब्रह्मचर्य रूप तपश्चरण से पूर्ण विद्वान्, सुशिक्षित, सुशील, जितेन्द्रिय होकर राज्य का विविध प्रकार से पालन करता है और वही विद्वान् ब्रह्मचारी की इच्छा करता और आचार्य हो सकता है जो यथा-वत् ब्रह्मचर्य से सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़ता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कन्यायें भी ब्रह्मचारिणी हो सकती हैं

जैसे लड़के पूर्ण ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या पढ़कर जवान हो, अपने सदृश कन्या से विवाह करें, वैसे ही कन्या भी अखंड ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्या पढ़कर पूर्ण युवती हो अपने तुल्य युवावस्था वाले पति को प्राप्त कर सकती है। अनड्वान यह वेगवाले पशुओं का उपलक्षण है। अर्थात् वे वेगवान बलवान पशु घोड़ा भी ब्रह्मचर्य से अर्थात् सुनियम में रहने से घास की तरह अपने विरोधी पशुओं को युद्ध में जीतना चाहते हैं। इस कारण मनुष्यों को तो अवश्य ब्रह्मचर्य पालन करना चाहिये, क्योंकि उसका स्थान पशुओं जैसा उच्चतम एवं सर्वोपरि है।

देव विद्वान् लोग ब्रह्मचर्य अर्थात् वेदाध्ययन, ब्रह्म विज्ञान और तप अर्थात् धर्मानुष्ठान द्वारा जन्म-मरण के दुःख को दूर कर मोक्ष प्राप्त करते हैं, दूसरी प्रकार नहीं निश्चय ब्रह्मचर्य से अर्थात् सुनियम से जैसे सूर्य प्रकाश धारण करता है, वैसे ही ब्रह्मचर्यानुष्ठानपूर्वक ही गृहाश्रम आदि तीनों आश्रम सुखवर्धक होते हैं। नहीं तो मूल के अभाव से फिर शाखा कहाँ ? किन्तु मूल दृढ़ होने पर शाखाफूल फल छायादि सब सिद्ध होते हैं।

---

1. जीव मनुष्य शरीर के लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त करे।
2. ज्ञान द्वारा हम सत्य और असत्य का विवेक करें।
3. हम यह चिन्तन करें कि (क) मैं कौन हूँ ? (ख) इस ससार में क्यों आया हूँ ? (ग) मैं जब जाऊँगा, तब मैं यहाँ से क्या लेकर जाऊँगा ?
4. हम अपने ज्ञान द्वारा उस धन का संग्रह करें, जिसके बल पर हम मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी बन जायें।
5. परमात्मा न्यायकारी है। वह किसी की सिफारिश नहीं सुनता।
6. मोक्ष के लिये किसी पैगम्बर, गुरु की सिफारिश काम नहीं आती।
7. जीव जब अपने स्वरूप को पहचान लेता है तब वह प्रभु के पास होता है और अपने को भुला कर परमात्मा से दूर।
8. जीवन में भी और जीवन के बाद भी परमात्मा से मिलने का केवल एक मार्ग है अपने को जानना।
9. सत्य, प्रेम, विद्या और आत्मज्ञान ही मोक्ष प्राप्ति के साधन हैं।
10. धर्म ही वह शक्ति है जिसके द्वारा जीव प्रभु की अमृतमयी गोदी में बैठने का सौभाग्य प्राप्त करता है।

—महात्मा वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आज का हिन्दू समाज लक्ष्यहीन है ?

—बिशनस्वरूप गोयल

आज हिन्दू समाज लक्ष्य हीन है ऐसा विचार मन में कचोटता है। इस देश में चार मुख्य समाज हैं—हिन्दू समाज, मुस्लिम समाज, ईसाई तथा सिख समाज। हिन्दू समाज के अतिरिक्त शेष तीनों ही समाजों का कोई न कोई लक्ष्य और उद्देश्य है। मुस्लिम समाज का लक्ष्य इस देश को तथा समस्त विश्व को दार-उल-इस्लाम बनाना है। इसके लिए हमारी सरकार ने मुस्लिम समाज को मुस्लिम पर्सनल ला जैसी सुविधा प्रदान कर उसे चार-चार निकाह एक मुस्लिम को करने का अधिकार दे दिया हैं। साथ अन्य समाजों को मत परिवर्तन कर अपने साथ मिलाने की भी छूट दे रखी है। यही नहीं इस समाज को शासन और सरकार में भागीदार बनाया हुआ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसी प्रकार ईसाई समाज भी पूरी तरह सक्रिय है और वह मानव सेवा के नाम पर अस्पताल, शिक्षण संस्थान खोल रहा है और अन्य समाजों के लोगों को अपनी ओर खींच रहा हैं। सिख समाज आज भरमा गया है और उसका लक्ष्य अभी तो केवल खालिस्तान प्राप्त करना है और उसके लिए उसने उग्रवाद का सहारा ले रखा है और वह पंजाब में गैर-सिख लोगों की निर्मम हत्यायें करने में संलग्न है।

किन्तु यदि हम ध्यान से देखें तो हिन्दू समाज हो इस देश में ऐसा समाज है जो इस देश का बहुमत है। इसका लक्ष्य क्या है? हम इसी बात को लेकर चर्चा कर रहे हैं। यह बात सर्वमान्य और निश्चित है कि जिस प्रकार जिस व्यक्ति का कोई लक्ष्य नहीं होता वह जीते हुए भी मरे समान है उसी प्रकार जिस समाज का कोई उद्देश्य या लक्ष्य नहीं होता वह समाज भी मरे के समान तो है ही और वह थोड़े समय में ही मर जाता है या नष्ट हो जाता है।

जैसा ऊपर बताया गया है कि आज देश में हिन्दू समाज बहुमत में है। वह बड़ी-बड़ी सामाजिक संस्थायें भी गठित किये हुए है। ये सस्थायें भी अपने आप को सारे समाज का ठेकेदार मानती है। किन्तु यदि इन संस्थाओं के कार्य का लेखा-जोखा लिया जाए तो पता लगता है कि इनके कामों का हिन्दू समाज को कोई लाभ नहीं हुआ है। हिन्दू दिन प्रति दिन अल्प संख्या में होता जा रहा है। इसके अपने अभिन्न अंग भी इसको तिलांजलि देकर अलग होते जा रहे हैं।

कारण बड़ा सीधा-सा है—हिन्दू समाज आज लक्ष्यहीन होकर अपने अस्तित्व को समाप्त करने की ओर अग्रसर हो रहा है। जिस समाज का लक्ष्य राजनैतिक नहीं वह समाज आज नहीं तो कल समाप्त हो जायेगा। यह निश्चित बात है।

आज हिन्दू समाज का बुद्धिजीवी सोया हुआ है और युवा वर्ग वासना प्रेमी, अपराधी मनोवृत्ति तथा नशीले पदार्थों के उपयोग में लगा हुआ है इन दोनों को ही देश और समाज से कोई मतलब नहीं है, जब कि किसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी समाज के बुद्धिजीवी और युवा शक्ति ही उसे बदलने में अग्रसर होती है किन्तु ये दोनों ही इस समय लक्ष्यहीन दिखाई पड़ते हैं। हमारे कुछ लोग हिन्दू राष्ट्र की बात करते हैं। आम हिन्दू जात-पांत तोड़ कर जातीयता समाप्त करने की बात करता है, शुद्धि करने की बात भी करता है। वह धर्मशालाओं, मन्दिरों का निर्माण करता है, वेद, गीता व रामायण का गुण-गान करता है और देवी देवताओं की पूजा भी लगन से करता है। किन्तु उसे अपने अतीत की चिन्ता नहीं है और न ही वह उसके बारे में वह सोचता है। उसे अपने भविष्य की कोई फिक्र नहीं है।

1947 से पूर्व अंग्रेजों को देश से निकालने का हमारा लक्ष्य था। वह हमने येन-केन प्रकारेण देश के विभाजन के साथ प्राप्त कर लिया। किन्तु इसके बाद हमारे देश की सत्ता ऐसे महानुभावों के हाथ में आई जो अपने आपको हिन्दू ही नहीं मानते थे जब कि देश का विभाजन हिन्दू व मुस्लिम आधार पर ही हुआ था। हमें उसी समय यह चाहिये था कि जब मुसलमानों ने अपने हिस्से को पाकिस्तान का नाम दे कर उसे इस्लामी राज्य घोषित कर दिया था, उसी प्रकार शेष बचे खण्डित हिन्दुस्थान को हिन्दू राज्य घोषित कर दिया जाना चाहिए था। किन्तु ऐसा नहीं किया क्योंकि जैसा ऊपर कहा गया है कि सत्ता ऐसे लोगों के हाथ में आयी जो स्वयं को हिन्दू मानते ही नहीं ये और उन्हें हिन्दू शब्द से घृणा थी।

इसी कारण यहां के हिन्दू समाज को सत्ताधारी लोगों ने भारतीय तो बना दिया किन्तु इसमें हिन्दुस्तान को समाप्त कर दिया क्योंकि जिन लोगों ने देश के विभाजन को स्वीकार किया उन्होंने इस देश को इण्डिया— सो काल्ड भारत+पाकिस्तान बना दिया। इन्होंने हिन्दुस्तान नाम को सदा के लिये वैधानिक रूप से विश्व के मान चित्र से समाप्त कर दिया। इसका भी यही कारण था क्योंकि हिन्दुस्तान शब्द से हिन्दू शब्द का बोध होता है। यह अंग्रेजों की एक जानी-बूझी चाल थी। इसमें उन्होंने अपने सहयोगी के रूप में गांधी और नेहरू को इस चाल के बदले में सत्ता सौंप दी और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नेहरू को इस का प्रधान मंत्री बना दिया।

अन्यथा जिस गांधी ने यह कहा था कि पाकिस्तान उसकी लाश पर बनेगा फिर वह पाकिस्तान बनने के बाद 8 महीने तक कैसे जीवित रहा। वैसे तो वह बड़ा सिद्धान्तवादी मानव कहलाता था। यही नहीं उसने ही जब पाकिस्तान ने 1947 अगस्त में बंटवारे के बाद अक्तूबर में हिन्दुस्थान पर हमला किया था उस समय पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने के लिये आमरण अनशन करने तक की धमकी दी थी। इस पर नाथूराम गोडसे ने आवेश में आकर गांधी की हत्या कर दी।

इस हत्या का आरोप रा० स्व० संघ पर लगा दिया गया जो उस समय हिन्दू समाज की एक लोकप्रिय संस्था थी और हिन्दू संगठन का काम कर रही थी और स्वयं को हिन्दू समाज का ठेकेदार मानती थी। इस आरोप में इसके नेताओं को जेल में बन्द कर यातनायें दी गयीं। जब इस संस्था ने अपने आप को लक्ष्यहीन घोषित कर दिया तब कहीं इसका छुटकारा हुआ और उसे फिरकापरस्ती की संज्ञा प्रदान कर दी। इसके बाद इन 40 सालों में आज तक सारा हिन्दू समाज भयभीत हैं क्योंकि इसके साथ फिरका-परस्ती को जोड़ दिया गया है। जबकि हिन्दू कभी भी फिरकापरस्त नहीं रहा है। आज का हिन्दू हिन्दू राष्ट्र की बात तो करता है किन्तु वह हिन्दू राज्य की बात नहीं करता।

सत्ता के बिना कोई भी जाति अपना विस्तार या अपनी संस्कृति की रक्षा नहीं कर सकती। इसलिए जब तक हिन्दू समाज का लक्ष्य हिन्दू राज्य को प्राप्त करना नहीं होगा तब तक यह समाज इसी प्रकार निरन्तर पतित होता रहेगा। क्योंकि आज जो संस्थायें हिन्दू संगठन या जागरण का कार्य करने का दावा करती हैं वे इसे बचाने में अपने आपको असमर्थ पा रही हैं। आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने लगभग अब से 112 वर्ष पूर्व की थी। उनका लक्ष्य स्वराज्य और हिन्दू जागरण था। उनकी हत्या कर दी गयी और आज यह आर्य समाज भी अपने लक्ष्य से भटक कर र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया है और इसमें भी पदलोलुपता ने अपना प्रवेश कर लिया है। आज तो आर्यसमाज की यह स्थिति हो गयी है कि आर्यसमाजों की संख्या तो हजारों में हैं किन्तु उनमें संध्या, हवन और वेद वाणी कुछ वृद्ध लोग ही कर आते हैं और वह इसी से अपने लक्ष्य की इतिश्री कर लेता है।

रा० स्व० संघ की भी यही दशा है। इसके संस्थापक डा० हैडगेवार का लक्ष्य इस देश को हिन्दू राज्य बनाना था इसी कारण उन्होंने कांग्रेस को छोड़ा था क्योंकि वे कांग्रेस को दोगली संस्था मानने लगे थे। किन्तु आज जब कि इसकी शाखाओं की संख्या लाखों में हैं, उनमें 5, 10 और 50 साल की आयु तक के लोग दक्ष-आराम करते ही दिखाई पड़ते हैं उन्होंने भी अपने काम की यहीं इतिश्री कर दी है और लक्ष्य हीन हो गये हैं।

शेष बचे हुए हिन्दू पूजा-पाठ, भक्ति, धर्मशास्त्रों के प्रवचन सुन, धर्मशालाओं और अपने वर्ग के उत्थान को ही अपना कर्त्तव्य मानकर इति समझ लेते हैं, जब कि आज यह स्पष्ट है कि जब तक इस देश में हिन्दू राज्य नहीं होगा तब तक यह न हिन्दू राष्ट्र रहेगा, न ही यहां मन्दिर और धर्मशालायें और शिवलय रहेंगे जैसा हमें पाकिस्तान में देखने को मिलता है। यहाँ के हिन्दू समाज के पास वहाँ क्या नहीं था? सब समाप्त कर दिया गया है। यह हमारे ही देश का एक भाग है। इसी तरह अफगानिस्तान, बर्मा आदि भी बिना अपना राज्य होने से सभ्यता और संस्कृति खो बैठे। पता नहीं यह बात हिन्दू समाज की समझ में क्यों नहीं आती है?

कुछ पुरानी पीढ़ी के वृद्ध लोग हैं, नहीं तो अपने आने वाले एक-दो दशक में ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान तो समाप्त कर ही दिया है अब हिन्दी और हिन्दू को समाप्त करने का षड्यन्त्र किया जा रहा है। क्योंक हिन्दू समाज तो आर्य, हिन्दू और सनातन शब्दों के जाल में फंस गया है किन्तु वह यह नहीं जानता कि पहले अपने लक्ष्य हिन्दू राज्य को जो प्राप्त कर लें बाद में इस शब्द जाल से छुटकारा पाने में कोई कठिनाई नहीं आयेगी।

वह यह नहीं जानता कि लक्ष्यहीन समाज की दशा उस अन्धे की तरह होती है जिसे अपने रास्ते का पता नहीं कि उसे कहाँ जाना है। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयुर्वेद की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक देन

—पं० विश्वनाथ द्विवेदी
—श्री गणनाथ द्विवेदी

आयुर्वेद जीवन का विज्ञान है। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, चाहे वह धार्मिक, सांस्कृतिक या सामाजिक हो, भाग लेता है। यदि यह कहा जाये कि आयुर्वेद की वैज्ञानिक आधार शिला पर ही हिन्दू धर्म और समाज के आधारस्तम्भ की रचना की गई है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिन्दू संस्कृति में दीर्घ जीवन सब को प्राप्त हो यह मुख्य उद्देश्य था। आयुर्वेद मात्र चिकित्सा-विज्ञान या दीर्घ जीवन प्रदाता मात्र विज्ञान नहीं है अपितु मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मुख्य रूप से उत्तरदायी है।

वर्तमान में प्रत्येक क्षेत्र में तबाही है। भारत में विश्व की कितनी जातियां आयीं और समाप्त हो गयीं, कुछ इसी में रम गईं किन्तु हिन्दू संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है। इसके धर्माचार्यों ने इसको इस प्रकार का बनाया है कि कहीं भी संकट उत्पन्न नहीं होता। लेकिन वर्तमान में इसके विनाश का बीजारोपण हो गया है जिसका कारण आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तों की उपेक्षा है। वर्तमान में पश्चिमी सभ्यता की नकल करने की तृष्णा बढ़ी है। हम भारतीय होते हुए भी हृदय से पश्चिमी सभ्यता के उपासक बन गये हैं।

गुरुदेव आचार्य रवीन्द्रनाथ टैगोर इसको अन्धानुकरण दौड़ की संज्ञा देते हुए कहा करते थे कि सौन्दर्य हेतु चीनियों ने पैरों में लोहे के छोटे जूते पहने और पैरों को सुन्दरतम बनाने के प्रयत्न में लंगड़े हो गये। उन्हें सौन्दर्य मिलना तो दूर वे पैरों के सौन्दर्य में अपनी वास्तविक सुन्दरता और शक्ति गंवाकर लंगड़े हो गये। अतः इस आधुनिक चकाचौंध में पड़ कर भारतीय भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitized by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी पूर्व सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक धरोहर को खोकर वैसा ही कर रहे हैं। इस प्रकार भारतीय आधुनिक संस्कृति-सभ्यता को उपजाकर परेशान होंगे। प्राचीन महर्षियों ने युगों तक तपकर जंगलों में बैठकर समाज सुधार कर धर्म का निर्माण करके समाज को एक शृंखला में बांध दिया था, जिससे इस पर किसी की छाया न पड़े।

समाज के धारक धर्म में 16 संस्कार हैं। कर्मानुसार ब्राह्मण आदि चार वर्णों और ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रमों की कल्पना की गई है और धर्म के मुख्य अंग यम और नियम कहे गये हैं।

मैं संक्षेप में कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर यह बताना चाहता हूँ कि मानव जन्म से मृत्यु तक के संस्कार आयुर्वेद की ज्ञान गंगा से सींचे कर ही बने हैं। हमारी माताएं-बहनें बिना पढ़े पूर्व संस्कार के ज्ञान अनुसार बालकों का उपचार करती थीं। भोजन की प्रत्येक वस्तु शीत गुण या उष्ण गुण युक्त है। सुपाच्य है कि अपाच्य है, जानती थीं। भारतीय 16 संस्कार कराते थे। गर्भाधान, जातकर्म, कर्णवेध, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ धर्म, वानप्रस्थ, संन्यास, यज्ञ ये सब आयुर्वेद आधारित थे।

गर्भाधान

हमारे पूर्वज प्राचीन भारतीय आनन्द मात्र हेतु संतान पैदा नहीं करते थे। संयम पूर्वक रह कर पुत्र, पुत्री उत्पन्न करने की विधि भी जानते थे। पुत्र प्राप्ति हेतु संयम-नियम से पति-पत्नी, दोनों योग्य समय तक निश्चित प्रकार के आहार का सेवन करते थे। इस संयम-नियम द्वारा शरीर में गर्भोत्पादक भाव शुक्र और रज का शुद्ध और उचित मात्रा में निर्माण होता था इसके बाद शुभ मुहूर्त में पूज्योंचित कराकर, आशीर्वाद प्राप्त कर पुत्र या पुत्री की इच्छा से संभोग करते थे और इससे गर्भ का स्थापन होता था। उसमें योग्य संतान प्राप्त होती थी। गर्भोत्पादक द्रव्य का सेवन करने और सबसे उत्तम औषधियों का समय पर सेवन करने से गर्भ स्थापित होता था।

गर्भोत्पादक शुद्ध शुक्र व रज की उत्पत्ति हेतु सौम्य, शुभ औषधियों से मेधावी, स्वस्थ, संतान की उत्पत्ति होती थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जातकर्म

बालक के जन्म लेते ही संस्कार होता था। इस कर्म में सद्योजात बालक की जीभ पर मन्त्रों से अभिमंत्रित स्वर्ण भस्म, बच, कस्तूरी और गोरोचन को मधु में चटाया जाता था। जन्मकालीन दौर्बल्य, कर्महानि आदि का निवारण इस कर्म से होता था। बालक स्वस्थ रहता था।

चूड़ाकर्म या मुंडन

यह संस्कार ढाई से पाँच की अवस्था में किया जाता था। बालक की उत्पत्ति के समय तालु के ऊपर की कपालास्थि जुड़ी नहीं होती है। धीरे-धीरे जुड़ती है। दबाने पर इसका आभास किया जा सकता है। ढाई से पाँच वर्ष की अवस्था में ये अस्थियां जुड़ जाती हैं जिससे स्तुलुंग के रक्षण में सहायता मिलती है। बाल गर्मी या विद्युत् के संवाहक नहीं हैं अत: मुंडन करते समय चोटी रखने से ब्रह्मरंध्र को हानि नहीं होती और उसमें विद्युत् प्रवाह का वहन कम होता है। यह स्थान अति संवेदनशील होता है। अत: मुंडन के बाद चोटी रखने का धार्मिक महत्त्व है।

कर्ण वेध

इस प्रकार की विधि धर्म है। कान के नीचे की कर्णपाली (कोमल भाग) में कान का वध विधान है। सुश्रुत में देवकृत छिद्र में वध करने को कहा है। यह वह स्थान है जहाँ मस्ति की असंख्य नाड़ियों के छोर होते हैं। अत: वहाँ छिद्र कर ताम्र रजत व सुपर्ण आदि के कुंडल पहनने का विधान मिलता है। शारीरिक ऊष्मा से धातु से नाड़ियों के छोर में चेतनता होती है और मस्तिष्क सचेष्ट रहता है।

अन्न प्राशन

यह संस्कार 6 माह से डेढ़ वर्ष तक करने का नियम है। आयुर्वेदानुसार अनुपाचक रसों की वृद्धि हेतु बोधक कफ की आधार ग्रथियों का विकास प्रारम्भ होता है। पाचन रस, आमाशय, पाकशय, यकृत् आदि धीरे-धीरे दुग्ध पाचन कार्य के बाद अन्नपाचन हेतु समर्थ होता है। 6 मास से ढाई वर्ष के मध्य में सभी दांत उगते हैं अत: उनसे चबा कर तब पचाया जा सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपनयन संस्कार

अध्ययन हेतु 5 से 25 वर्ष की अवस्था गुरु के पास रहकर विद्यार्जन की व्यवस्था हिन्दू धर्म में थी। इस काल में बालक बड़ा होकर युवा बनता था। अतः प्रारम्भ से ही संयमपूर्वक यज्ञोपवीत पहनाकर गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त होती थी। आयुर्वेदानुसार शुक्र संवर्धन और परिवर्धन का समय 25 वर्ष होने से इस समय में सात्त्विक आहार और मानसिक संतुलन द्वारा बालक के शरीर विकास का अवसर प्राप्त होता था।

उत्तम जीवन हेतु योग्य शिक्षा अनिवार्य है। गुरुकुल में रहकर वहां के वातावरण के अनुरूप शील, संयम, विवेक, ज्ञान की वृद्धि होती थी। ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करने से होता था। अतः उपनयन संस्कार की दीक्षा लेने के बाद 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य आश्रम के नियम से रहना चाहिए।

इसी भांति अन्य संस्कारों का निर्माण भी वैज्ञानिक है। आजकल कोर्ट मैरिज या धर्मगुरु (पादरी) के समक्ष विवाह प्रथा चल पड़ी है, जो ठीक नहीं है। मृत्यु के पश्चात् दाह क्रिया सर्वोत्तम है और धार्मिक भी है। जलाने से पांचभौतिक शरीर का तत्काल नाश हो जाता है और अन्त में भस्म या अस्थियों का पवित्र नदियों में प्रवाह भी वैज्ञानिक है। जल शुद्धिकर और कीटाणुनाशक है। अग्नि से, जल से तथा वायु की शुद्धि होती है।

मुर्दे को कन्धे पर ले जाने से रोगी के शरीर के जीवाणुओं का सम्पर्क होता है और संक्रमण फैलने का भय रहता है इसीलिए पहने हुए वस्त्रों सहित स्नान करने की प्रथा उत्तम है और स्नान कर नीम के पत्ते चबाने का रिवाज भी वैज्ञानिक है। यह जीवाणुओं का नाश करके संक्रमण रोकता है।

संक्षेप में मैंने आपको अपने संस्कारों और रीति-रिवाजों के पीछे वैज्ञानिक रहस्य समझाया है। इस पर और भी विचार कर प्रकाश डाला जा सकता है।

आयुर्वेद का सम्बन्ध मात्र संस्कार और रीति-रिवाजों तक सीमित नहीं है अपितु दैनिक प्रयोगों में आने वाली वस्तुओं के पीछे आयुर्वेद का आरोग्य प्रद रहस्य होता है जो देशकालानुसार भिन्न-भिन्न हो सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में रोटी, चावल के साथ साग, दाल खाने का रिवाज है। दाल, साग में हल्दी मात्र रंग लाने हेतु नहीं डाली जाती, अपितु हल्दी कीट-नाशक, पाचक और आमदोष नाशक है। जीरा, धनिया, हींग से छौंकने का ध्येय मात्र सुगंध ही नहीं है अपितु रुचिकर, दीपन, पाचन, गुणयुक्त भी है। पूजन में चन्दन, धूप, नैवेद्य आदि का होना वहां मानसिक शांति और सौम्य आकर्षक वातारण करने हेतु होता है।

नित्य चंदन का टीका लगाना आयु की मर्यादा और शरीर रक्षा का साधन है। चन्दन एक सुगंधित द्रव्य हैं। इसे कपाल पर लगाने से मस्तक पर नियंत्रण रहता है और शांति मिलती है। कपाल पर भ्रूमध्य में पीयूष-ग्रंथि है। अतः वहाँ पर चन्दन लगाने से मानसिक संतुलन और मस्तिष्क क्रिया को बल प्राप्त होता है। मस्तक पर तिलक लगाने से पीयूष ग्रंथि को भी बल मिलता है। स्वस्थ अवस्था में तिलक जल्दी नहीं सूखता किन्तु रूग्णावस्था में जल्दी सूख जाता है। इस प्रकार चन्दन का तिलक स्वस्थता का द्योतक है।

इस प्रकार उपरोक्त दृष्टान्तों से दैनिक जीवन में आयुर्वेद आरोग्य रक्षा हेतु जो धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान दिया है उसका संक्षेप में वर्णन किया है।

सारांश यह है कि षोडष, संस्कार करना, पूजा-पाठ करना, सामा-रीति रस्म इत्यादि पालन में आयुर्वेद अप्रत्यक्ष रूप से हमें पालन करने की शिक्षा देता है। आजकल जाति-पांति हटाओ, वर्ण व्यवस्था तोड़ो, यह चल रहा है। किंतु नई जाति को स्वयं जन्म दिया जा रहा है और उसकी रक्षा में लाखों रुपये बहाये जा रहे हैं। यह सोच समझकर करना चाहिए।

वर्णाश्रम धर्म कितना अच्छा था। ब्रह्मचर्य धारण कर जब बालक ब्रह्मचर्याश्रम में होता था, पिता तब वानप्रस्थ में रहता था। जब वह गृहस्थाश्रम में होता था, तब पिता संन्यासाश्रम में निवास करता था, जब बालक वानप्रस्थ में आता था तब पिता संसार त्याग करता था। कहीं पिता-पुत्र में झगड़ा नहीं था। अब आश्रम नहीं तो सब कुछ बिगड़ रहा है। ईश्वर सहायक है। आयुर्वेद प्रत्येक क्षेत्र में रक्षक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरु स्तम्भ या कुतुब मीनार ?

—श्री केदारनाथ प्रभाकर

भा रतीय ज्योतिर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान ने दिल्ली की तथाकथित कुतुब मीनार के विषय में यह खोज शुरू की है कि ह गगन चुम्बी स्तम्भ न तो किसी हिन्दू राजा का 'विजय स्तम्भ थवा कीर्ति स्तम्भ है और न ही यह कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद भारत में निर्मित सर्वप्रथम मस्जिद जिसे सूर्य के घेरे में निर्मित त्ताईस नक्षत्र-भवनों को तुड़वाकर कुतुबुद्दीन सेवक नामक गुलाम टेरे ने सन् 1191-92 में बनवाया था) का तथाकथित भोजनखाना ल्ला जिस पर चढ़ कर कर अजान दिया करता है, वरन यह तो श्व का सर्व-प्रथम भारतीय नक्षत्र वेधशाला का मध्यवर्ती त्र स्तम्भ (मेरु स्तम्भ) है, जिसे अरब वालों ने अपनी अरबी षा में कुतुब मीनार के नाम से संबोधित किया था।

मेरु को अरबी में कुतुब कहते हैं और स्तम्भ को मीनार कहा जाता । इस प्रकार जब से अन्धकार का पर्दा धीरे-धीरे अपने प्राचीन भारतीय हास से उठना प्रारम्भ हुआ है, तब से कुछ एक हठधर्मी और विदेशी ता के पुजारियों को छोड़कर सभी भारतीयों की इस विशाल भवन के धारणा और दृष्टिकोण बदलता जा रहा है। अब तथाकथित कुतुब ार को देखने वालों की संख्या इसलिए दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, कि प्राचीन भारतीय ज्योतिर्विज्ञान से सम्बन्धित यह स्तम्भ किस प्रकार वदेशियों और अंग्रेजों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट होने पर आज भी अपनी प्राचीन ता और विशालता की गवाही दे रहा है, यह जानने की तीव्र इच्छा ां के हृदय में जागृत होती जा रही है।

ब मीनार की खोज

22 जनवरी सन् 1986 ई. को जब भारत में प्रथम बार विश्व के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महान खगोलवेत्ता आचार्य वराह मिहिर का स्मृति उत्सव सहारनपुर में संस्थान द्वारा मनाया गया था, तब से ही निरन्तर इस गगनचुम्बी भवन के आदि नर्माता और इसके निर्माण के उद्देश्य के लिए खोज करने का मैंने संकल्प किया था। तब से लेकर अब तक अनेक बार इस स्तम्भ का परीक्षण-निरीक्षण करने में पुरातत्त्व विभाग, भारत सरकार, द्वारा अनुमति लेकर दिल्ली गया हूँ। मेरे द्वारा किए गए इस दिशा में अनुसंधान समय-समय पर भारत के प्रमुख दैनिक पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं, जिनमें से कुछ एक का विवरण नीचे दिया जा रहा है :—

सबसे पहले मैंने 15 जून एवं 18 जून 1970 के दैनिक 'हिन्दुस्तान' एवं 'नवभारत टाइम्स' में तथा कुछ एक उर्दू दैनिक पत्रों में यह घोषणा की थी कि 22 जून को (जब उत्तरी गोलार्द्ध में सबसे वड़ा दिन होता है) इस मीनार की छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ेगी, मैं अपनी पार्टी के साथ सहारनपुर से जीप द्वारा उस दिन तथाकथित कुतुब मीनार पहुंचा और लगभग 12-12 बजे (मध्याह्न) वहाँ पर इस स्तम्भ की छाया को गायब पाया। इस अवसर पर जहाँ अनेक जिज्ञासु हजारों की संख्या में उपस्थित थे, वहां पर देश-प्रसिद्ध पत्रकार एवं लेखक भी थे।

मेरे इस परीक्षण का समाचार विस्तृत रूप से दैनिक 'नवभारत टाइम्स' (2 जुलाई, सन् 1970) में 'मेरु स्तम्भ' (कुतुब मीनार) की छाया पर अनुसंधान, 1 जुलाई सन् 1970 के दैनिक 'नवजीवन' में 'कुतुब मीनार की छाया का परीक्षण' शीर्षकों से प्रकाशित हुए थे, जिन्हें पढ़ने के बाद प्रथम बार जनसाधारण एवं पठित वर्ग का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। इस समाचार में यह भी बताया गया था कि 21 जून को इस मीनार की छाया भूमि पर न पड़ने का कारण यह है कि यह मीनार 5° 1'-28" दक्षिण की ओर झुकाव देकर बनवाई गई है। महरौली (दिल्ली) का अक्षांश 28°-31'-28" और 23-30 का अन्तर 5°-1' 28" आता है और इसी कारण यह स्तम्भ दक्षिण की ओर इतना झुकाव देकर बनवाया गया था ताकि ज्योतिष की गणना व छाया द्वारा परीक्षण करने पर आज के इस प्रयोग से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाभ उठाया जा सके। ध्यान रहे दिल्ली स्थित जन्तर-मन्तर में भी एक इसी प्रकार की ध्रुव देखने वाली दीवार है जिसकी छाया भी 21 जून को दोपहर के समय पृथ्वी पर नहीं पड़ती और यह दीवार भी 5° के लगभग दक्षिण को झुकाव देकर खड़ी की गई है।

इसके बाद 17 दिसम्बर, 19 दिसम्बर एवं 17 दिसम्बर के दैनिक 'नवभारत टाइमस' दैनिक 'हिन्दुस्तान' और दैनिक 'नवजीवन' में मैंने यह घोषणा की थी कि 23 दिसम्बर को (जब उत्तरी गोलार्द्ध में सबसे छोटा दिन होगा) इस कथाकथित कुतुब मीनार की छाया पृथ्वी पर इसकी वर्ष भर की समस्त छायाओं में सबसे लम्बी होगी और जो लगभग 280 फीट लम्बी जायेगी। ध्यान रहे जब यह छाया मीनार की वर्तमान लम्बाई से लगभग 45 फीट ज्यादा होगी।

इस कार्य के लिए मैं 22 दिसम्बर सांयकाल को ही अपने साथियों के साथ ट्रेन द्वारा दिल्ली चला गया था। अगले दिन हम लोग लगभग 11 बजे कुतुब क्षेत्र में पहुंच गये थे और उस दिन आकाश निर्मल होने के कारण छाया का परीक्षण बहुत ही सफल रहा। इस परीक्षण का सचित्र विस्तृत समाचार 31 दिसम्बर, सन् 1970 के दैनिक 'हिन्दुस्तान', 1 जनवरी, सन् 1971 के दैनिक 'नवभारत टाइम्स' एवं 2 जनवरी, सन् 1971 के दैनिक 'नवजीवन' में भिन्न-भिन्न शीर्षकों से बहुत बड़े-बड़े अक्षरों में प्रकाशित हुए थे। इन समाचारों ने समस्त देश में इस तथाकथित कुतुब मीनार के विषय में एक नवीन क्रान्ति उत्पन्न कर दी और अनेक हठधर्मी एवं कट्टरपंथी भी मेरी इस खोज से प्रभावित हुए विना न रह सके।

इसकी लम्बाई 100 गज थी

इस बार समाचारों ने इस बात पर धूम मचा दी कि यह कुतुब मीनार वास्तव में 84 गज (252 फीट) ऊँची थी और 16 गज (45 मीटर) पृथ्वी के अन्दर है। इस प्रकार इसकी नीचे से लेकर ऊपर तक की कुल लम्बाई 100 गज (300 फीट) थी, जो अब पृथ्वी से बाहर केवल 234'-18" के लगभग हैं। 23 दिसम्बर को इसकी छाया (जब यह अपने प्राचीन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वास्तविक रूप में थी) पृथ्वी पर 300 फीट लम्बी ही पड़ा करती थी जो मीनार की उत्तर की ओर बने हुए टूटे-फूटे चबूतरे तक पहुंचती थी। चबूतरे पर हर सूर्य की क्रान्ति एवं तिथि तथा लग्न आदि के देखने के निशान अंकित थे। चबूतरा तो अब भी टूटी-फूटी अवस्था में मौजूद है और छाया भी उस दिन इससे लगभग 20 फीट दूर नजर आ रही थी। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि यह चबूतरा मीनार के प्रवेश द्वारा (जो 90 डिग्री उत्तर को है और रात्रि को इस दीवार पर खड़े होने से ध्रुवतारा बिलकुल सामने नजर आता है) से लगभग 300 फीट (जितनी मीनार की नीचे से ऊपर तक ऊंचाई थी) की दूरी पर बना हुआ था और आज के दिन मीनार की छाया इस चबूतरे तक पहुंचती थी।

इसके अतिरिक्त इन्हीं समाचारों में यह भी बताया गया कि तथाकथित कुतुब मीनार वास्तव में श्रीमद् भागवत पुराण के सूमेरु पर्वत का ही एक माडल है, जिसे आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व चक्रवर्ती हिन्दू सम्राट् संवत् प्रवर्तक महाराजा विक्रमादित्य के राज्य में विश्ववन्दनीय ज्योतिर्विज्ञानाचार्य भारत विभूति आचार्य वराह मिहिर ने सूर्य आदि ग्रहो के वेध एवं उनकी गति के निरीक्षण हेतु एक गहरे तालाब में बनवाया था। श्री भागवत पुरान के अनुसार सुमेरु पर्वत जम्मू द्वीप के मध्य इलावर्त वष में स्थित है। इसकी पृथ्वी के भीतर से शिखर तक की ऊँचाई एक लाख योजन है, जिसमें 84 हजार योजन यह पर्वत पृथ्वी से बाहर है और सोलह हजार योजन पृथ्वी के भीतर हैं। यह पर्वत नीचे से ऊपर पतला होता गया। है और शिखर पर एक बिन्दु पर जाकर समाप्त हो जाता है सूर्य आदि ग्रह इस पर्वत की परिक्रमा करते हैं।

सुमेरु पर्वत का माडल

आज के युग में यह बात मानने एवं कल्पना से भी बाहर है कि इतनी ऊँचाई का कोई पर्वत भारत में था या है। वास्तव में श्रीमद् भागवत पुराण में सुमेरु का यह वर्णन इस तथाकथित कुतुब मीनार के विषय में ही है, क्योंकि सम्राट् विक्रमादित्य के राज्य में ही उसी की सहायता से पुराण आदि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समस्त साहित्य देवनागरी लिपि में फिर से लिखा गया था। अतः उस समय उन्होंने इस स्तम्भ के विषय में आलंकारिक रूप से इस पुराण में वर्णन कर दिया होगा या पहले से ही वर्णन रह होगा और आचार्य वराह मिहिर ने उसकी वास्तविकता को प्रदर्शित करने हेतु इसका माडल रूप में निर्माण करवाया होगा। कुछ भी हो, यह प्रत्येक दिशा में सुमेरू का ही माडल है।

मेरु स्तम्भ (कुतुब मीनार) की ऊँचाई नीचे से शिखर तक पुराणोक्त मेरु के अनुसार 100 गज थी। ध्यान रहे मेरु की नीचे से शिखर तक की ऊँचाई एक लाख योजन बताई गई है। मेरु की तरह नीचे से ऊपर तक यह कमल की कर्णी (गोदुम) आकार का ही बनाया गया है। सूर्य आदि ग्रहों की छाया इस स्तम्भ के चारों ओर घूमती थी, जिसके निरीक्षण हेतु इसके चारों ओर 27 नक्षत्र भवन बनाये गये थे, जिन्हें बाद में अज्ञानतावश विदेशी लुटेरों ने तोड़ कर मस्जिद खड़ी कर ली। पुराणोक्त मेरु के शिखर पर भी आठ दिक्पालों की पुरियों का वर्णन है और मेरुस्तम्भ के शिखर पर भी आठ स्तम्भों पर आधारित एक कक्ष था जिसके प्रत्येक स्तम्भ के ऊपर दिक्पालों की मूर्तियाँ थीं। आज भी वह कक्ष (छत्री) मेरु स्तम्भ के नीचे माडल के रूप में रखी हुई है जिसे यह कहते हैं कि बिजली पड़ने से टूट गई थी। यह कथा मनगढ़न्त है। वास्तव में इस पर हिन्दू शिल्प कला इस प्रकार की थी कि उसे गिराये बिना काम नहीं चल सकता था। अतः उसे तुड़वाकर नीचे रख दिया गया। स्तम्भ के ऊपर एक बहुत बड़ा ध्वज लहराता था, जिसका अन्तिम बिंदु आकाश में नीचे से 84 गज ऊंचा था। इसी कारण इस स्तम्भ को इसके निकटवर्ती लौह स्तम्भ पर अंकित ब्राह्मी लिपि वाले अभिलेख में 'विष्णु ध्वज' सम्बोधित किया गया है। ध्यान रहे सूर्यदेव का एक नाम विष्णु भी है।

मेरु स्तम्भ के निकट ही आचार्य वराह मिहिर उन दिनों अपने सहयोगियों के साथ रहा करते थे। उस स्थान का नाम मिहिरावलि था जो बाद में बिगड़कर महरौली हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वराह मिहिर की वेधशाला

आचार्य वराह मिहिर ने वर्त्तमान कुतुबमीनार को केन्द्र मान कर उस समय जो वेधशाला बनवाई थी उसका विस्तार पूर्व में कालका जी के प्रसिद्ध मंदिर से लेकर पश्चिम में घोरनी आया नगर तक था अर्थात् कुतुब मीनार से अलग छह मील तक दोनों ओर वह वेधशाला निर्मित थी।

मेरा मत है कि दिल्ली का प्रसिद्ध कालका जी का देवी मंदिर उक्त वेधशाला का अंग है और इसकी प्रेरणा मुझे उज्जैन के महाकाल मंदिर से प्राप्त हुई है। संवत् प्रवर्तक सम्राट् विक्रमादित्य के राज्यकाल में उज्जैन को विश्व में वही स्थान प्राप्त था जो आज ग्रीनविच को मिला हुआ है। दूसरे शब्दों में उज्जैन उन दिनों समस्त संसार की काल गणना अर्थात् समय निर्धारित करने का केन्द्र था और इसी कारण वहाँ भगवान् महाकाल का विख्यात मन्दिर आज भी मौजूद है। महाकाल का अर्थ है जहां से काल (समय) की गणना की जाय। ठीक इसी तरह दिल्ली में स्थित कालका जी का मन्दिर भी काल गणना का स्थल था जिसका सम्बन्ध आचार्य वराह मिहिर की विशाल वेधशाला (कुतुबमीनार जिसका मध्यवर्ती स्तम्भ था) से था। ध्यान रहे शब्दकोष एवं ज्योतिष शास्त्र में तैंतीस प्रकार के केतुओं को कालक कहा सम्बन्धी गणना को कालिक कहकर पुकारा जाता है। यही नहीं वेदों में तो ज्योतिष शास्त्र तक को "काल विधान शास्त्र" एवं सूर्य देव को "कालात्मा" कहा जाता है। अतः कालका, कालिका एवं कालका जी सभी नाम काल गणना से सम्बन्ध रखने वाले स्थान ही हो सकते हैं और आज भी स्थानीय लोग कालका जी की पहाड़ी को "सूरज की ठोकरी" कहकर ही पुकारते हैं।

छाया की आकृति में

1970 में वर्ष के चार विशेष दिनों में (सबसे बड़ा, सबसे छोटा एवं जब दिन और रात बराबर होते हैं) को मध्याह्न के एक विशेष समय पर कुतुब मीनार की पृथ्वी पर पड़ने वाली छायाओं की दिशा, लम्बाई एवं आकृति की पूर्व घोषणा करके यह सिद्ध कर दिया गया था कि इस गगन-चुम्बी भवन का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्बन्ध केवल ज्योयिर्विज्ञान से ही है न कि किसी अन्य बात से। उन्हीं दिनों मैंने कुतुब मीनार की वर्तमान अन्तिम मंजिल (कुतुब मीनार की सात मंजिलें थीं और इसकी कुल ऊंचाई 84 गज 252 फीट थी) पर बैठ कर यह अनुभव किया था कि कुतुब मीनार के दोनों ओर (पूर्व एवं पश्चिम) आकाश का टिकाव समतल पहाड़ियों पर है और वर्ष भर में सदैव (इस स्थान पर बैठ कर देखने से) सूर्योदय एवं सूर्यास्त इन्हीं पहाड़ियों के मध्य ही होता है। बहुत सम्भव है कि जिस प्रकार से कुतुव मीनार से लगभग आधा-मील पूर्व एवं पश्चिम में सत्ताईस नक्षत्रों का वेध लेने के लिए लगभग पांच करोड़ रुपये की लागत से सत्ताईस भवन बने हुए थे ठीक उसी प्रकार से कुतुव मीनार से लगभग छह-छह मील दूर दोनों दिशाओं में बारह राशियों का वेध लेने के लिए बारह-बारह 'काल भवन' बने हुए होंगे, जिन्हें बाद में सत्ताईस भवनों की तरह कुतुबुद्दीन आदि ने तुड़वा दिया है और उनमें से एक भवन कालका जी शेष रह गया हो।

कालका जी का मन्दिर

मैंने खोज की है कि आज भी कुतुबमीनार की चोटी पर बैठने से सबसे बड़े दिन (21 जून) को सूर्योदय ठीक कालका जी के मन्दिर से होता देखा जा सकता है जबकि इसी दिन सूर्यास्त घोरनी के स्थान पर होता नजर आएगा। 23 दिसम्बर (सबसे छोटा दिन) इसी स्थान से सूर्योदय ठीक अनंगपुर में होता दिखाई देगा एवं सूर्यास्त कुसुमपुर में होता देखा जा सकता है। 21 मार्च एवं 21 सितम्बर को जब दिन एवं रात बराबर होते हैं तब सूर्योदय तुगलकाबाद के स्थान पर एवं सूर्यास्त मलकपुर के स्थान पर होता देखा जा सकता है।

जन ज्ञान में विज्ञापन देकर
लाभ उठाइए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नई शिक्षा बनाम तुष्टीकरण नीति—देश के ग्यारह राज्यों की पीठ में छुरा—चालीस जिलों को मुस्लिमबहुल क्षेत्र घोषित कर उर्दू में शिक्षा देने का राष्ट्रघाती षड्यन्त्र—हरियाणा के राज्यपाल की साजिश—ग्यारह राज्यों की राजभाषा खतरे में—देश के पुनः विभाजन का मार्ग प्रशस्त। —सम्पादक

नई शिक्षा ले डूबेगी इस देश को

—डॉ० गौरीनाथ रस्तोगी

आज चारों ओर राष्ट्रीय एकता और अखंडता पर छाये हुए संकटों से भारतीय राष्ट्र की अस्मिता को बचाकर उसे प्रगति पथ पर ले जाने की चर्चा और संकल्पों की धूम मची हुई है। नवम्बर '86 में स्व० प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी के जन्मदिवस 19 नवम्बर से सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता सप्ताह मनाकर उस संकल्प को एक बार पुनः दुहराया गया है। इसी प्रकार मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा नई शिक्षा नीति के माध्यम से सम्पूर्ण देश में एक समान पाठ्यक्रम लागू करने की योजना प्रस्तुत कर यह विश्वास प्रकट किया जा रहा है कि इस नवीन शिक्षा के अन्दर समन्वयवादी दृष्टिकोण को जिस तरह अपनाने का आग्रह किया गया है उससे भारतीय राष्ट्र के जन-जन को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरो देना निश्चित रूप से सफल होगा। इस समन्वयवादी दृष्टिकोण के अन्तर्गत अब देश की भावी पीढ़ी को इतिहास की पुस्तकों में यह पढ़ाया जायेगा कि मुगल सम्राट् औरंगजेब एक नितान्त असाम्प्रदायिक और उदारचेता शासक था और उसने अपने शासनकाल में इस देश के बहुसंख्यक हिन्दू समाज को किसी भी तरह न तो अत्याचार का निशाना बनाया और न ही उनके मन्दिरों का विध्वंस किया। उसके शासनकाल में हिन्दू बहू-बेटियों के नष्ट होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐतिहासिक तथ्यों से खिलवाड़

इतिहास का पाठ विद्यार्थियों को इस तरह पढ़ाते समय कौन-से नवीन ऐतिहासिक तथ्य अब सामने खोज निकाले गये हैं उनका उल्लेख न करते हुए इतिहास को इस रीति से पढ़ाकर नवीन शिक्षा नीति क्या प्राप्त करना चाहती है ? इसका स्पष्टीकरण तो मानव संसाधन मन्त्रालय ही दे सकेगा। लेकिन सुप्रसिद्ध इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार ने 'औरंगजेब का इतिहास' के खंड पांच के पृष्ठ 433 पर उसके पिता शाहजहां के शासनकाल में औरंगजेब द्वारा गुजरात के सूबेदार के रूप में अकेले गुजरात में ही उस क्षेत्र के प्रसिद्ध मन्दिरों के विध्वंस का पूरा विवरण दिया है जिसमें सोमनाथ बाउनगर का हतेश्वर महादेव और कर्णावती अहमदाबाद का चिन्तामणि आदि मन्दिर सम्मिलित थे। उसके सम्राट् बनने के बाद मथुरा के कृष्ण जन्मस्थान और वाराणसी में काशी विश्वनाथ के प्रसिद्ध मूल मन्दिरों के विनाश की कहानी सर्वविदित है। इसी प्रकार हिन्दू व्यापारियों पर दुगुना कर लगाने, होली और दीवाली के पर्वों को सार्वजनिक रूप से सोत्साह मनाने पर रोक लगाने का असफल प्रयास उसने किया था। हिन्दुओं पर जजिया कर लगाने की बात तो सर्वविदित है और जब उसके विरुद्ध फरियाद लेकर सामान्य हिन्दू नागरिक एक समूह के रूप में बादशाह के महल पर पहुंचे तो उन पर उन्मत्त हाथी दौड़ाने के ऐतिहासिक तथ्य को कौन भुला सकता है ? इसी तरह नारी जाति के शील का सम्मान वह कितना करता था इस विषय में प्रसिद्ध यूरोपीय इतिहासकार डेनिस किनक्टॉड ने अपनी पुस्तक ग्रेड रिवैल मे लिखा है कि औरंगजेब की कुदृष्टि बराबर अपनी भाभी और दाराशिकोह की पत्नी राना-दिल पर थी। दारा की क्रूर हत्या करने के बाद उस मुगल सम्राट् ने राना-दिल को अपने हरम में तलब करने का हुकम जारी किया था जिसका समाचार पाकर उस नारी ने चाकू की सहायता से अपना पूरा चेहरा गोद डाला था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि शेष समाज के प्रति उसका व्यवहार कैसा रहा होगा ?

चालीस मुस्लिम प्रभुत्व वाले जिले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर अपनी नवीन शिक्षा नीति में मानव संसाधन मन्त्रालय इससे भी आगे जाकर पूरे देश में चालीस मुस्लिम प्रभुत्व वाले जिलों की एक सूची लेकर सामने आया है और उसका उल्लेख नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत अल्पसंख्यकों की शिक्षा के लिए शामिल किये गये एक अलग अध्याय में किया गया है। पिछले दिनों 17 नवम्बर को यह मामला राज्य सभा में भाजपा के एक सदस्य प्रमोद महाजन ने उठाते हुए यह मांग की थी कि इस सूची को तुरन्त वापस लिया जाये और उनकी इस मांग का समर्थन राज्यसभा में इन्दिरा कांग्रेस को छोड़कर सभी विपक्षी दलों के सदस्यों द्वारा किया गया था। सूची में शामिल ये जिले देश के 11 राज्यों से सम्बन्धित हैं और इनमें आंध्र के हैदराबाद और कुरनूल; उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद, गोंडा, देवरिया, पीलीभीत, बस्ती, बहराइच, बाराबंकी, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, मुरादाबाद, मेरठ, रामपुर और सहारनपुर, कर्नाटक के गुलबर्गा, बीजापुर और बीदर, केरल के कनानोर, कोजीकोड़े, पालघाट, मल्लापुरम् और वायनाड, गुजरात का कच्छ, प० बंगाल के कूचबिहार, चौबीस परगना, नदिया, पश्चिम दीनाजपुर, बीरभूम, माल्दा, मुर्शिदाबाद और हावड़ा, बिहार के कटिहार, दरभंगा और पूर्णिया, मध्यप्रदेश का भोपाल, महाराष्ट्र के औरंगाबाद और बम्बई, राजस्थान का जैसलमेर और हरयाणा का गुड़गांव जिला शामिल हैं। इनमें से अनेक जिले ऐसे हैं जिनकी सीमा पाकिस्तान या बंगलादेश से लगती है और साथ-साथ ये सभी चालीस जिले मुस्लिम बहुल भी नहीं हैं। ऐसी स्थिति में अल्पसंख्यकों की शिक्षा के नाम पर इन चालीस मुस्लिम प्रभुत्व वाले जिलों की सूची क्या हरियाणा के राज्यपाल की प्रेरणा पर पूरे प्रदेश को चार क्षेत्रों में बांटकर उर्दू भाषा में शिक्षा देने की मान्यता देने का षड्यन्त्र तो नहीं है ? और यदि ऐसा है तो स्वाभाविक रूप से ये प्रश्न खड़े होते हैं कि उर्दू को अकेले मुस्लिम समुदाय की भाषा घोषित करने की क्या यह स्वीकारोक्ति नहीं है ? और दूसरे संविधान की व्यवस्थाओं के आधार पर इन ग्यारह राज्यों में से कहीं भी उर्दू के दूसरी क्षेत्रीय भाषा न बनने की स्थिति को ध्यान में रखकर क्या चोर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दरवाजे से उसे मान्यता देने की यह कोशिश है ?

गलत नीतियों के परिणाम

इसमें सन्देह नहीं कि यदि नई शिक्षा नीति को लागू करने के साथ इन आपत्तिजनक व्यवस्थाओं को समाप्त न किया गया तो उसके बड़े गम्भीर और दूरगामी नतीजे निकलेंगे जिससे राष्ट्रीय एकता और अखंडता को और अधिक खतरा उत्पन्न होगा। आजादी की लड़ाई के दौरान खिलाफत आन्दोलन से 1947 तक का इतिहास इस बात का साक्षी है कि तुष्टीकरण की नीति द्वारा देश के अल्पसंख्यक समुदाय को सन्तुष्ट करने के लिए राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और गुरु गोविन्दसिंह सरीखे राष्ट्र नेताओं को 'पथ-भ्रष्ट देशभक्त' कहकर पुकारा गया था। लेकिन उससे एकता कायम न रह सकी और देश का दु:खद विभाजन हो गया। अत: औरंगजेब के सम्बन्ध में इतिहास को विकृत ढंग से पेश करने से राष्ट्रीय एकता कायम न होकर अल्पसंख्यक समाज में अलगाववादी भावना को प्रोत्साहन ही मिलेगा। शाहबान के मामले में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को निरस्त करने के लिए मुस्लिम महिला संरक्षण कानून बनाने का परिणाम यह हुआ है कि अब ऐच्छिक सामान्य नागरिक संहिता बनाने का विरोध मुस्लिम संस्थाओं द्वारा किये जाने के साथ-साथ केन्द्रीय राज्यमन्त्री जेड. ए. असारी द्वारा यह भी कहा जा रहा है कि यदि ऐसा कानून बनाया गया तो देश का मुस्लिम समाज इसके विरुद्ध कड़ा संघर्ष करेगा। फलस्वरूप स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए भारतीय बार कौंसिल के समापति वी. सी. मिश्र ने 3 नवम्बर को प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की उपस्थिति में कौंसिल के रजत जयन्ती समारोह में सार्वजनिक रूप से श्री अंसारी को मन्त्रिपद से हटाने की मांग तक की है।

अत: अंत में यह कहना तर्कसंगत और बुद्धिमत्तापूर्ण होगा कि इस प्रकार चालीस जिलों को मुस्लिम प्रभुत्व वाले घोषित करके राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुरक्षित तथा अक्षुण्ण बनाये रखने के पवित्र संकल्प की पूर्ति नहीं की जा सकेगी। अत: उसे प्राप्त करने के लिए एक राष्ट्रीय गौरवपूर्ण सस्कृति को आधार बनाकर ही हमें अग्रसर होना पड़ेगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिख कोई अलग धर्म नहीं

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

ज्योतिष्पीठ (बद्रिकाश्रम) और द्वारिका पीठ के जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती की दृष्टि में सिख कोई अलग धर्म नहीं अपितु हिन्दू धर्म का ही एक पन्थ है। सभी सिख गुरु कट्टर हिन्दू थे और उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र उठाये। पंजाब के आतंकवादी सिख नहीं, उनका केवल वेश सिख का है।

पिछले दिनों स्वामी जी मोदीपुरम् पधारे, जहाँ प्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल ने उनसे भेंट-वार्त्ता की। उसी के कुछ अंश यहाँ दिये जा रहे हैं।

प्रश्न—महाराजश्री, पंजाब में प्रतिदिन हत्याओं व लूटपाट का बाजार गर्म है। गत जुलाई में इसके विरुद्ध दिल्ली में हिन्दू संस्थाओं की ओर से विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया जाने वाला था, जिसका नेतृत्व आपको करना था। किन्तु ऐन मौके पर आपके नेतृत्व में हिन्दू संस्थाओं का प्रतिनिधि मंडल प्रधान मंत्री राजीव गांधी से मिला और रात को ही टेलीविजन पर घोषणा कर दी गई कि प्रधान मंत्री के आश्वासन से संतुष्ट होकर प्रदर्शन स्थगित कर दिया गया है। क्या वे आश्वासन पूरे हुए हैं ?

स्वामीजी—जुलाई में प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने हमें आश्वासन दिया था कि पूरे पंजाब क्षेत्र में सुरक्षा पट्टी बना कर पाकिस्तान से प्रशिक्षित होकर यहां आने वाले आतंकवादियों का रास्ता बंद कर दिया जायेगा। उन्होंने विश्व हिन्दू परिषद् के नेता श्री विष्णुहरि डालमिया आदि के समक्ष आश्वासन दिया था कि पंजाब में हिन्दुओं की नृशंस हत्याएं तथा उनका पलायन रोकेने के लिए ठोस पग शीघ्र उठाये जायेंगे। किन्तु अब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे सामने यह स्पष्ट है कि न सरकार सुरक्षा पट्टी बनाने का साहस दिखा सकेगी और न हिन्दुओं की हत्याएं तथा उनका पलायन ही रुक पाया है। अब तो हत्याएं और तेज हो गई हैं।

हम समझते हैं कि बरनाला सरकार आतंकवादियों से आतंकित है तथा केन्द्रीय सरकार भी निस्सहाय व अक्षम साबित हुई है। ऐसी स्थिति में पूरा पंजाब क्षेत्र सेना के हवाले करके तथा दृढ़तापूर्वक सुरक्षा पट्टी बनाकर ही आतंकवादियों व पाकिस्तानी जासूसों व तस्करों का सफाया संभव है। आतंकवाद के उन्मूलन से ही हत्याएं रुक सकती हैं।

प्रश्न—आपने एक बार कहा था कि सिख हिन्दू समाज का अटूट अंग हैं। फिर वे आज हिन्दुओं की हत्याओं पर तुल क्यों गये हैं ?

स्वामीजी—सिख धर्म नहीं, पंथ है। सिख पंथ की स्थापना गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने मुगल अत्याचारियों से हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए सैनिक दस्ता बनाने के उद्देश्य से की थी। अपने शिष्यों के हाथ में उन्होंने कृपाण इसलिए थमाई थी कि किसी भी अत्याचारी के उत्पीड़न का आर्तनाद सुनाई न दे।

गुरु तेगबहादुर ने कश्मीरी पंडितों के धर्म परिवर्तन के षड्यंत्र को असफल करने के लिए मुगल बादशाह की चुनौती स्वीकार कर स्वयं दिल्ली पहुंच कर अपना शीश हिन्दू धर्म पर न्योछावर कर डाला था। गुरु अर्जुनदेव ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही अपने शरीर को गर्म तेल के कड़ाहे में तलवा डाला था। वीर बन्दा वैरागी ने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए ही बलिदान दिया था। इतिहास साक्षी है कि सिख गुरुओं ने धर्मस्वातन्त्र्य की रक्षा के लिए बलिदान दिये।

गुरु ग्रन्थ साहब में 2,200 बार राम नाम आया है। भगवान् श्री कृष्ण, राम, शिव, दुर्गा, भगवती, नैना देवी को श्रद्धा के साथ स्मरण किया गया है। गोमाता के महत्त्व में सन्तों के वाक्य दिये गये हैं।

दरअसल पंजाब के कुछ सिख दिग्भ्रमित हो गये हैं और कुछ पाकिस्तान के साथ सांठगांठ किये हुए हैं। पाकिस्तान ने 20 वर्ष पूर्व ही लावारिस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमान बच्चों को शुरू से ही सिख वेश धराकर उन्हें हत्याओं व तोड़फोड़ का प्रशिक्षण देकर पंजाब में भेजने की योजना बना ली थी। 1972 के बंगला-देश युद्ध के समय ही उसने उनका उपयोग भारत से बदला लेने के लिए शुरू कर दिया था।

पंजाब में नृशंस हत्याओं के पीछे जहां उग्रवादी व भ्रमित सिख युवक हैं, वहां पाकिस्तान से आये सिख वेशधारी मुसलमान इस घृणित अभियान का संचालन कर रहे हैं। कोई भी सच्चा सिख न मन्दिर तोड़ सकता है, न गोमाता की हत्या कर सकता है। सच्चा सिख निरपराध की हत्या की कल्पना भी नहीं कर सकता। इन सब घटनाओं के पीछे पाकिस्तान व अमरीका आदि देशों का हाथ है।

प्रश्न—महाराजश्री इन, दिनों श्री राम जन्मभूमि व बाबरी मस्जिद विवाद कट्टरपंथी संगठनों द्वारा उठाया जा रहा है। इस सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?

स्वामीजी—सारा संसार जानता है कि श्री अयोध्या भगवान् श्री राम की जन्मभूमि है। यह ऐतिहासिक तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि विदेशी हमलावर बाबर की सेना ने हिन्दू तीर्थ स्थलों पर हमले कर मन्दिरों में तोड़फोड़ की थी। मेरठ के मैंसाली मैदान में बाबर ने भीषण नरसंहार कराया था।

काशी का विश्वनाथ मंदिर तोड़ कर मस्जिद बनाई गई, भगवान् श्री कृष्ण की जन्मभूमि (मथुरा) तोड़ कर मस्जिद बनाई गई। सिद्धपुर के मंदिरों को तोड़ कर मस्जिदें बनाई गईं। विदिशा (म. प्र.) के विजय मंदिर को तोड़ गया। कहाँ-कहाँ तक गिनाये जायें नाम।

हमारा स्पष्ट मत है कि यदि हम विदेशी अंग्रेजों द्वारा स्थापित राज्य को हटा कर अपना राज्य स्थापित कर सकते हैं, उनकी मूर्तियों को विदेशी दासता का प्रतीक मानकर हटा सकते हैं तो फिर विदेशी मुगल हमलावरों द्वारा तोड़े गये ऐतिहासिक धर्मस्थलों को वापस क्यों नहीं करा सकते ?

हमरा सुझाव है कि एक न्यायाधिकरण का गठन किया जाये जो ऐति-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हासिक साक्ष्य इकट्ठे कर तोड़े या बदले गये धर्म स्थलों को वापस कराने के बारे में निर्णय दे। यदि किसी मस्जिद को तोड़ कर मंदिर बनाने का प्रमाण सामने आये तो हम धर्माचार्य उसे मुसमानों को तुरन्त वापस करा देंगे।

आप यह भी समझ लें कि यदि सरकार ने राम जन्मस्थली पर पुनः ताला लगाने की भूल की तो इसका परिणाम अच्छा नहीं निकलेगा। उसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित करना भी अदूरदर्शितापूर्ण कदम होगा।

यह दुर्भाग्य की बात है कि सत्तारूढ़ इन्दिरा गांधी कांग्रेस (इ) सहित सारे राजनैतिक दल वोटों के लिए तुष्टीकरण की नीति पर चल रहे हैं। श्री राम जन्मभूमि जैसे प्रश्न पर भी वे सोचते हैं कि कहीं सही बात कह देने से मुस्लिम मतदाता नाराज न हो जाएं। जब कि सभी दलों के मुसलमान इस प्रश्न पर एकजुट हैं। ऐसी स्थिति में सभी दलों के हिन्दू सांसदों व विधायकों को भी यह सोचना होगा कि वे राम जन्मभूमि आन्दोलन का समर्थन करें। हिन्दू संगठन ही तुष्टीकरण की घातक नीति को असफल कर राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। ये राजनैतिक दल ही हिन्दुओं को संगठित नहीं होने दे रहे। ★

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥

पदार्थ—हे जीवो ! जिस जगदीश्वर ने (अश्वत्थे) कल ठहरेगा वा नहीं ऐसे अनित्य संसार में (वः) तुम लोगों की (निषदनम्) स्थिर की (पर्णे) पत्ते के तुल्य संचल जीवन में (वः) तुम्हारा (वसतिः) निवास (कृता) किया (यत्) जिस (पूरुषम्) सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मा को (किल) ही (सनवथ) सेवन करो उसके साथ (गोभाजः) पृथिवी वाणी इन्द्रिय वा किरणों का सेवन करने वाले (इत्) ही तुम लोग प्रयत्न के साथ धर्म में स्थिर (असथ) होवे।

भावार्थ मनुष्यों को चाहिए कि अनित्य शरीरों और पदार्थों को प्राप्त होके क्षणभंगुर जीवन में धर्माचरण के साथ नित्य परमात्मा को उपासना कर आत्मा और परमात्मा के संयोग से उत्पन्न हुए नित्य सुख को प्राप्त हों।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों से एक मार्मिक अपील

आज देश में आर्यसमाज एक साधन सम्पन्न तथा कार्यकर्त्ता 'सम्पन्न संस्था के रूप में विद्यमान है। आर्यसमाज ही देश के हिन्दू समाज के हितों की रक्षा करने में सक्षम है और उसने इसके लिए सराहनीय कार्य भी किया है, जिन्हें कोई भी नहीं नकार सकता। आज आर्यसमाज की स्थापना को 100 साल से भी अधिक समय बीत चुका है। आज हिन्दू अपने ही देश में अनाथ हो गया है। उनकी काई भी बात नहीं मानी जाती—चाहे वह गोरक्षा की हो या हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने की। इसका कारण हिन्दू की काई राजनैतिक पहचान न होना है। यदि हिन्दुत्ववादी कोई राजनैतिक दल होता तो आज हिन्दू की यह दशा न होती। या फिर स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद जब पाकिस्तान एक मुस्लिम राज्य बना था उसी समय यह "आर्य राज्य" या "हिन्दू राज्य" बना बना दिया गया होता तो भी आज देश में ये समस्यायें पैदा न होतीं।

अब समय आ गया है जब आर्यसमाज महर्षि के उस आदेश का पालन करे जिसमें उन्होंने कहा था कि यदि आवश्यकता पड़े तो राजार्य सभा का गठन भी किया जाना चाहिए। आज उसकी आवश्यकता पैदा हो गई है। यदि आज देश क हिन्दू को बचाना है तो आर्यसमाज जो खलकर राजनीति में आ जाना चाहिए और अपने सभी लोगों को, जो अन्य दलों में हैं, बुलाकर तथा अन्य राष्ट्रवादी संगठनों को मिला कर एक राष्ट्रीय स्तर का हिन्दूवादी राजनैतिक दल गठित करना चाहिये। हमें किसी योग्य व्यक्ति को नेता मान कर आगे बढ़ना चाहिए। नेतृत्व के लिए विवाद नहीं होना चाहिए। यदि ऐसा न किया गया तो न आर्यसमाज बचेगा, न डी.ए.वी. संस्थायें बचेगी और न ही यह देश और हिन्दू बचेग—जैसा हमें पाकिस्तान और बंगलादेश में देखने को मिलता है।

विशनस्वरूप गोयल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बपौती

हम एक नई बपौती,
देकर जायेंगे,
जिससे हमारी भावी पीढ़ी के
भाग्य खुल जायेंगे,
आतंक के खून से
लहलहाता हुआ वसंत,
अनन्त लफंगे सन्त, महन्त,
सुन्दर चिकने आश्वासन के
संग मरमरी पत्थरों से
बनाया हुआ राजमहल,
गांधी वाद के नाम की
शोर मचाती हुई चहलपहल
अनैतिकता से भरा राज, समाज,
बलात्कार, अपहरण, अराजकता
का क्रिकेट खेलता हुआ स्वराज
इसके अतिरिक्त हमारे पास,
कोई चीज नहीं बची है।
यही हमने अपने जीवन में
चुन-चुन कर रची है।

—डॉ रतनलाल 'रतनेश'

ईश्वर से

चिर जीवन, चिर मृत्यु समाहित
तू ही मृत्यु मृत्युञ्जय।
तुझ में नवजीवन अर्न्तहित
तू ही सत्य समन्वय।
सत्य पूर्ण सौन्दर्य चिरन्तन
स्पन्दन की भाषा।
अन्तर का शाश्वत क्रम तू ही
तू असीम अभिलाषे।
परे प्रकृति से भी परमेश्वर
तू प्रेम का उद्गम।
परे वेदना मय प्रयास से
शाश्वत निधि का संगम।
चिर अतीत की अज्ञ अनोखी
आगत की जिज्ञासा।
परे काल बन्धन कर्मों से
ईश मुमुक्ष पिपासा।

—मृदुल कीर्ति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं कल का हिन्दुस्तान हूँ

अपने हाथों में लिये सदियों का मैं दीवान हूं,
जिन्दगी का आईना हूँ, वक्त की पहचान हूँ।

आँधियाँ, तूफान, मौसम के थपेड़े झेलकर,
इन्क़लाबी दौर का यारो नया फरमान हूँ।

× × ×

तोड़ डालूंगा यकीनन जुल्मतों को वन्दिशे,
वक्त जिसको रोक ना पायेगा वो तूफान हूँ।

× × ×

धूप, तपती रेत औं' चलती हुई चट्टान सा,
आग के दरिया से निकला आज का इन्सान हूँ।

× × ×

मैं जमीं से आसमां तक खून से लिखता रहा,
अपने पैरों पर खड़ा मैं कल का हिन्दुस्तान हूँ।

—जगदीश श्रीवास्तव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आओ अब थोड़ा हंस लें

● एक आदमी एक लड़के से, "तुम्हारे इनसे क्या रिश्ता है ?"

लड़का : "जी बहुत दूर का रिश्ता है ।"

आदमी : "फिर भी क्या रिश्ता है ?"

लड़का : जी यह मेरा सगा भाई है ।"

आदमी (आश्चर्य से) : "अरे भाई तुम तो इसे दूर का रिश्ता बताते हो ?"

लड़का : "क्योंकि इसके और मेरे बीच सात भाई और हैं ।"

—सुरेन्द्र दुआ, काशीपुर

● कर्नल ने एक सैनिक से पूछा, "तुम्हारा नाम ?"

सैनिक बोला, "शेर सिंह ।"

कर्नल ने तुरन्त कहा : "अब सेर, छटांक नहीं चलेगा । अपना नाम किलो सिंह रखना पड़ेगा ।"

● पिता : "मैं जब तुम्हारे बराबर था तो बड़े भैया, माता-पिता सबकी आज्ञा मान कर चलता था और एक तुम हो कि किसी की बात ही नहीं सुनते ।"

पुत्र : "जब आप पैदा हुए थे तब देश गुलाम था, जब मैं पैदा हुआ तो देश स्वतन्त्र हो चुका था, बस यही बात है ।"

● महिला : "रोटियाँ तो दे दी हैं, अब क्यों खड़ा है ?"

भिखारी : "इन सूखी रोटियों को पचाने के लिए हाजमे की गोली भी तो दीजिए ।"

—अजिन्द्र चुघ, शाहदरा, दिल्ली-93

● राम : "तुम्हारे दादा जी की मृत्यु सोते-सोते कैसे हो गई ?"

श्याम : "मेरे दादा जी स्वभाव से ही भुलक्कड़ थे । हो सकता है, सांस लेना ही भूल गये हों ।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कविहृदय महात्मा वेदभिक्षुःजी (पंडित भारतेन्द्र-नाथ जी) और उनकी कविता

पंडित भारतेन्द्रनाथ जी को बचपन से ही कविता सुनने-सुनाने और पढ़ने का ही नहीं, रचने का भी शौक था। उनका रुझान सोद्देश्य कविता की ओर था, निरुद्देश्य तुकबन्दी की ओर नहीं। मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन,' सोहनलाल द्विवेदी सदृश अनेक राष्ट्रीय कवियों की कवितायें वे झूम-झूमकर सुनाया करते थे। छोटी उम्र में ही उन्होंने कविता रचनी भी शुरू कर दी थी। उनकी कवितायें सुनकर सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी लेखक स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने एक बार उनसे कहा था कि "आप इतनी अच्छी कविता कैसे कर लेते हैं ? हमसे तो होती नहीं।"

उनकी प्रकाशित और अप्रकाशित कविताओं का भंडार काफी बड़ा है। हमारा विचार उनकी सभी कवितायें पाठकों तक पहुंचाने का है। लेकिन यह उपक्रम समयसाध्य है। फिलहाल तो हम उनकी कुछ ही कविताओं का रसास्वादन पाठकों को करवा पा रहे हैं—बानगी के तौर पर।

महात्मा वेदभिक्षुः राष्ट्र की निराशाजनक स्थिति भी निराशा की बजाय चुनौती के रूप में ग्रहण करते थे। प्रस्तुत कविता में उन्होंने ऐसी ही निराशाजनक स्थितियों को चुनौती के रूप में ग्रहण करने की प्रेरणा दी है—

आर्य से

रवि किरण-सी शक्ति लेकर घोरतम में छा सकोगे ?
इस निराशा की लहर में वेदवीणा गा सकोगे ?
आत्मचिन्तन शून्य होकर आज मानव रो रहा है।
घोर तम में लड़खड़ाता साधनाएं खो रहा है।।
पथ पुराना स्वर्ग सुख का साथ छोड़े जी रहा है।
प्रिय सुधा का पान भूला वह गरल क्यों पी रहा है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या विलय के इस प्रहर में लालिमा दिखला सकोगे ?
रविकिरण-सी शक्ति लेकर घोर तम में छा सकोगे ?
आज ऋषियों की निशानी, स्वप्न की अद्भुत कहानी।
है समझता भोग में ही मूढ़ सुख की नींव प्राणी।
विवशता है, मार्ग का निर्माण कैसे कर सकेंगे ?
क्या प्रलय की मूक बेला में पुजारी मिल सकेंगे ?
पूछता हूं स्वप्न को साकार ऋषि के ला सकोगे ?
रविकिरण-सी शक्ति लेकर घोर तप में छा सकोगे ?

आर्य धर्म सेनानी, जागो

महात्मा जी ने विपरीत परिस्थितियों में भी कभी पलायन की बात नहीं कही। उन्होंने सदैव आशावादी चिन्तन प्रस्तुत करते हुए स्फुलिंग की तरह प्रकाश किरणें बिखेरने की प्रेरणा दी थी। प्रस्तुत कविता में परिलक्षित है आर्य पुत्रों के लिए ऐसा ही एक आह्वान—

आर्य धर्म सेनानी जागो, जीवन के अभिमानी जागो,
जागो हिमगिरि की चट्टानो, जागो-जागो रेगिस्तानो।
जागो जलनिधि के तूफानो, जागृति नाद बजाते जागो

ज्ञान-सूर्य की किरणो जागो, सिसक रही मानवते जागो,
गहन निशा की कलुष-कालिमे, दूर-दूर जगती से भागो।

प्रलय कालिया की छाया में, मत ठहरो, मत झुको अरे तुम,
स्वयं पन्थ निर्माण करो रे, दयानन्द अनुयायी जागो।

भूल चुकी पथ जीवन नैया, कौन बने अब यहां खिवैया,
अवनी-अम्बर के अणु-अणुओ, मनुज और पाषाणो जागो।

(4 फरवरी सन् 1956 के "आर्य" (अम्बाला छावनी) में प्रकाशित)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा जी की अदम्य प्रेरणा का स्रोत था भारत के अतीत का गौरवशाली इतिहास। गौरवगाथा की उस दीप शिखा को लेकर उन्होंने जीवन पर्यन्त मानवमात्र का पथ आलोकित किया। प्रस्तुत कविता में इसी दिव्य चिन्तन की एक झांकी प्रस्तुत की गई है——

नवोदित राष्ट्र

नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी,
लिखें स्वर्ण गाथा भरें स्नेह वाणी।
जगे राष्ट्र अपनी नई कामना ले,
उठे राष्ट्र सुन्दर सबल साधना ले,
बढ़े राष्ट्र मनहर मिलन भावना ले,
जगे भारती सभ्यता वह सयानी।
नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी॥
प्रलय की प्रबल आंधियों में न हारें,
सतत पंथ के कण्टकों को बुहारें,
उषा स्वर्ण किरणों से पंकज पसारे,
सुनाएं विजय विश्व गाथा सुहानी।
नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी॥
सबल हों सभी नागरिक दिव्य-मूर्ति,
सुलभ हों सभी सौख्य साधन व स्फूर्ति,
करें मुस्करा कर अभय प्राण-पूर्ति,
विमल-सी मनोमुग्ध आभा निशानी।
नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी॥
हिमाचल अचल दे सुखद स्वर्ण सरिता,
विजयश्री बने प्रिय सुकोमल सुचरिता,
हृदय भावनाएं सबल पुण्य भरिता,
सकल ऐक्य भावों की धारा बहानी।
नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदभिक्षु: जी का अखंड विश्वास था कि विराट् आर्य (हिन्दू) समाज अवश्य जागेगा। वे उसे धिक्कारने में विश्वास नहीं करते थे। उनका दृढ़ मत था कि सद्गुणों और सुप्त शक्तियों को आह्वान से जगाया जा सकता है। इसलिए वे सदैव कर्मवद्धता के आह्वान में निरत रहे। प्रस्तुत है एक ऐसा ही उद्बोधन—

आह्वान

आर्य वीर सैनिको, सुरम्य कामना करो।
सुकर्म-धर्म-ज्ञान की नवीन भावना भरो॥
जगो मशाल ज्ञान ले कि लोकभारती जगे,
विहान की प्रभाती सुन निशा निराश हो भगे,
अनैक्य दूर हो, टिके न दानवी कुभावना,
अनन्त रश्मियों पगा सवेरा हो सुहावना,
उदात्त भक्ति-भाव से स्वराष्ट्र वन्दना करो।
आर्य वीर सैनिको सुरम्य कामना करो॥
हृदय विशाल में असीम ज्योति स्वाभिमान की,
शपथ तुम्हें है वीर आज प्राण-धर्म-ज्ञान की,
अनुपम बलिदान की, अजस्र रक्तदान की,
उजालनी है ज्योति आज ऋषि के आह्वान की,
सुभारती के पूत भारती की अर्चना करो।
आर्य वीर सैनिको सुरम्य कामना करो॥
नियति विदीर्ण हो रही है दीन की पुकार पर,
सिसक रही है रुद्धकंठ शान्ति की गुहार पर,
समुद्र का प्रकम्प-प्रलय का तूफान छा रहा,
सजग हो आर्यवीर सावधान हो जगा रहा,
भविष्य आर्य जाति का सुतीक्ष्ण कल्पना करो।
आर्यवीर सैनिको सुरम्य कामना करो॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा जी का चिन्तन और उनके विचार उनके कर्म की गति से तेज भागते थे। कर्म के चरणों की एक सीमा है और जब चिन्तन के तूफान से कर्म के पग पीछे रह जाते तो वे लेखनी का सम्बल लेकर उन्हें काव्य-धारा में अवतरित कर देते। प्रस्तुत है मन-मन्थन का एक ऐसा ही ज्वार—

एक प्रलय लानी है मुझको

शायद मेरी चिता जला कर, तुमको हंसना आ जाएगा,
मेरे दूर चले जाने पर, तुमको चलना आ जाएगा।
गीतों की भाषा में पीड़ा, बांट रहा हूं आज अकेला,
मेरे रोने पर हंसते तुम, वरदानों का रहा झमेला।
प्यार टूट कर मोती बनते, दीप बुझाकर ज्योति बिखेरी,
सपने रूठे, दुनिया बोली, कैसा ठाट-बाट का मेला?

मेरी पीड़ा अन्तर्मन की गहराई से झांक रही थी,
शून्य गगन में स्वप्न सुन्दरी प्रमुदित होकर नाच रही थी,
वीणा के तारों को तोड़ा, जनता बोली, कितना सुन्दर,
गीत गूंजता, मन के स्वर को सजा रहा है।

प्यार किसी का लुटा रही है निर्बल भाषा,
और प्यास है जगी मदिर-सी स्वप्न लोक में।
कीर्ति कामिनी नटखट बाला, लुभा रही है,
सब के सपने सजा-सजा कर जला रही है।

तुम, मैं, वे, सब भटके हैं, क्यों तंद्रा है?
पथ विभ्रम में भटकन क्यों है, कौन जानता?
मेरे प्रश्नों का उत्तर भी तुम दे पाए? बोलो तो कुछ?
क्या तुमको मेरी भाषा का अर्थ पता है?

आग और पानी दोनों को साथ-साथ लेकर चलता हूं,
वरदानों को शाप बना कर मैं पलता हूं,
मैं महानाश के सारे प्रतिनिधि देख रहा अपनी आंखों से,
और चुनौती देकर उनको आज अकेला खड़ा हुआ हूं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तांडव महानाश का, मेरे स्वर से अब कांपेगा,
यह मेरा विश्वास अटल है, भाव सबल है,
एक प्रलय लानी है मुझको, जिसमें सब कुछ जल जाएगा,
पाप-ताप अज्ञान तिमिर का नाम-निशां भी मिट जाएगा,
महाकाल के भैरव स्वर को, सुनो-सुनो ऐ सुनने वालो,
नई दिशा में प्राण दीप्ति को ज्योतिदान दो।
स्वप्न सत्य कर थिरके प्रांगण में, सूर्य उगे नव विहान हो,
ऐसे गीत सुनोगे क्या तुम, दूर पार से मैं गाऊंगा।

महात्मा जी के लिए राष्ट्र बजर भूमि के किसी टुकड़े या भीड़ का पर्याय नहीं था। वे राष्ट्र के अंकिचन मानव में भी राष्ट्रपुरुष का दर्शन करते थे। अंकिचन भिखारिन को देखकर उनकी करुणा के समुद्र में ज्वार इसी कल्पना के उद्रेक का परिचायक है।

भिखारिन

वह भिखारिन आ रही है।
नीड़ सूना, पथ पुराना और अन्तर की विकलता,
साथ छोड़े, साथ लेकर, व्यर्थ जीवन की विवशता,
पग बढ़ाती ला रही है।
वह भिखारिन आ रही है॥
केश सूखे, भाव रूखे, जीर्ण-वसना मौन रसना,
प्रकृति की मुसकान भूखे का समझ पाए तरसना,
साधना से गा रही है।
वह भिखारिन आ रही॥
दिवा में भी स्वप्न देखे, दैव की अद्‌भुत कहानी,
लिख रही है प्रकृति भू पर रुष्टता की नव निशानी,
सत्यता दर्शा रही है।
वह भिखारिन आ रही है।:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिशु ठिठुरती अंक में भर, भावना से मोद देती,
मूक निष्ठुर प्राण दूभर आपदाएं साथ लेती,
व्यर्थता जतला रही है।
जग उसे कुछ अन्न दे-दे और चिर आशीष लेकर,
सुप्त अन्तर भाव-सरिता को नया गतिमान देकर,
प्राण विकसाती रही है।
वह भिखारिन आ रही है॥
मूढ़ रजनी के विलय की देखती है राह सूनी,
भूल कर यह सत्य रवि के ही उदय से चाह दूनी,
हर कदम तरसा रही है।
वह भिखारिन आ रही है।
कौन समझे कामनाएं, कौन जाने आपदाएं ?
कौन मानेगा हृदय की सुप्त व्याकुल साधनाएं ?
स्वयं ही समझा रही है।
वह भिखारिन आ रही है॥

जनज्ञान (मासिक)

के

आजीवन सदस्य बनकर

हमें आगे पढ़ने में सहयोग दीजिये। अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइये

आज ही ५०१ रुपये भेजिये

महात्मा वेदभिक्षु:जी की जयन्ती के अवसर पर ३१ मार्च, १९८७ तक 'वैदिक सम्पत्ति' उपहार में लें। (मूल्य १०१ रुपये)

☐ **अपने और अपनी आने वाली पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य तथा संस्कार निर्माण के लिए पढ़ें-पढ़ायें।**

वैदिक साहित्य : हिन्दू-रक्षक साहित्य।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिंदू कौन ?

हिन्दू वह है जिसके मन में, हिन्दूपन की ज्वाला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर, मरने को मतवाला हो॥

हिन्दू थे गुरु गोविन्दसिंह सुत, चुने गए दीवारों में।
हिन्दू थी वह सती पद्मिनी, जली चिता अंगारों में॥
हिन्दू था वह वीर बैरागी, जला लोहित अंगारों में।
हिन्दू था वह वीर हकीकत, कटा शीश तलवारों में॥
हिन्दू थे राणा प्रताप निज, कट्टर अचल विचारों में।
हिन्दू थे शिवराज चले जो तलवारों की धारों में॥

भरा हुआ हिन्दुत्व सुधा से, जिसका जीवन प्याला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर, मरने को मतवाला हो॥

जिसके लिए प्रतापसिंह ने धूल जंगलों की छानी।
जिस पर निज सर्वस्व लुटा कर भामाशाह बना दानी।
शीश कटा कर वीर हकीकत ने रक्खा जिसका पानी।
वीर गोडसे ने हंस-हंस कर दी थी जिस पर कुर्बानी॥
आज हमारे रहते उसका हो सकता अपमान नहीं।
हिन्दुस्तान अखण्ड कभी रह सकता पाकिस्तान नहीं॥

भरी त्याग और बलिदानों से जिसकी जीवनशाला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर मरने को मतवाला हो॥

हिन्दू नहीं भूप जयचन्द थे, किया जिन्होंने कुत्सित कार्य।
शक्तिसिंह और मानसिंह भी, नहीं कहे जा सकते आर्य॥
पाकिस्तान बनाया जिनने, और कर रहे अत्याचार।
पूर्ण अहिंदू हैं "निर्मोही" धर्म विरोधी और अनार्य॥

है यह भेद अहिन्दू-हिन्दू का गोरा हो या काला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर मिटने को मतवाला हो॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अभी देखना

अभी देखना कण-कण से हिंदू का जय-जयकार उठेगा,
भूतल क्या नभ भी हिंदू की जय-जय से गुंजार उठेगा,
सदियों के सोये हिंदू ने अरे आज अंगड़ाई ली है,
चुप-चुप पड़े हुए तरुणों ने हाथों में शहनाई ली है।
मां-बहिनों ने जौहर के अंगारों से करवट बदली है,
बच्चों ने, वृद्धों ने बचपन-जरा त्याग तरुणाई ली है।
अब हिन्दू के हृदय राम का प्रत्यञ्चा झंकार उठेगा ॥२॥
उत्तर दिशि से आयेगा अब, एकलिंग की जय का नारा।
'हर हर महादेव' की ध्वनि से गूंज उठेगा दक्षिण सारा,
ध्वनित मध्य भारत से होगी जय-जय महाकाल की वाणी,
'सत अकाल' के नारे से गुञ्जित होगा पंजाब हमारा,
इन नारों से भारत मेरा भूत काल को ललकार उठेगा ॥३॥
अरे अभी तो हिंदू के जन-जन के मन में राम रमा है,
बप्पा. महाराणा प्रताप, संग्राम सिंह का नाम रमा है,
छत्रपति का, छत्रसाल का, गुरु अर्जुन, गोविन्दसिंह का,
दुर्गा, अरुणा, कर्ण, पद्मिनी, लक्ष्मी का, शुभ काम रमा है,
इन नामों-कामों से जड़ में भी जीवन संसार उठेगा ॥४॥
अब हिन्दू का झण्डा जग के वक्षःस्थल पर लहरायेगा,
बाल सूर्य की अरुणाभा-सा फहरायेगा, इठलायेगा,
अब हिंदू का राष्ट्र जगा जो सिंह-सुवन का करवट लेता,
रामचन्द्र का सुखद सलोना हृदय पुनः साकार उठेगा,
अभी देखना कण-कण से हिंदू का जयकार उठेगा।

—मदनगोपाल सिंहल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पावन हिंदू धर्म महान !

पुनः चमत्कृत कर दे जग को दिखला अतुल अलौकिक ज्ञान,
भू-मण्डल के हे पथदर्शक, पावन हिंदू धर्म महान् ।
तुझे नष्ट करने को आये, ग्रीक, हूण, शक आदि अनार्य,
किये उन्होंने भारत-भू में, तुझे नष्ट करने के कार्य ।
रहा मुहम्मद बिन कासिम भी, तुझे मिटाने में असमर्थ,
खुद महमूद गजनवी भी नाहि, प्रयत्न करके हुआ समर्थ ।
यद्यपि उस पापी पिशाच ने, किया ध्वंस संहार महान्,
भू-मण्डल के हे पथदर्शक, पावन हिंदू धर्म महान् ।
तेरे मूलोच्छेद हेतु ही, पामर क्रूर अलाउद्दीन,
कर बैठा चित्तौड़ दुर्ग को, पूर्णतया धन-जन से हीन ।
देव मन्दिरों में उस खल ने, पुतवाया गायों का रक्त,
मरे शीश कटवा-कटवा कर, कोटि-कोटि गायों के भक्त ।
ब्रह्मसूत्र तोड़े यवनों ने, साढ़े चौहत्तर मन सप्रमाण,
भू-मण्डल के हे पथदर्शक, पावन हिंदू धर्म महान् ।
तूने प्रकट किये बलशाली, गोरा बादल आदि सपूत,
तेरी रक्षा हेतु हो गईं, सती पद्मिनी भस्मीभूत ।
सोलह सहस्र आर्य महिलाएं, उसी समय होकर समवेत,
भस्म हो गईं स्वेच्छापूर्वक, तेरी रक्षा करने हेत ।
मेवाड़ी वीरों का अनुपम, था रोमांचयुक्त बलिदान,
भू-मण्डल के हे पथदर्शक, पावन हिंदू धर्म महान् ।
तुझे मिटाने के हित गौरी, तुगलक, नादिर, खल तैमूर,
कुतबुद्दीन औ' बख्तियार-से, पापी-पामर, कर्कश-क्रूर ।
ध्वंस कर गये अगणित मन्दिर, जला गये पुस्तक भंडार,
तेरे अनुरागी भक्तों का, करके गये महासंहार ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किन्तु न मिटा सके ये तुझको, करके पाप कर्म असमान,
भू-मण्डल के हे पथदर्शक, पावन हिंदू धर्म महान्।
असुराधिप औरंगजेब ने, तेरा करने मूलोच्छेद,
ध्वंस कराये अगणित मन्दिर, भस्म किये रामायण वेद।
तेरे कोटि-कोटि पुत्रों का, और पुत्रियों का संहार,
करवाया उस नर-पिशाच ने, नृशंसता से अगणित बार।
कर न सका फिर भी वह पामर, किसी भांति तेरा अवसान,
भू-मण्डल के हे पथदर्शक, पावन हिंदू धर्म महान्।
ईसाई मिशनरी कर रहे, तेरे नाश हेतु कुप्रयत्न,
लूट-लूट कर ले जाते हैं, ये तेरे घर के नित रत्न।
आज हो रहे हैं जब तुझ पर, ऐसे अत्याचार दुखान्त,
बैठे हैं सेक्यूलरवादी, बनकर के अज्ञान नितान्त।
सेक्यूलर के सिद्धान्तों का, उन्हें नहीं है किंचित् ज्ञान,
भू-मण्डल के हे पथदर्शक, पावन हिंदू धर्म महान्।
नीलकण्ठ का तू है ताण्डव, तू दुर्गा का कोप अथाह,
तू है महाशक्ति वह जिसमें, समाविष्ट है प्रलय प्रवाह।
फिर भी तू क्यों चुप बैठा है, क्यों करता है समय विनष्ट,
कब तक अपनी व्यर्थ क्षमा से, तू भोगेगा दारुण कष्ट।
उठ ! प्रलयंकर रूप दिखादे, कांप उठे ब्रह्माण्ड महान्,
भू-मण्डल के हे पथदर्शक, पावन हिंदू धर्म महान्।

—श्री धर्मेन्द्र देव शर्मा 'धर्म'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के अमर शहीद

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, जन्म-23 जनवरी, सन् 1897 : मृत्यु संदिग्ध।

भगतसिंह, जन्म 5 अक्टूबर सन् 1907, शहीद हुए 23 मार्च सन् 1931

चन्द्रशेखर आजाद, जन्म 23 जुलाई सन् 1908, शहीद हुए 23 फरवरी सन् 1931

शिवराम राजगुरु, जन्म सन् 1909 शहीद हुए मार्च सन् 1931

सुखदेव, जन्म वि. सं. 1962, शहीद हुए मार्च सन् 1931

महावीर सिंह, जन्म सन् 1904, शहीद हुए सन् 1927

करतारसिंह, 7 नवम्बर सन् 1915 को फांसी हुई।

विष्णु गणेश पिंगले, 17 नवम्बर सन् 1915 को लाहौर षड्यन्त्र में फांसी हुई

ज्वाला सिंह, किसान संगठन में सन् 1938 में देहान्त हुआ।

नीरेन्द्रदास गुप्त, आजीवन कारावास में मृत्यु हो गई।

सोहनलाल पाठक, सन् 1916 को शहीद हुए।

मथुरासिंह, इन्हें 27 मार्च सन 1917 को फांसी दी गई।

नलिनी वागची, पुलिस से 15 जून, सन् 1918 को संघर्ष में वीरगति प्राप्त की।

गोपीनाथ, 1 मार्च सन् 1924 को फांसी दी गई।

प्रमोद चौधरी, 28 सितम्बर सन् 1926 को फांसी दी गई।

अनन्तहरि मित्र, इन्हें भी 28 सितम्बर सन् 1926 को फांसी दी गई।

विनय वोस, 13 दिसम्बर को देश की भलाई में शहीद हो गए।

दिनेश गुप्त, इन्हें 7 जुलाई सन् 931 को फांसी दी गई।

प्रीतिलता वादेदार, गोरों पर हमला करने वाले दल का नेतृत्व करती हुई 24 सितम्बर सन् 1932 को शहीद हो गईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रद्योत भट्टाचार्य, इन्हें 12 जनवरी 1933 को मेदिनीपुर जेल में फांसी दी गई।

अनाथबन्धु पंजा, 1 सितम्बर सन् 1933 को आप भी पुलिस की गोली का शिकार हो गई।

सूर्यसेन, 12 जनवरी सन् 1934 को इन्हें तारकेश्वर दस्तीकार के साथ फांसी पर चढ़ा दिया गया।

तारकेश्वर दस्तीकार, इन्हें 12 जनवरी 1936 को फांसी दी गई।

दिनेशकुमार मजूमदार, वाटसन नामक अंग्रेज पर हमला करने के कारण इन्हें 9 जून 1934 को फांसी दी गई।

मणीन्द्र वनर्जी, 20 जून, 1934 को इन्होंने वीरगति प्राप्त की।

श्री भवानी भट्टाचार्य, 3 फरवरी सन् 1935 को फांसी हुई।

बटुकेश्वर दत्त, 23 मार्च, सन् 1931 को भगत सिंह के साथ फांसी हुई।

ऊधमसिंह, इन्हें 12 जून सन् 1940 को फांसी दी गई।

मातंगिनी हजारा, भारत छोड़ो आन्दोलन में सन् 1942 में पुलिस की गोली से मारी गई।

सन् १९८७ की वैदिक डायरी

संध्या, हवन-यज्ञ के मन्त्र, प्रत्येक पृष्ठ पर वैदिक सूक्ति, मूल्य 8 रु., धन अग्रिम भेजने पर मूल्य केवल छह रुपए।

कम-से-कम दस प्रतियां लेने पर भी छह रुपये में; 550 रु. सैकड़ा।

आदेश के साथ पूरा अथवा कम-से-कम चौथाई धन अग्रिम भेजना आवश्यक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

श्री वेद प्रकाश, गाड़ोली 500रु., आर्यसमाज काकड़वाड़ी, बम्बई 150 रु., श्री डी. यादय्या सागर, हैदराबाद 101रु., श्री अमरनाथ शर्मा, बम्बई 200 रु.,डा. आर्य वानप्रस्थ, सहारनपुर 100रु., श्री बी. शिवानन्द, बम्बई 100 रु., राजमाता साहिबा भदावर, आगरा 80 रु.।

51 रुपए का दान

श्री रवीन्द्रनाथ, दिल्ली, श्री हरिप्रसाद सर्राफ, समस्तीपुर, श्री मांगीलाल नथमल, जोधपुर।

50 रुपए का दान

श्री श्यामसुन्दर, दिल्ली, श्री शेरसिंह, सहारनपुर, श्रीमती सत्यवती शर्मा, बरेली, श्री जी. पी. शर्मा, होशंगाबाद, डा. सुरेन्द्र सिंह, सतना।

30 रुपए का दान

श्री आर. वी. सिंह, रामगढ़, श्रीमती कौशल्या देवी, मुजफ्फरनगर, श्री कल्याणप्रकाश आर्य, बदायूं।

25 रुपए का दान

श्री राजवीर सिंह मलिक, अम्बाला, श्रीमती लक्ष्मीदेवी भूटानी, नई दिल्ली, श्री प्रभु नारायण, दरभंगा, सिपाही राजवीर सिंह मलिक, अम्बाला, मेवाड़ टी हाउस, बम्बई, श्रीमती दयावती बनाती, दिल्ली, श्रीमती कौशल्या ग्रोवर, देहरादून।

21 रुपए का दान

पूनम मेडिकल स्टोर, बाराबंकी, श्री एल. टी. उपाध्याय, बम्बई, श्री एच. एल. वाहेती, चम्पारण, श्री चन्द्रभूषण शर्मा, मेरठ, श्रीमती उषा राय, गाजीपुर, श्री रामजीदास, जयपुर।

20 रुपए का दान

श्री प्यारेलाल, अलवर, श्री बगदूलालजी पाटीदार, मन्दसौर, श्री रामईश्वर चौबे, भोजपुर।

15 रुपए का दान

श्री जगदीशप्रसाद यादव, अहमदाबाद, श्री जगदीशप्रसाद, अहमदाबाद।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

11 रुपए का दान

श्रीमती ज्योत्स्ना, अजमेर, श्री रामचन्द्र जी, दिल्ली, श्री रामचन्द्र गहलोत, गांधीनगर, मा० करणपाल, सहारनपुर, श्री मोहनसिंह शर्मा, जयपुर और श्री हरिसिंह वर्मा, दिल्ली।

10 रुपए का दान

श्री कालीप्रसाद, रायबरेली, श्री लक्ष्मणदेव भरत (हालैण्ड) श्री नेपाल सिंह, नालंदा, श्री सोमाभाई खुशालभाई, बड़ौदा, श्री कृतनाथ वर्मा, भागलपुर, श्री वी. डी. त्यागी, गाजियाबाद, श्री महेन्द्र सिंह, आगरा। ★

सभी दानदाताओं का धन्यवाद। **—राकेशरानी**

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली

(पृष्ठ 16 का शेष)

बरनाला डटे तो हुए हैं, लेकिन अभी यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने लड़ाई जीत ली है। अधिक-से-अधिक यह कहा जा सकता है कि उन्होंने पहला दौर जीत लिया है। वे पूरी लड़ाई तो तभी जीत पाएंगे, जब गुरुद्वारों पर—विशेषतः स्वर्ण मंदिर पर—उग्रवादियों का नियन्त्रण समाप्त हो जाएगा। मुख्यग्रंथियों ने बरनाला को सिख पंथ से इसलिए बेदखल किया है, ताकि उनकी स्थिति कमजोर हो जाए और उनकी सरकार का पतन हो जाए। बरनाला को छोड़कर अन्य किसी विधायक को पन्थ से नहीं निकाला गया, क्योंकि यदि ऐसा किया जाता तो केन्द्र हस्तक्षेप करता और पंजाब में राष्ट्रपति शासन स्थापित हो जाता। उग्रवादी बरनाला को हटाना चाहते हैं, लेकिन राष्ट्रपति शासन नहीं चाहते। अभी तक बरनाला की समरनीति रक्षात्मक है। एक-न-एक दिन तो उन्हें आक्रामक नीति अपनानी ही होगी। यह काम कठिन है, लेकिन इसके सिवा कोई चारा भी तो नहीं। जब तक गुरुद्वारों पर उग्रवादियों का नियंत्रण है, तब तक बरनाला के विजयी होने की आशा क्षीण है। जिन मुख्य ग्रंथियों ने अपने आपको पंथ का सर्वेसर्वा मान लिया है, वे हैं क्या? वे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कर्मचारी हैं। उनकी असली हैसियत कर्मचारियों से अधिक नहीं। वे अकाल तख्त के पर्यायवाची नहीं हो सकते। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

आर्य समाज के प्रचार में तेजी लाने, ऋषिका सन्देश घर घर पहुंचाने, विवाह जन्म दिन आदि शुभ अवसरोंपर इष्टमित्रों को भेंट देने तथा स्वयं भी संगीतमय आनन्द प्राप्त करने हेतु, श्रेष्ठ गायकों द्वारा गाये मधुर संगीतमय भजनों तथा संध्या हवन आदि के उत्कृष्ट कैसेट आज ही मंगाइये ।

कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ अग्रिम भेजिये ।

५ या उससे अधिक कॅसेटों के आदेश पर डाक तथा पैकिंग व्यय फ्री ।

५ से कम के लिये कृपया १० रू. अतिरिक्त डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये ।

वी. पी. पी. नहीं ।

कैसेट नं

1. वैदिक संध्या हवन-(स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण सहित) 25.00 रु.
2. भक्ति भजनावली, गायक-गणेश विद्यालङ्कार व वन्दना वाजपेयी 25.00 रु.
3. गायत्री महिमा, गायत्री मंत्र की विशद् व्याख्या (पिता-पुत्र संवाद में) 25.00 रु.
4. महर्षि दयानन्द, गायक बाबूलाल रामत्यानी व जयश्री शिवराम 25.00 रु.
5. आर्य भजन माला, गायक-संगीता, दीपक, रोहिणी, स्मिता व देवव्रत शास्त्री 25.00 रु.
6. योगासन एवं प्राणायाम स्वंय शिक्षक, प्रशिक्षण, डॉ. देवव्रत आचार्य 25.00 रु.
7. आर्य संगीतिका, गायिका-माता शिवराजवती आर्या 50.00 रु.

8-9. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कैसेट) (स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन) 30.00 रु.

10. पथिक भजन सिन्धु, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक 30.00 रु.
11. सत्यपाल पथिक भजनावली, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक 30.00 रु.
12. मुसाफिर भजन सिन्धु, कुंवर महिपालसिंह आर्य द्वारा गाये गये कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के भजन 30.00 रु.
13. श्रद्धा, प्रसिद्ध फिल्म गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान 30.00 रु.
14. आर्य भजनावली, फिल्मी संगीतकार एवं गायक-वेदपाल वर्मा 30.00 रु.
15. वेद गीताञ्जली, गीतकार व गायक-सत्यकाम विद्यालङ्कार 30.00 रु.
16. भजन सुधा, आ. प्रज्ञादेवी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन

भेंट - दस कैसेट मंगाने वालोंको एक कैसेट मुफ़्त ।

प्राप्तिस्थान - **संसार साहित्य मण्डल**

141, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई-400 082

फोन-5617137

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकाशनादि विवरण फार्म–४

१. प्रकाशन स्थान	वेद मंदिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम अलीपुर, दिल्ली-३६
२. प्रकाशन अवधि	मासिक
३. मुद्रक का नाम	राकेशरानी
क्या भारत का नागरिक है ?	हां
पता—	वेद मंदिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम अलीपुर, दिल्ली-३६
४. प्रकाशक का नाम	राकेशरानी
क्या भारत का नागरिक है ?	हां
पता—	वेद मंदिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम अलीपुर, दिल्ली-३६
५. सम्पादक का नाम	राकेशरानी
क्या भारत का नागरिक है ?	हां
पता—	वेद मंदिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेबाश्रम अलीपुर, दिल्ली-३६

६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।

जनज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली

मैं राकेशरानी एतदद्वारा घोषित करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी व विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

ता. १-३-१९८७ —राकेशरानी, प्रकाशक

अनेक बहन-भाइयों ने पत्रों द्वारा पंडिता राकेशरानी जी के अस्वस्थ होने पर चिन्ता प्रकट की है तथा उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है। हम उन सभी के हृदय से आभारी हैं।

—प्रो. धर्मवीर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

D-C 201 R.N. 10719/65 जनज्ञान (मासिक) चैत्र, संवत् 2044

धर्मवीर पंडित लेखराम

आर्यसमाज के प्रखर प्रवक्ता धर्मवीर पंडित लेखराम जो ६ मार्च १८९७ को एक विधर्मी के हाथों शहीद हुए। उनका संदेश था—"आर्यसमाज से लेखनी का काम बन्द न होने पाये।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi